तकानि ।

		मू॰	डा.व्य.
तऋ	तया		
	•••		6=
सहि	तः	911	6-11
, জ	ोन-		
	न्ति,		
Ť, à	हेला-		
ािन्य	तीत		
π	•••	२॥	0=11
कृत ः	या		
टाक्षया साहत, बाळभारतनाटक च		9	0-11
अनर्घराघवं न।टकम्—श्रीमुरारिकृतं, रुनिपन्युपाः	याय-		
कृतया टीकया महितम्		२	== 11
६. कंसचधनाटकम् —महाकविधीशेपकृष्णकृतम्.	• • •	-11-	6-
 कणसुःद्री नाटकम्—महाकविश्रीविह्नणकृता. 	•••	$\cdot \mathbf{li} \cdot$	6-
 धर्मशर्माभ्युद्यकाव्यम्—महाकविश्रीहरिचन्द्री 			
चितम्, अस्य २१ सर्गाः सन्ति, अस्मिन् धर्मन			
भिधः कश्चिदाजा नायकत्वेनाधिकृतः, अस्योत्पत्ति			
भ्येवास्मिन् काव्ये सरसं वर्णन द्दयते ।		9	6=
 सुभद्राहरणं श्रीगदितम्—श्रीमाधवभद्यणीतम्. 	•••	-1-	611
०. समयमातृकाकाव्यम्—महाकविश्रीक्षेमेन्द्रविरचित्र	į.	-11-	6-
। कादम्बरीकथासारकाव्यम् शीमदभिनन्दकृतम्		-11-	6-
२. रसगङ्गाध्ररः— (अलंकारः) महाकवि श्रीजगन्ना	थप-		
ण्डितरायविरचितः, महामहोपाध्याय नागेरा			
कृतया टीकया समेतः		३॥	0=11
। ३. साम्बपञ्चाशिका —साम्बकविप्रणीता, क्षेमराजकृत	या		
टीक्या सहिता	•••	. 1-	611
१४. पारिजातहरणचम्पूः —महाकविश्रीशेषकृष्णविरवित	II.	1=	6-
५. काव्यालंकारसूत्राणि (वृत्तिसहितानि)—अयं पश्	11-		
धिकरणात्मकः अलंकारशास्त्रस्य मूलभूतो प्रन्थः.		-111-	6-
६. मुकुन्दानन्दभाणम् —श्रीकाशीपतिविरचितम्	•••	-1=	6-
 उन्मत्तराघवप्रेक्षाणकम्—श्रीभास्करकविविरचितम् 		6=	611

१८. अग्रस्टातकम् अअगरककावरा तः अनुभवादश्य-
र्भप्रणीतवा रसिकसंजीविन्या टीर्च्या सहितार
१९. सूर्यशतकं काव्यम् -श्रीमयूरकिप्रणीतं, जिस्वनणुक्
विरिवतया टीकया सहितम्
२०. लटकमेलकप्रहंसनम् अशिक्षचरविरचितम् गः
२१. गाथासप्तराती—श्रीसातवाहनविरचिता, ग ङ्गा -
धरभट्टकृतटीकया सहिता. अस्मिन् पृथक्षृथग्वर्ण-
नपराः प्राकृत (मागधीत्यादि) भाषात्मकाः ७००
श्चोकाः सन्ति १॥ ४⊜
२२. हरविजयम हाकाव्यम ् राजानकरत्नाकरविर -
चितं, राजानकाळकछत्टीकया सहितम्, पश्चा-
्रात् ५० र गीत्मकेऽस्मिन् क्ये भगवता श्रीशंकरे-
णान्धकासुरं निहत्य देवानां सुखमुदपादि इत्यादि क-
थानकं वर्तते, समयानुसारतोऽन्यदपि स्थलादिवर्णनं
मनोहरतयाऽकारि प्रन्थकृता ५ ।॥-
२३. स्तुतिकुसुमाञ्जलिकाव्यम्—श्रीजगद्धरभद्दविरचितं,
राजानकरत्रकण्ठविरचितटीकया सहितं च ३ ४%
२४. काव्यप्रदीपः—(अलंकारप्रन्थः) महामहोपाध्यायश्री-
गोविन्दविरचितः ३। ८%
२५. ध्वन्यालोकः—(अलंकारः) श्रीमदानन्दवर्धनाचा-
र्यकृतः १॥। ४=
२६. दशावतारचरितकाञ्यम् —श्रीक्षेमेन्द्रविरचितम् १ ४८॥
२५ जीवानन्दनाटकम्—आनन्दरायमखिकृतम्, षड-
ङ्कात्मकेऽस्मिनाटके रोगादिविविधसंकटेभ्य ईश्वरानुक-
्मपया जीवस्य मुक्तिः कथं भवतीति सुत्रक्तीकृतम्. ।॥। ८-
२८ दूताङ्गदनारकम्-श्रीसुभटकविविरचितम्, एका-
इतिभके स्वत्पतरेऽस्मित्राटके रावणपुरतोऽइदकृतस्य
दौलस्य सम्यक्तया रमणीयतया च विवेचनं कृतम्. ४= ४॥
२९० भर्तृहरिनिर्वेदनाटकम्-श्रीहरिहरोपाध्यायकृतं,
पश्चाक्कात्मकमिदं नाटकमतीव रसभरितं विद्यते
अस्मिन् श्लीविरहिणो भर्तृहरेनिर्वेदस्यातीव हृदयद्रावक-
तया वर्णनं कृतम् ८=॥ ४॥
३०. चन्द्रप्रभचरितकाव्यम्—श्रीवीरनन्दिविरचित्म्,
३०. चन्द्रअसचारतकाञ्चम्—आचारनान्द्राचराचत् न् अष्टादशसर्गात्मकेऽस्मिन्कान्ये जिनसतक्तान्तः समप्र
उपलभ्यते शा ¹

	ਸ਼ੑ •	डा.व्य.
₹9.	विष्णुभक्तिकरूपलताकाव्यम्—पुरुषोत्तमविरचितं,	
	महीधरविरचितया टीकया सहितम् ।।=	6-11
३ २.	सुहृदयानन्दकाव्यम् — कृष्णानन्दविरिचतम्,	
	पश्चदशसगीत्मकमिदं काव्यं गीवीणगहनप्रविविश्लूणी	
	मार्गसौलभ्यकरं सहृद्यानां मनोरङ्गकं च विद्यते ॥	6-
₹₹.	श्रीनिवासविळासचम्पूः—वेङ्कटेशकविप्रणीता, धर-	
	णीधरकृतटीकया सहिता ।॥≈	6-11
₹४.	प्राचीनलेखमाला—(प्रथमो भागः) १॥	6=
ą ų.	अलंकारसर्वस्वम्—राजानकरुयकरुतं, जयर-	
	थकृतदीकासहितम् । अस्मिन् शब्दार्थोभयविधालंका-	
	🖫 राणां मनोहरतया वर्णनं विद्यते, तत एवायं प्रन्थः	
	केवलं (रसादिज्ञानं विना) अलंकारजिज्ञासूनामतीवो-	
	पयुज्यते १।	6=
₹.	वृत्तिवार्तिकम् —श्रीमदप्पयदीक्षितप्रणीतम् ८८	611
રૂ છ.	रससदनभाणम् — युवराजकविविरचितम् । 🤛	5-
₹८.	चित्रमीमांसा-श्रीमद्प्यदीक्षितप्रणीता, चित्रमी-	
	मांसाखण्डनम् –पण्डितराजजगन्नाथविरचितं सा⊜	0-11
३९.	विद्यापरिणयः—आनन्दरायमखिविरचितः॥	5-
۲o.	रुक्मिणीपरिणयं नाटकम्-श्रीरामवर्मविधयुवराज-	
	विरिचतम्	6-
89.	प्राकृतपिङ्गलस्त्राणि—श्रीमद्वाग्भटविरचितानि,	
	लक्ष्मीनाथभट्टकतटीकासहितानि, अस्य प्रन्थस्य २	
	परिच्छेदौ वर्तेते संस्कृतनाटकादिग्रन्थेषु स्थलविशेषे प्रा-	
	कृतैव भाषा दश्यते. परंतु तद्भाषायां वृत्तादिज्ञान बहुषु	
	जनेषु नैवोपलभ्यते नाटकादिपरिशीलिनां च तस्यातीवा-	
	वस्यकता वर्तते. तस्मात् एतादशामितरेषां च जना-	
	नामतीवोपयुज्येत प्राकृतप्रन्थः १॥।	6=
	नाट्यशास्त्रम् —श्रीभरतसुनिप्रणीतम् ३	-1-
	काञ्यानुशासनम्-श्रीमद्वाग्भटविरचितं, खकृतटीकायुतं. । ≶	6-
	शृङ्गारतिलकभाणम् - श्रीरामभद्रदीक्षितविरचितम्. ।	6-
	बालभारतम्श्रीमदमरचन्द्रसूरिविरचितम् ३।	6=1
	वृषभानुजा नाटिकाश्रीमधुरादासविरविता ⋅ ।	6-
४७.	सेतुबन्धमहाकाव्यम्-श्रीप्रवरसेनविरचितं, श्रीराम-	
	दासभपतिप्रणीतया टीक्या सहितम ३।	62

॥ श्रीः॥ **मच्**रसृतिः।

श्रीमत्कुळूक्रभद्दविरचितया मन्वर्थमुक्तावल्या श्रोकानामकारादिकोशेन च समेता।

पणशीकरोपाह्वेन लक्ष्मणतनुजनुषा वासुदेवशर्मणा संशोधिता ।

इयं च

(चतुर्थावृत्तिः)

मुम्बय्याख्यराजधान्या

नुकाराम जावजी इत्येतेषां कृते तेषामेव निर्णयसागराख्य-यन्त्रालये बालकृष्ण रामचंद्र घाणेकर इत्यनेन

मुद्रयित्वा प्रकाशिता।

शकाब्दाः १८३१, सनाब्दाः १०००,

मूल्यं सार्धरूपकम्।

पाचीनज्ञनलेखंसंप्रह।

(प्रथम भाग)



मुनि जिनविजय

*** # alt सेवा मिन्दर | दिल्ली | ** # * # **

प्राचीनजैनलेखसंग्रह।



प्रथम भाग।



(प्राकृतलेखविभाग.)

-6866

संग्राहक अने सम्पादक-

मुनि जिनविजय।



पाटणनिवासी श्राह भीखाभाई वसताचंद नी द्रव्य सहायथी प्रकट कर्ती-श्रीजैन आत्मानन्द सभा भावनगर।

シャツのなかです

वीर संवत् २४४४) विक्रमान्द् १९७३.



मृत्य— आड आना प्रकाशक---

गांधी बल्लभदास त्रिश्चवनदास,

सेकेटरी श्रीजैन आत्मानन्द सभा, भावनगर.

_{मुद्रक}— छोटालाल लालभाई पटेल, मेनेजर रुक्ष्मीविज्ञास पेस, भाऊकाळेनी गछी.

वडोदरा.

(तारीख ३०, ऑगष्ट, १९१७.)

अनुक्रमणिका.

~ 必兼応 ~

उपोद्घात---

8	प्रारं म.	••••	••••	••••	۶.
२	महत्त्वनां ऐतिहासिक	साधनो.	••••	••••	१
ą	स्थान परिचय.	••••	• • •		9.
8	गुफाओं संबंधी हकी	कत.	****	••••	७.
٩	जैन गुफाओ.	••••	****	****	१٥.
E.	प्रसिद्ध गुफाओं अने	तेमनो इतिह	(ास.		१६.
હ	कालगणना.	***		• • • •	१७.
<	हाथी गुफा.	••••	****	• • • •	२०,
٩	कालिंगनो संक्षिप्त इति	हास.		****	२१.
१०	कलिंगमांथी जैनधम	नु निर्वासन			३ ९.
११	खारवेलनो लेख.	****		***	३१.
१२	आ हेखथी जैन धर्म	उपर पडतो	पकाश.	****	३३.
१३	उपसंहार		••••		३९.
१४	परिशिष्ट	***	****	***	88.

मूल निवन्ध—

1	लेखा संबंधी	पंडित भगवान	लाल इन्द्रव	गिनुं विस्तृत वि	वेवेचन. १	-१९.
२	हाथीगुम्फां	हेख (मूल	पाउ)	****	२०	-३९.
3	हाथीगुम्फा	लेख (संस्कृत	न छ।या.))	8 0	-83.
8	,,	(गुजरा	ती भाषांत	₹.)	ర 8	-89.
4	लेख -२.	****	••••	****	****	84.
Ę	लेख्-३.	5.00 40 2	***	409	****	४९.
9	लेल-४.	****	****	••••	****	٩٥.
1	अनुपूर्ति. (हाथीगुफा है	ख उपर श्रं	थित के. इ	. धुवनु	
	विवेचन.)	****	****		۶ ۶	–६२.

प्राचीन जैन लेख संप्रह

- +411dsleDflL *** יי י יילולקי אייצאוטיי ייי LEUTA TAIK UNDAUK OLU, KULL LUMBANIKK KISTAL LUTUN TAKALK TULLIK INTERNOTE U METE NEFEL LIKK HYNDR. JET - אם אנושיה ביום ואלא to maring to negligation I STALLOW GLARI יישאונפאיולטשא אביבטבנעל אמלוטבייעל אמרושיים ביפור אביבעלווים ביפורפביי במלואה ממשלים במתונה אפימורניי יום ביים באודאון אזרוב ובנה האהריבייל בהיים הוב הביים היב הביים אלפלים אלאלול בלום אל בנה ובנום לבוד לבנו לבנו ברובום אינה הביים היב הביים היב הביים היב היב היב היב היבום היב היבום היב היבום הביים היבום היבום היבום היבום ה LHIVELLHMANNON ON OTEL OF EL DI BEBLEL DAFEBRAGES GROOMHUDES GAINLOLAZURAL TYTRI LEGIFRIGEL

LOTHARAZACIONISTALEMINISTE NONES BEGISCIÓNIN MAGESTAL LABERTER DECENHALANDES GAINLOLAZONAS TYTRICERIOS DE SENDES CONTRACTOR DE LEGITAL DE LA CONTRACTOR DEL CONTRACTOR DE LA CONTRACTOR DEL CONTRACTOR DE LA CONTRACTOR DEL CONTRACTOR DEL CONTRACTOR DEL CONTRACTOR DE LA CONTRACTOR DEL CONTRACTOR D ALIA TIFIFRUKSSONO OD O'CINATURNATIC KOLO CENTRACIÓ ESTITORIA CITATION EL TENTRACIÓN E HATE ANLICUATE BEREFERE TRANSFAR LOUNDSTAN INTERSCRIPTION ALMOTAGE USPINITION L. - K-(77327-י ז היידי ביין אינט הייב של הואל אינואל אינואל איני אל האל איני אל אואל אינואל 1. كمائي كالمائط لمكون بيائم يمن فساءت - فيائط بتهول بالكدف الكلافة لمكالم لأنائكولك טושא ד א אלאלאל איר אר אלאלאליי איר ארובאירובאלראקטאלר א א אלאלאר איר א אונאירבאלראקטאלרא جزاءت أعافد المهاؤلات، مدينة عالالألاء كالمكاف عوله فهالمهامات אנטטיט פונלטרבלים איניים ביים ויבור אלא אנלענו ליונים איר אים א חוששי ליוושא לימילימילבות.

हाथीगुहा लेखनी प्रतिकृति.

उपोद्घात.



प्रारंभ.



जैनधर्म साथे संबंध धरावनारा जेटला प्राचीन शिलालेखी आज सुर्धामां मळी आव्या छे तेमां आ पुस्तकमां आपेला '' कटक नजीक आवेली उदयागिरिनी टेकरी उपरना हाथीगुफा तथा बीना त्रण लेखो " सर्वथी पाचीन छे. हाथीगुफा वाळी महामेघवाहन राजा खार-वेलनो लेख जैनधर्मनी पुरातन जाहोजलालो उपर अपूर्व अने अद्वितीय प्रकाश पाडनारो छे. श्रमणभगवान श्रीमहाबीरदेव प्रबोधित पन्थना अनुयाथिओमांना कोइपण प्राचीनमां प्राचीन नृगतिनुं नाम जो शिला-लेखमां मळी आव्युं होय तो ते फक्त एकला आ प्रतापी नृपति खार-वेलनुं ज छे. जैनधर्मना इतिहासनी दृष्टिए तो आ हाथी गुफावाळो लेख अनुपम छे ज परंतु भारतवर्षना राजकीय इतिहासनी अपेक्षाए पण आनी उपयोगिता अनुतर ज जणाइ छे। लगभग एक शताब्दी जेटला लांबा कालथी आ लेखनी चर्चा युरोपीय अने भारतीय पुरातस्वज्ञामां चाल्यां करे छे. अनेक लेखा अने पुस्तका आ लेखना विषयमां लखायां-छपायां छे. सेंकडो विद्वानो आ हेलनी मुहालात हइ फोटा विगेरे उतारी गया छे-अने हजु पण एम ज चालु छे. आवी रीते ऐतिहासिक विद्वानीमां आ लेख एक महत्त्वनी अने पिय थइ पड्यो छे. परंतु ए जाणोने म्हने साश्चर्य खेद थाय छे के जेमना धर्म साथे आ महत्त्रनात स्थाननो सीघो संबंध छे, जेमनो एक प्रकारे आ कीर्तिस्तंभ छे अने जेमनी प्राचीन प्रभुताना प्रकाशमय किरणो आमां अंकित थयेलां छे ते जैनोमांथी हजी सुधी कोईने एनुं नाम पण जणायुं-संभळायुं नथी !

श्रमणभगवान् श्रीमहावीरदेवना निर्वाण बाद उदायी, चंद्रगुप्त, संपति अने विक्रमादित्य आदि नृपतिओ जैनधर्म पाळनारा अने जैनशासननी प्रभावना करनारा थह गयाना उल्लेखो केटलाक जैनमंथोमां जोवामां आवे छे, परंतु ते कथननी सत्यता सिद्ध करनार एक पण ऐतिहासिक प्रमाण—के जेने निःशंक रीते सर्व कोई स्वीकारी शके—आज सुधीमां उपलब्ध थयुं नथी. जे मंथोमां उपर्युक्त राजाओने जैनधर्मानुयायी जणाव्या छे ते मंथो घणा पाछळना समये लखायला छे तेथी तेमना कथन उत्तर पुरातत्वश्चो बहु विश्वास नथी राखता. कारण के आवा मंथोक्तवर्णनोमांथी घणा खरा इतिहासनी दृष्टिए निर्मूल उर्या छे अने उत्ता जाय छे. दृष्टान्त तरीके जे विक्रमादित्य नामना राजाना विषयमां अनेक चरित्रो अने आख्यानो लखायां छे अने जेना नामथी आजे आखा भारतवर्षमां (लगभग १२००—१५०० वर्षथी) राष्ट्रीय संवत् प्रवर्ते छे तेना अस्तित्व अने समय सुधा माटे पण आजना अनेक ऐतिहासिको शंकाशील छे !.

महत्त्वनां ऐतिहासिक साधनोः

ऐतिहासिक साधनोमां शिलालेखो, ताम्रपत्रो अने शिकाओ सौथी वधारे महत्त्वना अने निःशंसय रीते प्रामाणिक गणाय छे. कारण के तेमां जे हकीकत आलेखेली होय छे ते, ते वखते बनेली अगर विद्यमान होय छे. किंवदन्ती के आंतशयोक्तिने तेमा बहुज अल्पस्थान मळे छे. कृतिमतानो संभव तेमां कल्पी शकातो नथी. आभी करीने पुरातत्त्वज्ञो जेटलो विश्वास ए सांधनो उपर राखे छे तेटलो ग्रंथो उपर राखता नथी ग्रंथकारो पोतानी ह्यातीमां बनेली अने पोते खास

.

अनुभवेली बाबतोमां पण घणीक अतिशयोक्ति अने अलंकार भरेली हकीकतो, पोताना धर्मानुराग के वर्णित-व्यक्तिगत पक्षपातने अधीन थइ उमेरी दे छे तो पछी सेंकडो हजारो वर्षों पहेलां थइ गयेला अने जनसमाजमां बहु ज पूज्य के माननीय रुपे गणाइ गयेला नरोना अनेक शताब्दीओ पछीथी लखायेलां जीवनवृत्तांतोना विषयमां तो पूछतुं ज शुं ? एज कारणना लीधे अशोक के कनिष्क जेवा राजाओं के जेमन नाम पण जनसमाजना वात!वरणमां आस्तित्व धरावतुं न हतुं तेमना विष-यमां, फक्त पत्थरनी शिलाओ उपर खोदेली ५-१० पंक्तिओ जेटली नजीवी हकीकत उपर अ।जे सेंकडो विद्वान पोतानी प्रतिभाने सतत परिश्रम आपता नजरे पडे छे, त्यारे महापुराण के महाभारत जेवा इजारो अने लाखो श्लोकोमां लखायला महान् अंथोमां वर्णवेली व्यक्तिओं के वर्णनो तरफ भाग्येज कोइ सत्यनी दृष्टिए जुए छे ! एज कारण छे के, चंद्रगुप्त अने संशति जेवा जैनसमाजप्रसिद्ध नृपतिओना विषयमां ज्यारे अनेकानेक जैनमंथीमां विस्तृत रुपे वर्णन करवामां आवे छै होवा छतां अने निःशंसय राते तेमने परमजैन तराके जणावेला होवा छतां तेमनुं जैनत्व स्वीकारवा माटे-अने संप्रतिनुं तो असंदिग्ध रीते अस्तित्व पण मानवा माटे-हजु विद्वत्समाज आनाकानी करे छै; त्यारे खारवेल जेवा एक सर्वथा अपरिचित-अज्ञात राजा माटे के जेनुं नाम सुधां पण आखा जैनसाहित्यमां कोइ पण स्थाने मळतुं नथी, अने जेना बना-वेला एवा महत्त्वना हाथीगुफा जेवा जैनीय धर्मस्थानना अस्तित्वनी करपना पण आज सुधी कोइ जैनना मनमां जागेली जणाती नथी, तेने एक परम जैन (श्रीयुत के. ह. ध्रुवना वचनमां कहुं तो " इडइडतो जैन '') नृपति के '' जैनविजेता '' तरीके सिद्ध करवा के कब्ज करवामां आधानिक इतिहासज्ञो मान के आनंद माने छे !

चारेक वर्ष पहेलां ग्हारा विद्वान् मित्र श्रीयुत नाथुरामजी प्रेमीना अवलोकनमां, बंगला भाषाना प्रतिष्ठित मासिक पत्र 'साहित्य' ना एक अंकमां खारवेल संबंधी कांद्रक हकीकत प्रकट थयेली ते आवी. तेमणे तरत तेनो सार लइ पोताना " जैनहितैषी " नामना सुसंपादित मासिक पत्रमां " खण्डगिरि और कालिक्वाधिपति खारवेल " प नामे एक संक्षिप्त लेख प्रकट कर्यो. ए लेख वांची महने ते संबंधी विशेष , ज्ञाणवानी जिज्ञासा यह अने हाथीगुफावाळा ए मूळ लेखने मेळववा प्रयत्न कर्यों; परंतु संयोगाभावे ते वसते कांइ सफळता मळी नथी. गये वर्षे, वडोदरामाँ ब्रासस्थान थता " पाचीनजैनलेखसंग्रह " छपार्वा प्रकट करवानी विचार थयो अने तेनी सामग्री एकत्र करतां, आर्किओ-लाँजिकल सर्वे ऑफ इन्डीआना सने १९०२-३ ना वार्षिक रीपोर्ट (Archeological Survey of India, Annual Report I, 1902-03) मां खंडिंगिरि संबंधी थोडीक हकीकत जीवामां आवी तेमज फ्रेंच विद्वान् डॉ. ए. गेरीनोट (A. Guerinot) ना Repertoire D'epigraphic Jaina नामना पुस्तकमांथी ते पुस्तकनुं नाम पण मळी आञ्युं के जेमां हाथीगुफानी आ मृळ लेख, पंडित भगवानलाल इंद्रजी द्वारा शुक्क रीते संपूर्ण स्पष्टीकरण साथे प्रकट थयेलो छे. ए पुस्तक सन १८८३ मां फ्रांसमां छपायेछं होवाथी वडोदराना जेवी सेंट्रल लाय-बेरीमां १ण मळी शबयुं नथी. बीजी पण केटलीक जग्याए तपास करावी पण कांइ पत्ती लाग्यो नधी. अंते पूनावाळा श्रीमान् देवदत्त रामकृष्ण भांडारकर एम. ए. के जेओ आर्किओलॉजीकल सर्वे ओफ वेस्टर्न इन्डी-आना सुप्रिन्टेन्डेन्टना उच्च अने प्रतिष्ठित पद उपर प्रथम ज हिन्दी तरीके अधिकृत थयेटा छे अने जैमनो जैन इतिहास अने साहित्य उपर स्वास ब्रेम होइ म्हारी साथे मित्रता भर्गी संबंध छे, तेमणे म्हने ए उप-र्युक्त पुस्तक मेळवी भाष्युं. एज पुरतका मूळ आधारे आ प्रस्तुत पुस्तक जैनइतिहासरसिकोनी आगळ उपस्थित करवानो प्रसंग प्राप्त थयो छे.

स्थान परिचय.

जे स्थाने खारवेलनो आ लेख आवेलो छे ते स्थान जैनप्रजाना वासस्थानथी घणा दूर अंतरे आवेलुं छे तेथी तेनी कांईक ओळखाण आपनी आवस्यक छे.

हिन्दुओ—वैष्णवीनुं प्रसिद्ध तीर्थ जगन्नाथपुरी जे प्रदेशमां आवे छे तेने हालमां ओरीस्सा अथवा ओदिया प्रांत कहेवामां आवे छे. ए प्रान्त हिन्दुस्थानना पूर्व भाग उपर बंगालना उपसागरने कांठे आवेलो छे. प्राचीनकालमां ए प्रान्त किलंग देशना नामे प्रख्यात हतो. अंग, बंग अने किलंग—एम ए त्रणे देशोनी एक त्रिपुटी गणाती. 'प्रज्ञापनासूत्र' ना प्रथम पादमां जे २५॥ आर्थदेशो जणाव्या छे तेमां किलंगनुं पण नाम आपेलुं छे अने तेनी मुख्य राजधानी तरीके कांचनपुरी जणावी छे+. ए प्राचीन किलंग के आधुनिक ओरीस्सा प्रांतमां कटक शहेर नजीक भुवनेश्वर करीने एक प्रसिद्ध स्थान छे तेनी पासे आ लेखवाळी 'खंडिगिरि अने उदयगिरिनी टेकरीओ जेने खंडिगिरि ज कहे छे ते (२००१६' उ. अक्षांश, अने ८९ ४७' पू० रेखांश) भुवनेश्वरथी उत्तर—पश्चिममां ४-५ माइल दूर आवेली छे. आ बे टेकरीओनी वचमां भुवनेश्वरना मार्गने अनुसरनारी एक खीण छे. ऑट एरथी चीलका सरीवर तरफ जता एक रेताळ परथरो-

⁺ रायगिह मगह, चंपा अंगा, तह तामिलित बंगा य । कंचणपूरं कलिंगा, वाणारधी चैव कासी य ॥

परंतु बाह्मणोना आदिखपुराणमां तो आ देशोने अनार्य गणाव्या छे अने एमां जनाथी बाह्मणो पतित थाय छे-एम लख्युं छे.

यथा—'अंग-बंग-कलिंगाथ लाट-मालविकास्तथा । ' इत्यादि, तथा---गरवेताश्कामतो देशान् कलिंगांख पतेत् हिसः ॥

बाळा (Sandstone) पर्वतना एक भागमां ते आवे छे. +' मेजर कीट्ट (Kittoe) के जेणे ज सर्वथी प्रथम (इ. स. १८३९ नी लगभगमां) आ लेखनी संपूर्ण नकल करी हती, ते आ स्थाननो परिचय आपतां नीचे प्रमाणे जणावे छे.

'' खंडिंगिरि अने उदयगिरिनी टेकरीओ पत्थरीआ पहाडनी ळांबी हारना भागो छे. आ पहाड ओरीस्तानी पत्थरनी टेकरीओना तळीआ नजीक थईने ॲटघर डेक्कुनल (Autghar Dekkunol) थी कुदी यई दक्षिण दिशामां चीलका सरीवर तरफ आगळ वधे छे. भुवनेश्वरथी उत्तर-पश्चिममां चार माइल दूर खंडिंगिरि आवेलो छे; अने कटकथी दक्षिण-पश्चिममां १९ माइल दूर छे. आ वे टेकरीओनी शिखर उपर बहु ज थोडी गुफाओ छे......उदयगिरिना दक्षिण तरफना शिखर उपर न्हानी नहानी अनेक गुफाओ आवेली छे. लोकोमां एवी दंतकथा प्रचलित छे के उदयगिरिमां प्रथम ७५२ गुफाओ हती. आमांनी घणीखरी गुफाओ टूटी फ्टी गई छै, तोपण हजी भणीक तहन आखी छे. अमुक कदनी कोई पण गुफा नथी. घणी खरी ६'+४' लंबाई पहे।ळाईमां तथा ४ थी ५ फीट उंचाईमां होय छे. तेमनी आगळ एक एक ओटलो छे. तथा न्हाना न्हाना द्वार छे के जे पहाडमांथी कोतरी काढेला छे. केटलीक गुफाओ विचित्र आकारनी कोरी काढेली ले जेवी के 'सर्पमुका ' 'व्याश्रमुका ' विगेरे.* "

⁺ वाद्य मनोमोहन गंगुले रचित Orissa and her remains ancient and Medieval.

^{*} जर्नल ऑफ घी बेंगाल एसीयाटीक सोसायटी पुस्तक ६, पृष्ठ १०७९

गुफाओ संबंधी इकीकतः

बाबु मनोमोहन गंगुले नामना एक बंगाली विद्वाने थोडा समय पहेलां ओरीस्साना प्राचीन अने मध्यकालीन ध्वंसावशेषोना विषयमां "Orissa and her remains ancient and medieval" ए नामनुं एक सुंदर पुस्तक लख्युं छे. एमां तेमणे घणीज शोधपूर्वक ओरीस्साना प्राचीन इतिहासनी साथे तेना ध्वंसावशेषो—खंडेरोनुं साविस्तर वर्णन आप्युं छे. खंडागिरिनी गुफाओना विषयमां पण ए पुस्तकमां केटलुंक साहं लखनामां आब्युं छे जेमांथी प्रस्तुत उपयोगी कांइक भाग आपवो अने उचित थइ पडशे.

बाबु मनोमोहन खंडगिरिना विषयमां ल बे छे के-

'' आ टेकरी उपर घणी गुहाओ आवेकी छे. जेमां पहेलां बौद्ध अने जैन श्रमणो रहेता हता, अने जेमांनी केटलीक इ. स. पूर्वे त्रीजा सैकाना पहेलानी छे.

आ गुहाओमां शिल्पकळानी उत्तमताना जुदा जुदा नमुना छे. केटलीक अने ते खास करीने खंडिगिरिनी गुहाओ पश्चओनी गुहाओ जेवी न्हानी छे तथा बीजी केटलीक काइक म्होटी छे. सामान्य रीते तेमां एक ओरडो अने तेनी आगळ ओटलो होय छे, केटलीकमां परसाळमां वे के त्रण मोंयरा छे. म्होटी गुहाओमां वे माळ छे, अने केटलीकमां उपरनो माळ पाछळ पडतो छे. आ गुहाओ घणीज सादी छे. पाछळना ओरडामां पांच के छ मोंयरां करवामां आव्यां छे, अने आगळ एक लांबी ओटलानी हार छे जेने स्तंमोनो टेको आपेलो छे. घणी खरी गुहाओ एवी छे के जेमना आगळना ओटलानी त्रण बाजुए रेथी रेहें सुधी उंची परधरनी पाटली आवेली छे. ओटलानी वे मीतो टोंच उप-

रथी प्वी रीते कोतरी काढवामां आवी छे के जेथी ते कवाटने। देखाव प्रदार्शित करे छे. आमां बौद्ध अगर जैन साधुओनो थोडो सामान रहेतो. तेमनां द्वार घणा न्हाना छे, तेथी साधुओने पेटे चाली जवुं पडतुं. राणी गुफा जेवी अगत्यनी गुफामां पण द्वारनुं माप ३"-११"+२" छे. घणी खरी गुफाओमां बारसाखो अंदरथी ढाळ पडती होय छे. प्रगुफाओ एवी नीची छे के कोई माणस तेमां सुखेथी रही शके नहि. पण ते साधुओने माटे हती तेथी तेमने तो ते योग्य ज हती. ओरडानां में यरां लगभग ६" ना पातळा पत्थरना आंतराथी जुदां पाडेलां छे.

भीयरानी भीतो उपर बौद्ध दंतकथानां तथा जैन तीर्थंकरोना चित्रो-आकौरो उपसलां काल्यां छे. ओटलाना स्तंभो घणा ज सरल छे अने ते उपरथी तथा नीचिथी चौरस अने वचिथी अष्टकोणाकृति छे घणा कोतरेला स्तंभोनं वर्णन खंडिगिरि टेकरीनी जैनगुफावाला वृत्तान्तमां आपवामां आव्युं छे. स्तंभोनी कोरणी सीधी नथी पण कांइक बांकीचुंकी छे. आ स्तंभोमांथी ब्रेकेट्स आगळ पडता आवे छे अने तेमना उपर " म्होटां स्तनवाळी अने पाछळ पडता अख्वाळी" स्त्रीओनी आकृतिओ छे. ब्रेकेट्स कोतरी काढेला छे अने तेमनी बचमां बाकुं छे. घणुं खरं, ओटलानुं छापरं परसाळना छापराथी नीचुं छे.

उपर कहेवामां आव्युं छे के आ गुहाओ कारीगरीनी उत्तम-तानी भिन्नता दर्शाव छे. केटलीक गुहाओमां तो रही शकाय तेवुं छे अने केटलीक तो 'कुतरानी बोड 'करतां भाग्ये ज म्होटी छे. आ उपरथी केटलाक युरोपीय अने तेमनी साथे केटलाक हिंदी विद्वानी पण भूल करे छे के जे गुहाओ म्होटी छे ते हाल करेली छे. डॉक्टर हन्टर आ प्रमाणे कहे छे:—' आ न्हानी गुहाओ हजु सुधीमां हाथ लागेलां हिंदुस्थाननां लोकोनां पहेलानां घरो छे. " आ गुहाओना मूळ तथा उत्तरोत्तर वधारामां आ विद्वानो तेमनो विस्तार (Evolution) गणे छे. खेदनी वात छे के आ शब्द (Evolution) अयोग्य स्थळे वापरवामां आवे छे. प्रो. हक्षलीए 'सायन्स अने कल्चर ' नामना पुस्तकमां कह्युं छे के " केटलांक सत्यो दंभथी शरु थाय छे अने शंकामां विराम पामे छे. " आ शब्दो अभिव्यक्तिवाद (Theory of Evolution) ने माटे तहन खरा छे.

उदयगिरिनी गुहाओनी उत्तरोत्तर वृद्धि शोधवानो मुख्य हेतु (म्हारा धारवा प्रमाणे) ए छे के, जे गुहाओ घणा कोतरकामवाळी छे ते अर्वाचीन छे अने ते परदेशी असरथी थयेळी छे. तथा पत्थरनुं शिल्पकाम श्रीक लोकोए दाखल कर्युं छे, आ बाबत प्रवार करावनारी छे.

उदयगिरि अने खंडगिरिमां भौद्ध श्रमणो रहेता हता अने ते यात्रानां स्थळ हतां. किंगना राजाओए जुदे जुदे वखते आ श्रमणो माटे तथा अन्य धार्मिक हेतुओथी आ गुहाओ तैयार करावी हती. गरीब तथा तवंगर बधा, श्रमणो माटे, आवी गुहाओ खोदी तैयार करे ए घणी उंडी धार्मिक श्रद्धाने कीं घे छे; अने खरेखर गरीब तथा तवंगरना गजा प्रमाणे आ गुहाओं 'कृतरानी बोड ' जेवी अगर विशाळ थती. जो कोई तवंगरना महेलनी साथे ज कोईक मिखारीनी झंगडी आवी होय तो ते झुंगडी महेल करतां जुनी छे एम मानवुं शुं भूल-भरेलुं नथीं!

हवे आपणे बीजी रीते जोईए. धार्मिक श्रद्धानो प्रथम आवि-भीव उदार कामोमां थाय छे अने वस्तत जतां ते रुढ (Convent , ional) थाय छे. तेथी प्ररुढ धार्मिक श्रद्धानो आविभीव कळानां कामोमां थाय छे. तेथी करीने केटलीक गुहाओ मात्र 'कुतरानी बोड' करतां बहु म्होटी नथी. "

जैन गुफाओ.

"केटलीक गुहाओमां अने स्वास करीने जैन गुफा, नवसुनि गुफा, विगेरेमां जैन असर स्पष्ट जणाय छे. भीतो उपर तीर्थंकरोनी आकृतिओ उपसेली काढवामां आवी छे. डॉक्टर राजेन्द्रलाल मीत्रे तेमने भूलथी बुद्धनी छे एम कह्युं छे. सर्व गुहाओमां मळीने जैनतीर्थंकरोनी नम मूर्तिओ बुद्धनी आकृतिओ करतां घणी वधारे छे. हाथीगुफा जेवी प्रख्यात गुफाना लेखमां पण जैन असर स्पष्ट जणाइ आवे छे. ए लेखमां जेने डॉक्टर राजेन्द्रलाल बौद्ध स्वस्तिक कहे छे ते खरी रिते जैन स्वस्तिक छे. बळी आरंभमा नमस्कार पण जैन रीति मुजब छे. आधी आपणे निर्णय उपर आवी शर्काए के उदयगिरि अने खंडिगिरिनी गुहाओमां जैन तथा बौद्ध बंने असर व्यक्त थाय छे. केटलीक बखत बौद्ध तथा जैननो मेळसेळ थयेलो होय छे. बनारसमां सारनाथ आगळ एक जैन देवालय छे. बुद्ध गयामां पण एक जैन देवालय आवेलुं छे.

खंडिगिरिनी गुहाओमांनी शतवर अगर शतवक, नवमुनि अने अनन्त गुहाओ जरुरनी छे. आमांनी पहेली बेमां जैन असर व्यक्त छे अने बाकीनीमां बौद्धोनी असर छे. शतवक गुहाने एक ओटलो हतो, जेना उपर स्तंभो हता. तेनी अंदर सात न्हाना स्तंभो हता जे हाल जता रहा छे. तेमां बे गुहाओ छे जेनी वचमां एक पातळी भींतनो आंतरो छे. तेमनां नाम, त्रिशूल अने बारभुजा गुहाओ छे. शतघर गुहामां दक्षिणना भागनी परसाळनी दिवालो उपर लांछनो साथे जैनतीर्थ-करोनी आकृतिओ कोतरेली छे. परसालना डाबा खुणाथी शरु करीने तीर्थकरोनी आकृतिओ नुं वर्णन नीचे आपुं छुं.

- (१) आ एक ऋषभदेवनी उभी नम आकृति छे अने तेनी पासे एक पोठीओ छे अने बे बाजुए उंचे हाथमां गायननां साहित्यों लहने उभेला बे सेवको छे. वळी बे बाजुए बीजा बे सेवको छे. तेमांना जमणा हाथ तरफना सेवकना हाथमां चामर छे तथा डाबा हाथ भणीना सेवकना हाथमां पंचपात्र छे. तेओ एक उंचा भाग उपर उभा छे. तथा ध्यानमस्त स्थितिमां पलांठी वाळीने बेठेली उपसेली बे आकृतिओ छे. तेमांनी डाबी आकृतिना हाथ छाती आगळ जोडेला छे अने जमणी आकृतिनी डाबी हथेली जमणी हथेली उपर मुकेली छे. आ आकृतिओनी नीचे बे नागणीओनी आकृतिओ छे जे हाथ जोडीने पार्थना करे छे तथा जेमना उपर सपैनी फणाओ आवेली छे. आनी नीचे बचमां एक बळदनी आकृति छे जेनी डाबी बाजुए नाळचावाळुं एक पाणीनुं वासण छे तथा जमणी बाजुए एक शंख तथा सिंह छे. बळद कुदरती रीते ज काढयो छे. तेना शरीरनी करचलीओ पण काढेली छे.
 - (२) आ अजीतनाथनी लांबी नम्म आकृति छे. उपरनी बाजुए चंद्र आप्यो छे. उपरनी जे बे आकृतिओ छे ते हाथमां प्याला लइने उमेली वे स्त्रीओ छे. वच्चे बे सेवकोनी आकृतिओ छे; तेमांनी डाबी आकृतिना हाथमां चामर छे, तथा जमणी आकृतिना हाथमां पंखो छे. निचेनी आकृतिओ (१) नी आकृतिओ जेवी छे. अहीं चिन्ह तरीके हाथी काढेलो छे. अने तेनी वे बाजुए सिंहो काढेला छे.
 - (३) आ संभवनाथनी मूर्ति छे ते घ्यानप्रस्त स्थितिमां छे. ते एक प्रफुल कमळ उपर बेठेली छे अने तेनी डाबी इथेली उपर जमणी हथेली छे. वसेनी बीजी आकृतिओ (२) ना जेवी छे. अहीं, घोडाने चिन्ह तरीके काढयो छे. डाबी बाजुए नाळचावाळुं पाणीनुं बासण छे तथा बन्ने बाजुए बे सिंह छे.

- (४) आ अभिनन्दननाथनी 'ध्यानी 'आकृति छे ते (३) ना जेबी छे; उपरना ने सेवकोने बदले ने कमळो छे. चिन्ह तरीके मांकडुं चितरेछुं छे.
- (५) आ (३) ना जेवी छे; डाबी बाजुना सेवकनो हाथ माथाना मुकुट उपर छे. चिन्ह तरीकें हंस छे. आ सुमतिनाथनी आकृति छे.
- (६) आ (३) ना जेवी छे; चिन्ह तरीके पद्म काढे छुं छे. आ कमळनी जमणी बाजुए (३) नी माफक पाणीनुं वासण छे अने ढाबी बौजुए कुंभ छे. आ पद्मप्रभुनी आकृति छे.
- (७) आ सुपार्श्वनाथनी ध्यानी आकृति छे. उपरनी आकृतिओने बदले अहीं आछुं शोभावाछुं काम करवामां आन्धुं छे. अहीं
 चिन्हमां स्वस्तिक छे जेनी शास्ताआ घडीआळना क्रमथी उलटी
 दिशामां वाळेली छे.
- (८) आ (७) ना जेवी छे. पण उपरनुं आछुं काम तेना करतां जरा जुदुं छे. चिन्ह तरीके अर्धचंद्र छे. आ चंद्रशभुनी आकृति छे.
- (९) आ (८) ना जेवी छे; अहीं उपरनी आकृतिओमां कमळो छे. चिन्ह तरीके मोर छे. आ आकृति जेवी बीजी एके नधी. कारण के कोईपण तीर्थंकरने मोरनुं चिन्ह नथी.
- (१०) आ (९) थी जुदी छे. तेमां तीर्थंकरनी उमेली नम्र आकृति छे. चिन्ह जतुं रह्युं छे. बे पोपटनी आकृतिओ छे. आ आकृति जेबी बीजी नथी.
- (११) आ (१०) ना जेवी छे. पण नम्न आकृति उपर सर्पनी छाया छे. उपरनी आकृतिओमां वे उडती परीओ छे. चिन्ह

तरीके एक अजाण्यो छोडबो छे. बन्ने बाजुए वे घडा तथा सिंहनी आकृतिओ छे. कदाच आ २१ मां तीर्थंकर निमनाथ होइ सके.

- (१२) आ (१०) जेवी छे. आनुं चिन्ह स्पष्ट जणातुं नथी. कारण के हालमां तेनी आगळ एक न्हानी प्रतिमा घालेली छे. आना जेवी बीजी आकृति नथी.
 - (१३) आ (१) ना जेवी छे. चिन्हतुं म्होंढुं भांगी गयुं छे.
- (१४) आ (५) ना जेवी ध्यानी आकृति छे. अहीं चिन्ह तरीके एक मघर छे तेनी वे वाजुए वे सिंहाकृति छे. आ ९ मा तीर्थ-कर सुविधिनाथनी आकृति छे.
- (१५) आ (१४) ना जेवी छे. अहीं (१२) नी माफक चिन्ह उपर एक न्हानी प्रतिमा घालेली छे. आ आकृतिना जेवी बीजी जाणवामां नथी.
- (१६) आ (१५) ना जेवी छे. सेवकोना द्दाथमां चामरो छे. चिन्ह मांगी गयुं छे, घणुं खरुं ते हरणनुं हशे. आ १६ मा तीर्थ-कर शांतिनाथनी आकृति छे.
- (१७) आ ध्यानी आकृति छे; उपरनी आकृतिओ शोभा माटे छे. चिन्ह भांगी गयुं छे अने ते घेटानुं होय तेम जणाय छे. १७ मा तीर्थंकर कुंथुनाथनी आकृति छे.
- (१८) आ (१५) ना जेवी छे. मच्छनुं चिह्न छे. आना जेवी बीजी आकृति जाणवामां नथी अने कदाच ते कृष्टिपत हुशे. कारणके कोईपण तीर्थंकरने मच्छनुं चिह्न नथी.
- (१९) आध्यानी आकृति छे. उपरना भागमां कमळो छे. तेमां पाणीना वासणनुं चिह्न छे तेथी ते १९ मां तीर्थंकर मछी-नाथनी आकृति छे.

- (२०) आ (१५) ना जेवी ध्यानी आकृति छे. एक कारिपत छोडनुं चिह्न छे तेथी २१ मा तीर्थंकर नमीनाथनी आकृति दर्शावे छे.
- (२१) आ (१५) ना जेवी ध्यानी आकृति छे. काचबानुं चिद्व छे. तथी ते २० मा तीर्थंकर मुनिसुत्रतनाथनी आकृति दर्शावे छे.
- (२२) आ ध्यानी आकृति छे; उपरना भागमां देवांगनाओं काढेली छे. शंखनी निशानी छे अने तेनी वे बाजुए मोर छे अने तेथी ते २२ मा तीर्थंकर श्री नेमीनाथनी आकृति दशीवे छे.
- (२३) आ एक उभी नग्न आकृति छे. उपरना भागमां कमळो छे, तीर्थंकरना मस्तक उपर जळनी धारा करती होय तेम हाथमां कुंभ लइने वे देवांगनाओ काढेली छे. गेंडीनुं चिन्ह छे. आ आकृतिमां ११ मा तीर्थंकर श्रेयांसनाथ छे.
- (२४) आ एक उभी नम्न आकृति छे. उपरनी बाजुए (१) नी माफक गायननां साहित्यों सह अप्सराओं उभेली छे. सिंहनुं चिन्ह छे. अने छेला एटले २४ मा तीर्थंकर महावीरस्वामीनी आकृति छे.
- * निम्नगत, जैन कोषकर्ता हेमचंद्रनी कडीओ उपरथी एम जणारे के उपरोक्त आकृतिओ उपसेली काढवामां अमुक रैली अनु-सरवामां आवी ज नथी. केटलीक आकृतिओ पुनः पुनः आवी छे तथा केटलाक तीर्थंकरोने काढी नांखवामां आव्या छे. ११ मी अने २० मी आकृतिओमां २१ मा तीर्थंकर नभीनाथ आपवामा आव्या छे. तीर्थं-करोने चिन्हो सह कालगणना प्रमाणे गोठववामां आव्या छे. केटलीक-

^{*} वृषो गजोऽश्वः प्लवगः क्रौक्षोऽब्जं स्वस्तिकः शशी ।

मकरः श्रीवत्सः खड्गी महिषः शूकरस्तथा ॥

स्येनो वजं मृगच्छागो नन्दावर्त्तो घटोऽपि च ।

कूम्मों नीलोत्पलं शंखः फणी सिंहोऽईतां ध्वजाः ॥ (श्री हेमचंद्रः)

वार आ कमनो भंग करवामां आव्यो छे, परंतु कमभंग सलाटोना अज्ञानने लीधे छे. ९ मी अने १८ मी आकृतिमां जणाव्या प्रमाणे जैन शास्त्रमां निह कहेली एवी आकृतिओं काढवा परथी तेमनुं अज्ञान साबीत थाय छे.

त्रिशूळ गुहानी उत्तरमां बारमूजा छे अने तेनी साथे नवमुनि गुहा छे.

नवमुनि गुहा एक साधारण गुहा छे, तेमां वे ओरडा छे अने एक ओटलो छे. आ गुहानी जरुर एटली ज छे के तेमां जैनश्रमण शुभ-चन्द्र विषेतो एक लेख छे अने तेनी मिति है. स. १० मी सदी छे. आर्कीओलॉनिकल सर्व्हें रिपोर्ट पु. १३ ना प्रकाशके आ कोतरेली आ-कृतिओ बुद्धनी छे एम गणवामा मुल करेली छे.

ई. स. १८ मी सदीना अंतमां खंडगिरिना शिखर उपर मराठाओए बंधावेला जैन देवालय विषे सहज मूचना करुं छुं. कीट्टो (Kittoe) धारे छे के हालनुं देवालय कोइक चैत्यनी जग्या उपर बांधे छुं छे, कारण के त्यां जुना मकानोनी सामभी तेने जडी हती. * पण कीट्टोना कहेवा प्रमाणे त्यां कोई जुनुं देवालय पहेलां होय तेम म्हने लागतुं नथी.

आ जैन देवालयथी पश्चिमे अने लगभग सपाट जमीन उपर केटलाक उमा चोरस पथ्यरी छुटा छवाया पड्या छे अने कनींग्हामना कहेवा प्रमाणे ते चैत्यो दर्शावे छे. अ 'देव सभा ' छे. कदाच आ नाम ए जग्यानुं ज होय.

नाइट्रेाग्लीसराइन, फोडवानो दारु, गनकॉडन, कीसलगढ अगर नोबल डायनेभिक विगेरे पदार्थीनी शोध थयां पहेला आवा खडकने

^{*} की द्वों ने ए. एस. बी. पु. ६ पा. १०७९.

[🖣] कनीग्हामनी आश्वीओलॉजिकल सन्हें ऑफ इंडिया, पु. १३, पा. ८०.

उडाववो ए केटलुं अवरुं काम हशे ते मात्र कल्पनामां अ आवी शके, पण अहींआ पथ्थरों पोचा तथा काणांत्राळा छे तेथी खोदाणकाम सहे-लाइथी यह शके तेम छे. सामान्य रीते मुख्य खडकथी दूर ढाळ पडती जमीनथी गुहाओं खोदवामां आवी छे. ज्यां बनी शके त्यां बहार जो-वाने बाकां करेलां छे. म्हारे कहेवानी जरुर नथी के आ बाकां रेल्वेने माटे खडको कोरतां जोवामां आवे छे तेवा छे. त्यां पाणी जवानी रीत संतोषकारक रीते राखवामां आवी छे. आ उपरथी पीनसेप उपर एवी सज्जड असर थइ के तेणे जनल ऑफ घी एशियाटिक सोसायटी, पु. १६ पा. १०७९ मा नीचे प्रमाणे लक्ष्यं छे:

ओरडानी छत घणीवार जराक वांकी देखाय छे. जैनगुफानी छत्तनो उठाव तथा पहोळाईनुं माप म्हें लीधुं छे अने तेथी मालुम पडयुं के तेना उठाव अने पहोळाईनुं जे प्रमाण छे ते हाल पण हरकोई इजनेर कब्ल करे तेवुं छे. "

मसिद्ध गुफाओ अने तेमनी इतिहास-

खंडिगिरि उपर जे न्हानी म्होटी सेंकडो गुहाओ छे तेमां हाथीगुफा, अनन्तगुफा, राणीगुफा, वैकुंठगुफा, माणेकपुरगुफा, जया-विजयागुफा, गणेशगुफा, स्वर्गपुरीगुफा, शतवक अने नवमुनिगुफा आदि गुफाओ विशेष प्रसिद्ध छे, आमां केटळीक गुफाओ बौद्धधर्मनी छे अने केटलीक जैनधर्मनी छे. परंतु परस्पर बंने धर्मनी सेळमेळ थह जवाना छींधे तथा बंने धर्मीमां जे केटलीक समानता छे तेना लींधे, आ गुफा—समृहमांथी केटली अने कह जैनोनी छे अने कह बैद्धोनी छे ते बरोबर तारवी शकाय तेम नथी. आ बधी गुहाओ एकी वखते थह नथी परंतु जुदा जुदा समये बनी छे. बाबू मनोमोहन जणावे छे के—

"आ गुहाओनो इतिहास अंधारामां रह्यों छे अने घणा विद्वानोए ते इतिहास जाणवाने निष्फळ प्रयत्नो कर्या छे. हिंदुस्थानना
आ भागनी गुहाओनो पश्चिम विभागनी गुहाओ साथे घणो संबंध नथी.
तेथी मिति शोधवामां तथा नकीं करवामां शोधक आहे मार्गे चढी
जाय तेम छे. हाथीगुकाना [आ] लेखियी ओरीस्साना आ अंधारामां रहेला इतिहास उपर अजवाळुं पडे छे. पंडित भगवानलाल
इन्द्रजीना वांचवा प्रमाणे ते गुहाओनी मिति घणामां घणी इ. स. नी
बीजी सदी होइ शके. तेमना कहेवा प्रमाणे आ गुका जैन राजा खारवेले खोदी काढी हती. लिपिना अक्षरी उपरथी एम कही शकाय के
घणी खरी गुहाओ इ. स. पूर्वे बीजा अगर त्रीजा सैकामां खोदी काढेली छे; अने इ. स. पूर्वे चोथा अगर पांचमा सैकामां पण ते थयेली
होय एम कहेवामां कांइ खोदुं नथी; एटले के हाथीगुका लेखनी पहेलांना समयमां; कारण के जे स्थळे आ गुहाओ छे ते स्थळने धार्निक
छोको घणा समयथी पवित्र गणता होवा जोइए. ''

कालगणना.

" आ गुहाओनी चोकस रीते कालगणना करवी ए तद्दन अशक्य छे. अने जैन तथा बौद्ध गुहाओना सेळमेळना लीघे अशक्यता वधी छे. भिन्न भिन्न विद्वानोए तेमनी भिन्न भिन्न मितिओ नकी करी छ ए ज तेनी अशक्यता पूरवार करे छे. दाखला तरीके अनंतगुहा जेनी मिति जुदा जुदा लेखो प्रमाणे चार सैकामां आवे छे. 'केव टेम्पल्स ऑफ इन्डिआ ' ना कतीओए तेनी मिति इ. स. पूर्वे २०० अने १५० नी वचमां मूकी छे. कर्निगहामे * ई. स. नी बीजी के त्रीजी सदीमां गणी छे. गुहानी भीतो उपरना लेखोथी आ बाबत नकी थह शके तेम नथी, कारण के ते टेखो चोकस नथी; तेमना अर्थ जुदा जुदा थइ शके छे अने एक ज अर्थ थाय तो पण कालगणना विषे भिन्न भिन्न निर्णयो कढाय छे. दाखला तरीके हाथीगुफा लेखनी मिति डॉक्टर मित्रे इ. स. पूर्वे ३१६ अने ४१६ नी मध्ये मुकी छे. अने श्रीन्सेपे अशोकना लेखो करतां अविचीन राखी छे. ' कॉरपस इन्स्कीप्ट्यॉनम् इन्डिकॅरम ' नो कर्ता भीन्सेपना मतने मळे छे. अने ई. स. पूर्वे १७५ अने २०० नी वचमां मुके छे. वळी भगवानलाल इन्द्रजीए धीन्सेप, भित्र, विगेरेना मत खोटा गण्या छे अने पोतानी एक नवी मिति नकी करी छे, जे इ. स. पूर्वे १९८ अने १५३ नी बच्चे छे. हालमां 'जर्नल ऑफ रॉयल एशियाटीक सोसायटी ' ना एक अंकमां डॉक्टर फ्लीटे आ मत विषे पुनः शंका करी छे. आ उपरथी एम जणाशे के जुदा जुदा विद्वा-नोना मत जुदा जुदा पडे छे. आ हरकत हमणा वधी छे; कारण के वस्तत जतां अक्षरो वधारे घसाइ गया छे. तेथी ज शिल्पकाम उपरथी तेनी मिति नक्की करवानो म्हें प्रयत्न कर्यो छे. "

#

"मुख्य मुख्य गुहाओना खोदाण कामनी शक्य मितिओ नीचेना कोठामां आपुं छुं.

^{*} क्निंगहामनो ' आर्किऑलॉजीकल सर्वे ऑफ इन्डिआ, पु. १३ (१८७५-७६) पृष्ठ ८१.

नंबर.	गुफा.	मिति.		
8	हाथीगुफा.	ई. स. पूर्व	₹00,	
7	अनन्तगुफा.	"	२५० थी	₹००.
३	राणीगुका.	"	२०० थी	१००.
8	जया-विजया.	"	२०० थी	800.
ÿ	गणेशगुफा.	,,	१०० थी	₹.
ξ	स्वर्गपुरीगुका.	**	१०० थी	१.
૭	शतवक, नवमुनि नेवी	,, 40	थी ई. स.	800.
	जैन गुफाओ.			

संडिगिरिनी जैन गुफाओनो समय नकी करवामां घणी हरकतो आवे छे. म्होटा स्तंभो अने जैनतीर्थंकरोनी म्होटी प्रतिमाओ उपरथी एम स्पष्ट थाय छे के ते बौद्ध गुहाओथी अर्वाचीन छे. संस्कृत कोष-कार अमरसिंहना ई. स. ना छड़ा सैकामां बंधावेली होवी जोईए एम धारवामां आवे छे. परंतु गयाना जैन देवालय करतां आ जैन गुहाओ नकी प्राचीन छे एम कही शकाय.

हाथीगुफाना लेखमां जेनी अर्वाचीनमां अर्वाचीन निति ई. स. पूर्वे बीजी सदीनी मध्यमां छे, तेमां खारवेलना महान् जैनवंश विषे उल्लेख करेलो छे. आ विगत उपरथी आपणे एम अनुमान करी शकीए के हाथीगुहानी नजीकमा जेनश्रमणी माटे गुहाओ खोदवामा आवी हशे. वळी उदयिगिर उपर घणी बौद्ध गुहाओ छे अने तेथी बौद्धोधी जुदा रहेवा माटे जैन साधुओए खंडिगिरि पसंद कर्यो होय अने ते ई. स. पूर्वे पहेला सैकाथी ई. स. ना पहेला सैकामां होई शके. "

'' परंतु नवमुनिगुहामां एक लेख छे जेमां उद्योतकेशरी जे ई. स. ना १० मा सैकाना प्रथम २५ वर्षमां थयो एम म्हें आठमा प्रकरणमां पूरवार कर्युं छे, तेना विषे उल्लेख छे. आ गुहामां एक जैनश्रमण कुल्चंद्रनो शिष्य रहेतो हतो एम धारवामां आवे छे. आ छेख उपरथी एम निर्णय थई शके के आ गुहा दशमा सैकामां स्रोदाई हरो; पण ज्यारे गणेशगुफा, जे ई. स. पूर्वे सातमा सैकानी बौद्धगुहा छे तेनी परसाळमां गणेशनी आकृति अगर खंडगिरिनी एक जैनगुहामां हिंदुदेवी दुर्गानी आकृति जोईए छीए त्यारे ए निर्णयमां शैका उत्पन्न थाय छे. जो एम कहीए के गणेशगुहा अगर जैनगुफा ब्राह्मणगुफाओं छे, कारण के त्यां हिंदु देवो जोवामां आवे छे. तो ते अयोग्य गणाय, खरी रीते आ आकृतिओ पाछळथी घुस।डवामां आबी छे. केटलांक कारणो उपरथी तथा उद्योतकेशरी एक जैनोनो म्होटो पोषक हतो ते उपरथी एम बनी शके के आ હેલ સ્વોટો છે અને તે મુદ્દા થયા પછીનો છે. તથા પોતાના विचारोनी उदारताने माटे जे वखणायो हतो तेना मानमां मात्र आ हेख कोतरेली होवी जोईए. "

हाथीगुफा.

उपर वर्णवेला गुफा-समृहमां ज प्रस्तुत लेखवाळी हाथीगुफा पण आवेली छे. आ गुफा उदयगिरिना शिखर उपर छे. आना विषयमां बाबू मनीमोहन ए ज पुस्तकमां जणावे छे के-" हाथीगुफा एक नैसर्गिक गुफा छे. तेना उपर घणी ज थोडी कारीगरी करवामां आवी छे अने जो के शिल्पीनी नजरथी ते बहु उपयोगी नथी तो पण त्यांनी सर्व गुफाओं करतां ते घणीज महत्त्वनी छे. कारण के तेमां एक म्होटो लेख छे, जेमां किंतिगना एक राजानुं स्ववृत्तांत लखे छुं छे. डाक्टर भगवानलालना वांच्या पहेलां आ लेख हिंदुस्तानमां जुनामां जुनो गणातो अने जो के हाल ते प्रमाणे मनातुं नथी तो पण आ गुहानी उपयोगिता जरापण ओछी थह नथी.

एने प्रथम शोधी काढनार मी. ए. स्टर्लींग हता. अने कर्नल मेकेन्झीनी मदद्यी १८२० मां तेनी नकल लीधी अन पोताना घणा उपयोगी लेख "एन एकाउन्ट, जोशोफीकल, स्टेटीस्टीकल, एन्ड हीस्टोरीकल ऑफ ओरिस्सा पोपर, ऑर कटक" (An Account Geographical, Statistical, and Historical of Orissa Proper or Cattack) साथे एशीयाटीक रीसचींस (Asiatic Researches) पु. १५ मां १८२४ मां भाषांतर विना प्रकाशित कथीं. मी. स्टर्लींग आ लेख वांचवाने अशक्तिमान हतो अने तेथी मीक अक्षरो साथे तेना अक्षरोनी सरखामणी, तथा हिंदुस्तानना जुदा जुदा भागोना लेखोमांना अक्षरो साथे मेळववा शिवाय ते कांइ करी शके तेम नहोतो.

१८३७ मां ' जर्नल ऑफ धी एशियाटीक सोसायटी ' पु. ६ मां लेफटेनन्ट कीटोनी नकल उपरथी जेम्स प्रीन्सेपे भाषांतर तथा नकल सहित आ लेख प्रकाशित कर्यों छे. तेमना करेला भाषांतर उपरथी अहींना विद्वानोनुं ध्यान ते तरफ खेंचायुं. डाक्टर राजे-न्द्रलाले ते लेख पुनः तपासी जोयो अने १८८० मां केटलाक फेरफारोसह ' एन्टीक्वीटीझ ओफ ओरिस्सा ' पु. २ मां प्रका-शित कर्यों.

शीन्सेप तथा मित्रनो मत एवो छे के ए लेख कर्लिंगना राजा भैरनो हतो, जे राजा मूळ राज्य पचावी पढ्यो हतो अने जेणे घणुं दान कर्यु, तळावो सोदाव्यां अने आवांज बीजां जनहितनां कामो करीने छोकोनो मानीतो थयो. प्रीन्सेपना मत प्रमाणे ए लेख ई. स. पूर्वे २०० वर्षथी जुनो नथी. 'कॉरपस इन्स्कीप्ट्योनम् इंडीकेरम् (Corpus Inscriptionum Indicarum) ना कर्ता प्रीन्सेपना मतने मळे छे अने धारे छे के ए लेख अशोकना लेखोथी जुनो नहीं होई ई. स. पूर्वे बीजा सैकाना छेछा पचीस वर्षमां थएलो छे. 'कारण के कोईपण अक्षर उपर माथुं के मात्र दोरेला नथी. ' परंतु डाक्टर मित्र ए लेखने ई. स. पूर्वे ४१६ ने ३१६ नी बच्चेना गणे छे. तेमनो निर्णय ई. स. पूर्वे ४१६ थी ३१६ मुधी राज्य करनार नम नन्दोमांथी एक नंदराजा उपर आधार राखे छे. जे भागमां (लीटी ६) नंदो विषे कहेवामां आव्युं छे ते भागनुं भाषांतर हुं नीचे आपुं छुं:—

" रत्नो—वधी सामग्री—ते देवने आपे छे. त्यारबाद दान करवानी इच्छा थवाथी—नन्द राजाना नाश करेला सो महेलो, अने तेने पण काढी मूकेलो, अने विजयनादी ने काई इतुं ते सर्व छूंटने उपर कहाँ ते प्रमाणे दानमां वापरी दीधी. *

शिन्सेप अने मित्रना मतप्रमाणे आ गुहा बौद्धनी छे. कारण के एना लेखमां बौद्धनां चिन्हों नजरे पढे छे. परंतु डाक्टर भगवान- लाल इंद्रजीए ते जैननी छे एम पूरवार कर्युं छे अने ते खारवेलनी बनावेली छे एम कह्युं छे. आ लेखनी छेली अगर १७ मी लीटीमा खारवेलनुं नाम आवे छे. भगवानलालना मत प्रमाणे आ लेखनी मिति मौर्यसन १६५ अगर ई. स. पूर्वे १५७+ छे. मौर्यसन ई. स. पूर्वे

^{*} जे. ए. एस. बी. पु. ६.

⁺ Actes du Sixieme Congres or, tome iii pp. 174-177.

३२१ थी शरु थाय छे, तेथी गुन्हानो वधारेमां वधारे जुनो वसत है. स. पूर्वे बीजा सैकानो होइ शके. हालमां डाक्टर फ्लीटे ' जर्नल ऑफ धी एशीयाटीक सोसायटी ऑफ प्रेटब्रीटन ' ना एक अंकमां प्रकट कर्युं त्यार पहेलां बीन्सेन्ट स्मीर्थ विगेरे शोधकोनो पण तेवोज भत हतो. पंडित (भगवानलाल) नुं मत मने पसंद नथी, पण ई. स. पूर्वे श्रीजा सैकाना अंतमां होई शके एम हुं धारुं छुं. एटले के मगध्मी गादी उपर अशोक आव्यो ते पहेलां. डाक्टर फरग्युशन अने बरगेसना मतप्रमाणे ' आ लेखनी मिति घणुं खरुं ई. स. पूर्वे ६०० छे. ' तेओ कहे छे के अशोकना राज्यथी, खडकामांथी भोंयरां खोदी काढवानी रीति शरु थइ अने त्यारबाद उत्तरोत्तर प्रगतिथी आ काम १००० वर्ष सुधी चाल्युं. '

आ छेखनी १६ मी लीटीमां कहेवामां आव्युं छे के आ राजाए 'जमीननी तळे ओरडा; तथा देवालय अने स्तंभोवाळां भोयरां कराव्यां.' आ उपरथी आपणे एम कही शकीए के हाथी गुफानी पासे तेना जेटली जुनी बीजी गुहाओं छे. जो के ते आपणे निश्चयपूर्वेक कही शकीए नहिं. वळी आपणे एम पण कही शकीए के चैत्य, देवालय तथा स्तंभोवाळी गुहाओं करतां बीजी जुनी गुहाओं हशे."

किंगमो संक्षिप्त इतिहास.

आ प्रमाणे खंडगिरि अने त्यांनी गुफा मोनुं वर्णन छे. कालना महात्म्यनी गति अकल छे. जे जैन अने बौद्धवर्मना श्रमणो माटे

१ वी. स्मीयनी ' अर्ली हीस्टरी ऑफ इंडीआ ' पा. ३५ (टीप).

२ फरम्युसन अने बरगेयनी 'केवटेम्पल्स ऑफ इंडीआ 'पा. ६७.

आ बधां ' लयनो ' बनाववामां आव्यां छे तेमां भाजे सेंकडो वर्षेथी ए धर्मना कोईपण श्रमणे तो शुं परंतु गृहस्थे पण पग सुधां नहि मृष्युं होय जे प्रदेशमां पूर्वे जैनवर्म आटली बधी जाहोजलाली मोगवतो हतो त्यां आजे 'जैन' ए शब्दथी पण लोको सर्वथा अज्ञात छे. कटकमां थोडाक जैन दुकानदारो छे अने तेमना तरफथी एक न्हानं सरखं (दिगंबर संप्रदायनं) नवीन मंदिर पण खंडिगिरि उपर बनाववामां आवे छुं छे. परंतु ते बधुं परदेशीय छे. ए दुकानदार जैनो दक्षिणमांथी व्यापारार्थे जइने त्यां वसेला छे. ओरीस्साना मूळ वतनीओमांथी कोई पण जैनधर्मने ओळखतो नथी. ओरीस्सानो इति-हास यथार्थ रीते हजी सुधी उपलब्ध थयो नधी तेथी ए जाणी शकातं नथी के ए प्रदेशमां जैनधर्मे केटली प्रगति करी हती ? तोपण ना गुफाओ अने लेखो उपरथी विद्वानो अनुमानो करे छे के घणाक समय सुधी जैनधर्म ए प्रदेशमां राज्यधर्भ तरीके पळातो रह्यो छे. जैन अने बौद्ध धर्म बंने साथे साथे ज आ प्रदेश उपर खील्या होय एम जणाय हे अने तेमनी असर ब्राह्मणधर्म उपर पण केटलीक रीते सज्जड थयेली मनाय छे. आ विषयमा बाबू मनोमोहन रुखे छे के-

" इसवी सननी शक्त आत पहेलां अहीं जैनधर्म तथा बौद्धधर्म प्रवर्ततो हतो अने तेमनी असर हिंदुधर्म अथवा खरी रीते कहीए तो ब्रह्मधर्म उपर थह हती. ब्रह्मधर्मनो बौद्ध अगर जैन धर्मनी साथे मेळाप यतां कळा कौशल्यना दरेक विभागमां फेरफार थया; शिल्पकळा पण तेनी असरथी अळगी रहे तेम नहोतुं. बौद्धधर्मनी सर्वव्यापी असर हजु पुरीमां दृष्टिगोचर थह शके छे. "

" ओरीस्सा ई. स. पूर्वे २ जी सदीथी ई. स. नी ८ अगर ९ मी सदी सुधी जैन अने बौद्धधर्मनुं मुख्य स्थळ हतुं, ए मानवाने आपणी पासे खास कारणो छे. ई. स. पूर्वे २६२ मा महान् मौर्य राजा अशोके कर्लिंग देश जीत्यो त्यारथी बौद्धधर्मनी असर थवा लागी; आ जीतमां घणां माणसोनो घाण निकळी गयो, ते वात तेना शिलालेख ($\mathbf{R}^{\mathrm{ock}}$ edict) नं. १३ मां मोज़द छे. सुधारानी असर धती गई अने कमे कमे कर्लिय देश आगळ पडतो थवा लाग्यो. जो के केटलाक अशो-कना लेखो मैसरना उत्तर भागमां मळी आवे छे तोपण डॉक्टर भांडारकरे. बीन्सेन्ट स्मीर्थे, विगेरे विद्वानी कर्लिंगने अशोकना राज्यनी दक्षिणसीमा गणे छे. बौद्धधर्मना प्रवर्तनना लीधे तेमज समुद्रना किनारा उपर आववाना लीघे कलिंगदेश अन्य देशोना संबंधमा आवतो गयो: तेनुं दरियाई बळ घणा वस्तत सुधी रह्यं हतुं, अने हवे तेमां नवो उत्साह उमेरावाने लीधे ते व्यापारनुं मुख्य मथक बन्धुं. ई. स. पूर्व ७५ मां कलिंगथी निकळेला एक लक्करे जावा सर केंद्रे. ज्यारे ई. स ६२९ अने ६४५ नी वचे हुऐनत्सांग (Hiuen Tsang) उच्य अगर ओरीस्सा आव्यो त्यारे तेणे बौद्धधर्मनी असर दर्शावनारा बणा म्होटा ' संघारामी ' 'स्तूपो ' विगेरे जोयां. तेणे कोई पण हिंदु देवालय विषे उल्लेख करेलो नथी. चे-ली-त-लो-चींग अगर चरित्रपुर अथवा हालनुं पुरी, तेनी बहार तेणे " टावर सहित उंचा शिखरोवाळा साथे साथे पांच स्तूपो " जोयां.* आ स्तूपो घणा वखत

१ डॅ|क्टर फ्लीटनुं 'बॅ|म्बे गेझेटीअर " पु. १. तथा, डॉ. भांडारकरनी 'दक्षिणनो इतिहास ' भा. १. ानो इतिहास ' भा. १. २ वी. स्मीथर्ना ' अर्ली हीस्टरी ऑफ इन्डीआ 'पृष्ठ १३१८

३ 'साइकलोपीडीभा ऑफ इन्डिआ, पु. २. (१८८५).

^{*} वर्नीगहामनी ' **ॲन**रयन्ट जोऑफी ऑफ इन्डींआ. '

थयां जमीनदोस्त थई गमां छे, परंतु बौद्धनी असरनुं बे काई गुफाओमां हाक बाकी रह्युं छे ते उपरथी बौद्धधर्मनी चढती विषे स्थार आवी शके. हिंदुओने भिय एवा जगनाथ विषे बौद्धधर्मे वणी सचोट असर करी छे. "

"हाथीगुफा लेखगां पंडित भगवानलाल इंद्रजीए बांच्यु ते प्रमाणे तेनी मिति ई. स. पूर्वे बीजा सैकानी वचमां छे अने तेनो कर्ता किलेंगनो राजा अने जैनधर्मनो उत्तेजक खारवेल छे. आपणे खारवेल तेमज तेना वंश विषे कांई पण जाणता नथी, मात्र उदय-गिरिनी स्वर्गपुरी गुहाना एक लेखमां तेनी खीनुं नाम जोवामां आवे छे. आ छूटी छूटी हकीकत उपरथी एम साबीत थाय छे के किलंग देश उपर जैन राजाओ एक वखते राज्य करता हता. खंडिगिरि अने उदयगिरीनी गुहाओ उपरथी स्पष्ट रीते जैन अने बौद्धधर्मनी असर हिंगोचर थाय छे. "

" बैनधर्मे किंहिगदेशमां एवां सज्जड मूळ धाल्यां हतां के जेनी असर आपणे ई. स. ना १६ मा सैकामां पण जोई शकता हता. सूर्धवंशी राजा, ओरीस्साना अधिपति प्रतापरुद्रदेवने जैनधर्म विषे घणी ममता हती. धी रेवरन्ड लाँगे तेने जैन ठराव्यो छे. + संडिगिरि उपरनी नवमुनि गुहामांना एक लेखमां जैन श्रमण शुभ-चंद्रनुं नाम जोवामां आवे छे. ''

" आवी छूटी छूटी विगत उपरथी आपणे निर्णय उपर आवी शकीए के अहीं आ केट डोक वस्तत जैनधर्मनुं जोर हतुं अने ते राज्य-

^{+ &#}x27;जर्नल ऑफ एशीयाटीक सोसायटी ऑफ बेंगाल 'पु. २८, नं. १-५ (१८५९).

धर्म हतो. ई. स. नी श्ररुवातमां क्या क्या वंशो किलेंग उपर राज्य करता हता तेना विषे चोकस रीते जाणी शकीए तेम नथी; पण एटछं तो आपणे जाणीए छीए के हिंदुस्थानना जुदा जुदा देशोना राजाओए किलेंग देश जीत्यो हतो. तेनी समृद्धि विषेनी प्रख्याति घणे दूर सुधी पहोंची हती. अने तेथी पासेना राजाओं वे ते देश जीतवानो उत्साह थतो. किलंग देश घणो समृद्धिवान् हतो, ए नीचेनी विगत उपरथी कही शकाय:—किलंग देश ' नवसंड पृथ्वी ' ना नव खंडोमांथी एक खंड गणातो हतो; ए प्रमाणे तामील शब्दको-षोमां जणाव्युं छे. (जुओ सेन्डरसननो कानडी कोष.) "

"रामायण अने महाभारतनो वस्तत बाद करतां त्यार पछीना वस्ततमां जे जे राजाओए ते देश उपर हुमला कर्या ते राजाओ एटला बचा छे के तेमनुं वर्णन थई शके तेम नथी. ई. स. पूर्वेना ३ जा सैकामां अशोके ते देश जीत्यों ए विगत म्हें उपर आपी छे. वर्ण मागे अन्ध्रवंशना राजा शातकणींना हुमला विषे हाथीगुकाना लेखमां आप्वामां आञ्युं छे. तेणे " घणा घोडा तथा हाथी खो" मोकल्या पण ते बधा खारवेले हराज्याँ. "

"ई. स. ना बीजा सैकानां किलगदेश अन्ध राजाओना हाथमां गयो, मंगलेश राजाना स्तंमलेख उपरथी आपणे जाणी शकीए छीए के बदामी (Badami) ना पश्चिमीय चालुक्योना राजा पहेला कीर्तिवर्मा जेणे ई. स. ५६७-६८ थी ५९७-९८ सुधी राज्य कर्युं, तेणे किलगना राजाने हराज्यो. तेज वंशना कीर्तिवर्माना पुत्र बीजा पुलकेशीए ई. स. सातमा सैकामां ते जीत्यो अने ते वस्तते कनो-जमां हर्षवर्धन राज्य करतो हतो."

१ वी. स्मीयनी ' अर्लीहिस्टरी ऑफ इन्डीआ ' पृ. १८५.

"ई. स. ८ मा सैकानी मध्यमां राष्ट्रकृटना राजा दन्तिद्रों किंगिदेश जीत्यो, पुनः ई. स. ९ मा सैकामां जैनधर्मना पोषक अकाल-वर्षे ते जीत्यो. ज्यारे ज्यारे वस्तत मळतो त्यारे त्यारे पूर्वना चालुक्यो ते देश उपर हुमलो करता. ई. स. ना ११ मा सैकामां पूर्वीय चालु-क्योना राजा राजराजदेवे तेना उपर स्वारी करी. "*

"महान संस्कृत किन कालिदास ई. स. ना ७ मा सैकामां थयो, तेथी नैसर्गिक रीते तेणे रघुनी जीतनी देखान किंगमां मूक्यो हशे. + ई. स. ना १२ मा सैकामां लखायला राजतरंगिणिमां कल्हण पंडिते लिलतादित्यनी किलंगनी जीत निषे घणुं रसमय वर्णन आप्युं छे. §

कलिंगदेश जीतने। ए मात्र उपचार थह पड़्यो अने 'कर्लि-गाधिपति 'ए इल्काब घणो मानवंतो थयो; कारण के कोसल तथा चालुक्योना राजाओनी पाछळ 'त्रिकलिंगाधिपति 'नो इल्काब जोडेलो आपणे जोहए छीए. ''

" ई. स. ९ मा सेकाना आरंभ सुधीनो ओरीस्सानो इतिहास अस्तन्यस्त स्थितिमां छे. त्यां एक जोरावर वंश राज्य करतो हतो, ए ना कही शकाय तेम नथी, परंतु एक पछी एक कया राजाओ

^{*} दा. इ. हुल्टझना ' दक्षिणाना लेखा ' पृ. ६३.

⁺ स तीर्त्वा किपशां सैन्यैर्वद्वद्विरदसेतुभिः। उत्कलादर्शितपथः किल्काभिमुसं ययौ॥ रघुवंशम् , ४-३८०

^{§ &#}x27;राजतरंगिणी ' इंग्रेजी भाषांतर, कर्ता डॉक्टर स्टेन. पु. १, भा. ४, १४७ मी श्लोक, प्रष्ठ १३४.

तेनी गादी उपर आव्या ए नकी करवुं सरल नथी कारण के तेनी सत्तावार विगत मळती नथी. "

किंगमांथी जैनधर्मनुं निर्वासन.

कलिंगना आ संक्षिप्त इतिहास उपरथी जणाशे के ते देशमां एक वस्तत जैनधर्मे घणी उंची सत्ता भोगवी हती. आवी उन्नतदशाए पहोंचेलो जैनधर्भ ते देशमांथी पाछळथी पटले सुधी विस्नुप्त यह गयो के तेनं नाम के निशान पण आजे त्यां जणातुं नथी ए एक खरेखर आश्चर्यकारक बनाव कही शकाय. बौद्धधर्म छप्त थाय तेना तो अनेक कारणों छे अने ते कारणोने लइने ते एकला कर्लिंगमाथी ज नहि परंत आखा भारतवर्षमांथी पण विद्धप्त थयो छे: परंतु जैनधर्मना इतिहासमां आवां कशा कारणो जणातां नथी. तेमज ते अद्यावधि आयीवर्तना अनेक प्रदेशोमां पोताना अस्तित्वने उत्तम रीते टकावी पण रह्यो है. कलिंगमांथी जैनधर्म आवी रीते क्यारे अने कयां कारणोने लड्डने ल्लप्त थयो ते अद्यापि अज्ञात छे. उपर आपेला इतिहासथी एम जणाय छे के ई. स. ना ११ मा सैका सुधी तो ते प्रदेशमां जैनधर्म प्रचित्रत हतो. कारण के प्रथम तो खंडगिरिनी नवमानि नामनी गृहामां ज जे एक लेख ए शताब्दीनो छे तथा जेमां जैनश्रमण ग्रमचंद्र अने कल-चंद्रनं नाम आवे छे अने जे बाबत उपर लखाइ गइ छे, ते उपरथी सिद्ध थाय छे के ए समय सुधी तो त्यां जैनश्रमणी रहेता हता. बीज़ं उपर जे कर्लिंगनों संक्षिप्त इतिहास आपेलो छे तेमां जे चाद्धक्यो अने राष्ट्रकुटवंशीय राजाओ समये समये ए देश उपर चढाइ लइ जइ एने पोताने ताबे बनावता हता एवं जणाव्युं छे, तेमांना केटलाए राजाओं तो जैनधर्मने माननारा के मान आपनारा हता तेथी तेमना

समयमां जैनधर्मनो कोप थनो असंभवित छे. म्हारा धारवा प्रमाणे ई. स. ना १२ मा सैका पछी त्यांश्री जैनधर्म अदृष्ट थयो होवो जोइए. कारण के ए समय पछी बैष्णवीनो जोर वधवा मांट्या हतो अने दक्षिण अने कर्णाटकना जे राजवंशो जैनधर्म प्रति सद्भाव धरा-बता हता ते पण (रामानुजाचार्यना संप्रदायना पादुर्भीव अने प्रभावना रुधि) आ समयमां जैनधर्मथी पराङ्गुख थवा हता. आथी करीने घणी रीते संभवित छे के ए समय पछी किंकिंगमांथी जैनधर्म अदस्य थयो हरो. अने ते अदस्य थवामा मुख्य कारण कोई प्रवल राजकीय उपद्रव ज होवा संभव छे. मी. वीन्सेन्ट स्मीथना कहेवा मुजब *, जेम दक्षिणना केटलाक शैव राजा-ओए ई. स. ना सातमा सैकामां जैनधर्म उपर अत्याचार गुजार्यो हतो अने अनेक जैनोनो सर्वनाश कर्यो इतो, तेम ए कर्लिंगमां पण कोई हिंदुराजाए आवा ज वर्तणुंक चलावी होय अने तेना लीधे जैनोने पोताना प्राचीन अने पिय एवा ए प्रदेशनो सर्वथा त्याग करवो पड्यो होय, ते घणी रीते बनवा जोग छे. जो के किलंगना इतिहासमांथी ए विषे कशो विशेष उद्घेल मळतो नथी तो पण छूटी छवाइ एवी दंत-कथाओं अवस्य संभळाय छे के जे आ बातने पुष्टि आपती होय. ' आर्किओलॉजीकल सर्वे ऑफ इन्डीआ ' ना सने १९०२-०३ ना पन्युअल रीपेटिमां भी. T. H. Bloch आ बाबत उपर लखे छे के " खंडिगिरिनी आ गुहाओनो जैनोए क्यारे त्याग कर्यो ए खरी रीते जा-णवाने आपणी पासे साधन नथी. मात्र पुरीना देवालयना इतिहासमांनी एक अब्यक्त दंतकथा छे. जेमां कहे छं छे के को डगंगाना पौत्र मदन महादेवे भुवनेश्वरनी आजुवाजुनी टेकरीओमां रहेता जैन तथा बीद

[🛊] जुओ, अर्ली होस्टरी ऑफ इन्डीआ, पृ, ४५४-५.

साधुओ उपर जुड़म गुजार्थो हतो. जो आ वात खरी होय तो ते ई. स. ना १२ मा सैकानी आखरमां बनी होवी जोईए! " आ उपरथी संम-वित छे के कर्लिगना कोई राजाए ज जैनोने ए देश सदाने माटे छोडी जवानी कठोर फरज पाडी होवी जोईए.

खारवेछनो छेखः

आ प्रमाणे खंडिगिरि अने त्यांनी गुफाओनुं कांईक प्राचीन-अ र्वाचीन वर्णन छे. आ वर्णन अने तेनी साथे आपेला कर्लिंगदेशना संक्षिप्त इतिहास उपरथी वाचकोने हाथीगुफावाळा ए खारवेळना लेखनी हकीकत अने महत्ता बरोबर समजी शकाशे. आ लेख, हिंद्स्थानना बीजा बधा लेखो करनां अपूर्व अने विलक्षण छे. मी. T. H. Bloch कहे छे के " आ लेख तहन ऐतिहासिक छे के जे हिंदमां प्रथम ज छे. आनी शैली राजा डेरीअस (Darius) ना बेहिस्त्रन (Behistun) लेखना जेवी छे.''' आ लेख एक बरड शिला उपर कोतरेली होबाथी कालना घसाराना लीधे एनो मध्यनी केटलोक भाग नष्ट थई गयो छे के जे आगळ लेखमां स्पष्ट जणाय छे. ए नष्टभाग ऐतिहासिक दृष्टिए घणो ज महत्त्वनो हतो. आ हेखना स्पष्टीकरण माटे जैम उपर जणा-बवामां आव्युं छे तेम, अनेक विद्वानोए बहु परिश्रम उठाव्यो छे परंतु तेमां पूरेपूरी सफळता तो गुजरातना गौरवभूत पुरातस्वज्ञ पंडित भगवानलालने ज मळी छे. तेमणे ज ए लेखना कर्तानं वास्तविक नाम अने संबद्ध वर्णन खोळी काढ्युं हतुं. एमनी पहेलाना शोधको तो लेखकर्तानं नाम पण ' ऐर ' बतावता हता अने पाठो पण आडा

र बाबु मनमोहन चक्रवर्ती एम. ए ना " नोट्स ऑन घी रीमेन्स इन घीळी एनड इन घी केस ऑफ उदयगिरि " पृष्ठ ९०

१ आर्दिओलॉजीकल सर्वे ऑफ इन्डीमा, एन्युअल रीपोर्ट, १९०१-०३.

अवळा रुगाडता—बेसाडता हता. गुजरातना ए गौरवमां और उमेरो करनार गुर्जर साक्षरत्न श्रीयुत केशवलाल हर्षदराय भ्रुव छे के जेमणे पोताना एक देशबंधुए करेला ए 'सुवाच्य ' लेखने स्वकीय प्रतिमाना प्रकाशशी अधिक ओप आपी सर्वना भाटे 'सुप्राह्म ' बनाव्यो छे. श्री भगवानलालना निबंधमां जे अपूर्णता हती अने जेना लीधे आसो लेख अस्पष्ट जेवो जणातो हतो तेनी पूर्ति श्रीयुत केशवलाले करी छे अने लेखमांनी दरेक हकीकतने सुसंगत अने स्पष्ट बनावी छे.

मगधना जे राजा उपर लाखेले चढाह छइ जइ विजय मेळ-व्यानो आ लैलमां उल्लेख करेलो छे परंतु त्रुटित पाउना लीधे जेन नाम समजी सकार्त नथी, ते श्री केशवलालना विचार प्रमाणे बीजो कोई नहि पण पाटलीपुत्रनी परूयात पुष्यमित्र ज छे के जे छेला मौर्यराजा बृहद्रथनो सेनानी हतो अने जेणे राज्यलोभ वश थई पोताना राजानुं व्या-यामभूमिमां कपटथी खून करी, तेना सिंहासननो स्वामी बन्यो हती. पाछळथी ए ज पुष्यमित्र अश्वमेध यज्ञ करी चक्रवर्ती बन्यो हतो. भाष्य-कार पतंजाले अने स्वप्नवासवदत्तादि नाटककार महाकवि भास ए ज पुष्यमित्रना आश्रित हता. आवी रीते खारवेलने पुष्यमित्रनो विजेता बनावी तेना लेखना बधा अव्यवस्थित अंकोडाओने यथास्थाने गोठवी इ. स. पूर्वेना बीजा सैकानी खंडित ऐतिहासिक शृंखलाने अखंड बनावी छे. जाते ' महामेघवाहन ' होवा छतां पण कर कालना कठोर पंजामां सपडाई जई वे हजार वर्ष सुधी ऐतिहा। सिक अंधकारवाळी उंडी गुफामां पढ़ी रहेला ए खारवेलना जीर्ण-शीर्ण नामने पोतानी प्रति-भाना किरण वडे आकर्षी वीसमी सदीना वैद्युतिक आलोकवाळा विज्ञ जगत्ना विचारोद्यानमां लावी मूकवावाळुं पतितोद्धारक 'केशव ' कूत्य सुजनो द्वारा अवश्य स्तुत्य ज छे.

खारवेलना समय विषे जो के हजु सुधी विद्वानोमां केटलोक मतमेद दृष्टिगोचर थाय छे तो पण अधिकांश विचारो पंडित भगवान-कालना मतने ज मळता थता जाय छे अने तेमां श्रीकेशवलालना निर्णये सबळ पुष्टि आपी छे तेथी हवे घणा भागे ए ज समय निश्चित रूप लेशे.

आ छेखथी जैनधर्म उपर पहतो प्रकाशः

खारवेलना आ लेखे जैनधर्म अने तेना इतिहास उपर केटलोक अपूर्व प्रकाश पाड्यो छे. अनेक नवी बाबतो आ लेख उपरथी जाण-वामां आबी छे, तथा विचारवा जेवी जणाइ छे. तेमांनी मुख्य मुख्य आ छे:—

१. जे केटलाक आधुनिक पाश्चास्य विद्वानों, अने तेमना संसर्गथी केटलाक मारतीय पंडितो पण, प्रथम एम घारता हता के जैनधर्म कोइ पण बस्तते राज्यधर्म तरीके स्वीकारायों नहोतो अथवा तो अशोक अने कनिष्क विगेरे राजाओए जेम बौद्धधर्मनी उन्नति माटे प्रयत्नो कर्या तेम जैनधर्म माटे कोइए कांइ कर्युं नथी; ते बधाने आ लेखे खोटा पाड्या छे, अने जैनधर्मना प्राचीन गौरवने तेमना इदयमां यथोचित स्थान आप्युं छे. तेमने एम कब्लूल करता बनाव्या छे के जैनधर्म पण पूर्वे अनेक देशोमां अने अनेक राजवंशोमां राज्यधर्म तरीके पळायो छे. तेनी असर प्रजाना पण म्होटा भाग उपर थइ हती अने बाह्मण, क्षत्रीय, बैह्य विगेरे दरेक वर्णामां ते प्रचलित थयो हतो. जैनअंथोमां जे अनेक ठेकाणे राजाओनां जैनत्वमाटे वर्णनो आवे छे ते केवळ धर्मना महास्म्यने वधारवा माटे कल्पितरूपे बनावी लीधां छे एम ज नथी परंतु तेमां अतिहासिक सत्य पण होई शके छे एम आ लेख उपरथी मानी शकाय छे.

- २. जैनसाहित्यमां जे वे चार अतिहासिक राजाओना जैन होवा बाबतना जेवा तेवा उल्लेखो मळी आवे छे तेमना शिवाय बीजा पण अनेक आवा प्रतापी राजाओ थह गया छे के जेमणे जैनधर्मनी उन्नित अने प्रगति करवा माटे विशेष विशेष प्रयत्नो कर्यो छे, परंतु तेमनां नामो आपणा स्मरणपट उपरथी क्यारनाए मुंसाइ गया छे. ए एक ख़रेखर आश्चर्यकारक वात लागे छे के संप्रति जेवा राजाने माटे तो, के जेनी विश्वसनीय कृति क्यांथे पण आजसुधी उपलब्ध थह नश्ची, केटलाए प्रथोमां बहु बहु वखाण करेलां छे, त्यारे तेना ज समयनी आंसपास थह गयेला तथा साहिसिक अने वीर एवा प्रख्यात पुष्यिमत्र सरखा वैदिक नृपति उपर आर्दशस्त्रप विजय मेळवनार खार-वेल जेवा परम जैन राजानं नाम सुधा पण कोइए स्मरी राख्यं नथी!
- ३. जेम बैद्धि श्रमणोनी समये समये अमुक स्थानमां एकत्र परिषद् मळती हती तेम जैनश्रमणोनी पण परिषद् मळती होवी जोइए एम आ लेखनी वळण उपरथी जणाय छे. अशोक अने कनिष्के जेबी रीते बौद्ध श्रमणोनी पाटलीपुत्र अने मथुरामां परिषदो मेळवी हती तेबी रीते खारवेछे पण सर्व दिशामांथी ज्ञानवृद्ध अने तपोवृद्ध निर्मेथ श्रमणोने आह्वान करी कुमारी पर्वत* उपर एक साधु परिषद् भरी हती.

^{*} कुमारी पर्वत ते कयो अने क्या आगळ आवेली छे ए बाबत प्रथम केट-क्रीक तपास करेली परंतु वाई खुलासो मळी शक्यो निह. ज्यारे आ लखाण छेली वारनुं संशोधित थइ प्रेसमां जाय छे ते बखते बडोदरेथी श्रीयुत चिमनलाल डाह्याभाई दलाल एम. ए. नुं पत्र मळ्युं तेमां तेओ आ बाबत लखे छे के—" कुमारगिरि (एटले कुमारी) पर्वत विषे आज Epigraphia Indica, October. 1915. P. 166. मां वांचवामां आब्युं के उदयगिरिनुं मल नाम कुमार पर्वत हुनुं अने खण्डगिरिनुं नाम कुमारी पर्वत हुनुं. १० मा ११ मा सैका सुधी आ बन्ने पर्वतो कुमार-कुमारी पर्वत तरीके जाणीता हता. " आ उपरथी जणाय छे के कुमारी पर्वत ते खण्डगिरि ज छे अने एना उपर ज खारवेले निर्मेथ श्रमणोनी परिषद भरी हती.

8. जेवी रीते बौद्ध श्रमणोना रहेवा माटे जुदा जुदा मदेशोना अनेक राजाओए रमणीय पर्वतो उपर गुफा-मंदिरो कराव्या हतां तेम जैनश्रमणोना निवास माटे जैन राजाओए पण अमुक अमुक स्थळे गुफा-मंदिरो बनाव्यां छे. आ गुफा-मंदिरोना संबंधमां एक ए बात विचारवा जेवी छे के अत्यार सुधीमां जेटलां जैन-गुफा मंदिरो जणायां छे ते बधां दिगंबर जैनोना वस्तिवाळा प्रदेशमां ज बधारे छे, श्वेतांबरोना वासप्रदेशमां नथी. खंडगिरि उपर पण दिगंबर जैन मुनिओनो ज निवास रहेतो हतो. जो के खारवेलना समयमां दिगंबर श्वेतांबर मेदो व्यक्तरूपे नहिं होय-ते बखते तो घणा भागे जैनधमें अविभक्तरूपे ज हतो-तोपण पाछळथी तो ए प्रदेश उपर दिगंबर संप्रदायनुं ज रवामित्व हतुं. खंडगिरिनी जैनगुफाओम जे जैनमृर्तिओं विगेरे कोतरेली छे अने जेमनुं वर्णन उपर आपवामां आव्युं छे ते वधी दिगंबरी ज छे. एरुला, अणकीटणकी विगेरे बीजा स्थाने पण जे जैनगुफाओ छे तेमां दिगंबर संप्रदायना ज चिह्नो नजरे पडे छे.* आनुं

^{*} ब्राह्मणो अने बौद्धोना गुहामंदिरोनी अपेक्षा जैनगुहामंदिरो प्रमाणमां चणां ज थोडां जणायां छे. जैनगुहामंदिरोनों महोटो भाग दक्षिण हिन्दुस्थानमा-मुंबई इलाखामां ज आंवलो छे 'कव टेम्पलम् ऑफ इन्डीआ ' नामना उपयो में पुस्तकमां हिन्दुस्थाननां वधां गुहामंदिरोनुं सिवस्तर वर्णन आपवामां आव्युं छे. आना छेवटनां प्रकरणोमां जैनगुहामदिरो वावत पण स्वतन्न विवेचन करवामां आव्युं छे. तेमां जणाव्या प्रमाणे मुख्य मुख्य जैनगुहामंदिरो आटली जम्याए आवेलां छे:—दिश्वणमां बदामी पासे; करसा पासे; अवा अगर मोमीनावाद पासे; मेलापुरनी उत्तर बाजुए आवेला धारसिण्वा पासे; नासीवर्था थोडाक माइल दर आवेला चामरलेना पासे; बांदोरनी पासे मामेरगुहा; पीटलखोरा पासे; खानदेशमा अणकी पासे. आ शिवाय एहला अने गवालीअर पासे पण जैनगुहामंदिरो के कोरेला खडको आवेला छे. आ बधां गुहामंदिरो डॉ. फर्युसन अने बजेंसना मत प्रमाणे दिगंवर जैनसंप्रदायनां छे. जैनगुहामंदिरो, ब्राह्मणेदिरो, ब्राह्मणेदिरो, ब्राह्मणेदिरो, ब्राह्मणे अने बौद्धोना गुहामंदिरो करता उत्तरता अकारना अने

कारण ए ज होई शके के श्वेतांबर साधुओ वस्त्रधारी होवाश्वी तेओ घणा मागे जनसमाजना सहवासवाळा वास स्थानमां ज विशेष रहेता हता अने दिगंबर मुनिओ नमदशामां रहेता होवाथी तेमने निर्जन मदेशमां ज रहेवानी विशेष फरज पडती हती, तेथी तेमना रहेवा माटे तेवा प्रदेशोमां आवां लयनो—गुफामंदिरो बनाववानी आवश्यकता पडी होवी जोईए.

आ विषयमां एक वात अवश्य विचारवा जेवी छे अने ते ए छे के: — जैनशास्त्रोमां जे निर्मयोना आचारो बांधवामां आव्या छे तेमां एक एवे। पण नियम छे के साधुना माटे—खास साधुने उद्देशीने—बनावेला कोइ पण स्थानमां साधुए निवास न करवो जोइए अने जो साधु तेमां जाणतो छतो निवास करे तो तेने वसतिकर्मनो दोष लागे. आ नियम

तेमना म्होटो भाग सातमा सैकानी लगभगमा थयेलो छे, जनगुहामंदिरोमांथी ध्यान खेंचे तेवां अने कारीगरीनां दृष्टिए उत्तम जणायलां एवा फक्क वेज छे जे एरुलाना आधर्यकारक अने प्रतिद्ध गुहामंदिरीना महान् समृहमा रहेलां छे अने इन्द्रसभा अने जगनाथसभाना नाम ओळखाय छे. ' केव टेम्पल्स ऑफ इन्डांआ ' ना कर्ताओं नुं कथन छे के, ज्यारे बौद्धधर्मनी उतरती कळा थवा लागी त्यारे जनधर्म प्रकाशमां आववा लाग्यो अने बाद्धोनी देखादेखी जैनी पण पाछळथी पोताना तेवा गुहामंदिरी बनाववा लाग्या.. विगेरे. तेमनं आ कथन भूल भरेलुं छे. कारण के आ हाथीगुफाबाटा टेख अने तेना वर्णनथी स्पष्ट जणाय छे के जैनो पण शुरुआतथी ज आवां गुहामंदिरी बनावता आव्या छे. उदयगिरिनी आ गुहाओने उक्त प्रंथकर्ताओए बै।द्धर्मा गर्भ छे परंतु आ लेखना स्पष्टीकरणधी ते जैनधर्मनी छे एम उपर निश्चि तरेप कहेबाइ गयं है. जैन अने बौद्धधर्मनी केटर्राक समानताना लिघे आवी जातनी भान्तिमां घणो वधारो थयो छे. संभव छे के उपर जणाच्या शिवाय बीजां पण जैनगृहामंदिरो हरो परंतु तेमनामां कोइ विशेष चिह्न नहि जणावाथी ते बौद्धधर्मना ज मानी लेवामां आव्या होय. वीन्सेन्ट ए. स्मीथना कथन मुजब जेम जनरल कृति गहामे स्तूपमाश्रने बौद्धधर्मना मानी मथुरा विगरेना जैनस्तूपोने पण बौद्धस्तूप रुख्या छे, तेम आ गुहामंदिरोनी वाबत पण केम नहि बन्युं होय.

दिगंबर अने श्वेतांबर बंने शास्त्रोमां आपेलो है अने ते प्रमाणे केट-लीक रीते ते पळातो पण आज्यो छे. त्यारे हवे आ लेखो तरफ जोइए छीए तो नं. २ जानो जे लेख छे तेमां तो खास स्पष्ट लखवामां आव्युं छे के खारवेलनी पटराणीए कलिंगना निर्मेथ अमणोना निवास माटे आ लयन कराब्युं छे. ऐतिहासिक दृष्टिए आ वात अवश्य विचारवा जेवी छे. दिगंबर अने श्वेतांबर बंने संप्रदायना जैनग्रंथी जीतां जणाय छे के प्राचीनकालमां जैनमुनिओ घण। भागे निर्जन स्थानीमां ज बास करता हता. शीतकाळ अने उष्णकाळना समयमां तो तेओ वृक्षोना आश्रय नीचे रहीने पण पोताना संयमनो निर्नाह करी शकता होय पण वर्षा-काळमां तो तेम निर्वाह थइ शके निह अने तेटला माटे तेमने आवा पार्वेतीय स्थानोना आश्रयनी अपेक्षा अवस्य रहेती ज होवी जोइए. हवे आवा पार्वतीय स्थाना तो दरेक ठेकाणे कांइ नैसर्गिक रीते ज बनेका -हाथीगुफा जेवा-नहि होइ शके, ते तो कोइना ने कोइना बनावेलां ज म्होटे भागे होइ शके छे. अने आवां स्थाना केवळ श्रमणी-साधुओ शिवाय बीजा कोइने माटे बनाबवानी आवश्यकता होय नहि तेथी आवा स्थानोमां ज जो पूर्वे साधुओ वसता होय तो तो ते तेमना निमित्ते ज बनेटां होवां जोइए, अने तेमां ज साधुओ पोतानो संयम-निर्वाह करता होवा जोइए. तो पछी आवी स्थितिमां शास्त्रोक्त वसविद्रोषनो परिहार शी रीते थड़ शके छे ? विज्ञजनोए आ वात खास विचारवा जेवी छे.

५. आ लेख उपरथी छेझी जे विचारवा जेवी बाबत छे, ते मूर्ति-पूजा विषयक छे. जैन श्वेतांबर संप्रदायनी एक शाखा के जे 'स्थान-कवासी 'के ' ढुंढिआ ' ना नामथी ओळखाय छे, ते शाखाबाळा मृर्तिपूजानो स्वीकार नथी करता. तेमनुं कथन छे के जैनवर्ममां जे मूर्ति-

पुजा छे ते पाछळथी दाखल थइ छे. महावीर देवना निर्वाण बाद ८ मा के ९ मा सैकामां तेनी शरुआत थई छे. तेनी पहेलां जैनोमां तीर्थंकरोनी मूर्तिओ मानवानो के बनाववानो प्रचार न हतो. ए विषयमां बंने संपदा-योमां परस्पर अनेकवार क्केशजनक चर्चाओ थई छे. खारवेलना आ लेख उपरथी ए विवाद अस्त चर्चानी एकदम निकाल अने निर्णय अई शके छे. छेखमां आवेली हकीकत उपरथी स्पष्ट अने सत्य रीते जणाय छे के, ते बखते अने तेना पहेलां पण जैनोमां मूर्तिपूजा भचलित इती. आ लेखनी १२ मी पंक्तिना पाइला भाग उपरथी जणाय छे के " आदि तीर्थंकर ऋषमदेवनी मूर्ति नंदराजा उपाडी गयो हतो, ते पाटालिपुत्रथी राजगृह पाछी आणी जैन विजेताए नवा भव्य पासा दमां भारे उत्सव समारंभथी तेनी स्थापना करी. " (जुओ, प्रष्ठ ५८-५९, श्रीयुत के. इ. ध्रुवनुं विवेचन.) आ कथनथी असंदिग्धता-पूर्वक सिद्ध थाय छे के ई. स. पूर्वेना ३ जा सैकामां तेमज तेनी पण पहेलां जेनमूर्तिपूजा यथार्थ रीते पचलित इती. श्रीमान् ध्रुव महाशय ता. ८-२-१९१७ ना म्हारी उपरना एक खानगी पत्रमां आ बाबत खास विचारपूर्वक लखे छे के-

" लाखेलना लेखना एक महत्व धरावता भाग उपर आपनुं लक्ष न गयुं होय, तो हं ते तरफ दोरवा रजा लेंड छूं. एमां एक ठेकाणे राजगृहमांथी ऋषभदेव भगवाननी मूर्ति नंदराजा उपाडी गयानूं लख्यूं छे. आथी ईसवी सन पूर्वे चोथा सैकामां मूर्तिपूजा जैनोमां प्रचलित हती एम सिद्ध थाय छे. आ बाबतने पुष्यीमत्रना हितहास साथे प्रत्यक्ष संबंध न होवाथी में ते लक्ष खेंचाय तेवी रीते नोंधी नथी."

हुं धारुं छुं के आ विषयमां आना करतां वधारे सवल प्रमाण

कोई होइ शके नहि अने ते मांगवानी कोइ घृष्टता पण करे नहिं.
मूर्तिपूजा मानवी के न मानवी ए एक जुदी बाबत छे अने तेनो संबंध
तत्त्वज्ञाननी साथे विशेष छे, परंतु अमुक समय पहेलां जैनोमां मूर्तिपूजा
हती के न हती, ए अतिहासिक प्रश्ननुं तो निराकरण आ लेखयी
एकदम थइ जाय छे अने श्रमण-मगवान् श्रीमहावीरदेवना निर्वाबाद बीजा ज सैका जेवा पुराण कालमां पण मूर्तिपूजा प्रचलित होवानुं
सर्वमान्य प्रमाण आ लेखमां स्पष्ट जीवामां आवे छे.

उपसंहार.

उपोद्धातनो उपसंहार करतां जणाववुं जोइए के १७ पंक्ति जेवा आ न्हानकडा लेखनुं आटहुं लांबु पृंछडुं जोइ केटलाक वाचकाने तो आश्चर्य थरो अने केटलाकने कदाच कंटाळो पण आवे, परंतु जो तेओ ध्यानपूर्वक आ समम निबंधनुं अवलोकन करशे तो आशा छे के तेमने केटलीक अपूर्व वातो आमां जणाइ आवशे अने जैनधर्मना प्राचीन गौरवना संबंधमां तेमना ज्ञानमां कांइक वधारो ज थरो. जैनसमाजनो विशिष्ट भाग व्यापारी होवाथी स्वामाविक रीते ज तेमां केळवणीनी म्होटी न्यूनता छे अने तेमां वळी आवा इतिहास जेवा उंडा अने अरसिक विषयमां तो तेनो प्रवेश ज क्यांथी होइ शके, आवुं दिचारीने, लेखोक्त हकीकत बराबर अने सविस्तर समजाय तेटला माटे आटछुं लंबाण करवानी जहरत पडी छे.

ज्यारे आ लेखसंप्रहने छपाववानी शुरुवात करी हती स्यारे प्रथम बीजा जे आधुनिक संस्कृत लेखो छे तेमनो एक संप्रह करी प्रथम भाग तरीके बहार पाडवो अने पछी आ खंडगिरिना लेखो तथा मथुराना लेखोनो एकत्र संग्रह करी 'प्राकृतलेखविभाग'ना नामे बीजा भाग तरीके प्रसिद्ध करवानी विचार राख्यो हतो. परंतु बाछळथी हैट-लाक जनोना विचारथी तेम ज जैनलेखोमां आ लेखोनुं स्थान सौधी प्रथम होवाथी प्रथम भाग तरीके प्रथम एमने ज एकला प्रकट करवामा आज्या छे. बीजा भागमां मथुराना बधा लेखो आवशे अने त्रीजामां बाकीना बधा संस्कृत लेखोनो मंग्रह थशे.

अंतमां, आ छघु प्रयत्नमां म्हने श्रीमान् दे. रा. भांडारकर एम. ए. तथा श्रीयुत् के. ह. ध्रुव बी. ए. महाशयो तरफथी जे प्रत्यक्ष के परीक्ष रीते सहायता मळी छे तेना माटे हुं तेमने। अंतः करणपूर्वक आभार मानी विरमुं छुं.

श्रावणी पूर्णिमा. वालुकेश्वर, मुंबई.

मुनि जिनविजय.



परिश्विष्ट.

whiten

अविद्यातमां अनेक ठेकाणे संडिगिरिनी नवमुनि नामनी गुहामां आवेला उद्योतकेशिरना समयना तथा शुभचंद्र अने कुलचंद्र नामना जैनश्रमणोना उल्लेखवाळा लेखोनुं मूचन करवामां आव्युं छे. हालमां 'एपीश्राफीआ इन्हीका' ना सन १९२५ ना अक्टोबर मासना अंकमां मी आर. डी. बेनरजी एम. ए. नो लखेलो ' उदय-गिरि अने खंडिगिरिनी गुहामांना शिलालेखो ' ए शीर्षक एक लेख प्रकट थयो हो. ए लेखमां, हाथीगुहा लेख सिवाय, उक्त स्थळे आवेला बीजा बधा न्हाना न्हाना लेखो केटलीक नोटो साथे प्रकट करवामां आव्या छे. प लेखोमां उद्योतकेशिर संबंधी लेखोनो एण समावेश करवामां आव्यो छे. आ निबंध साथे ए लेखोनो खास संबंध होवाथी, मी. बेनरजीना वक्तव्य साथे आ परिशिष्टरपे अत्र आपवामां आवे छे.

नवमुनि गुहाभां उद्योतकेशरीनो शिलालेख.

ईस्वीसनना दशमा सैकानी लगभगमां एकज तारीखना लखा यला नवमुनि गुहामां वे शिलाबेखो छे. पहेलो लेख उद्योतकेशरिदेशना राज्यना अदारमा वर्षमां कोरेलो छे, अने ते कमानना अंदरना

[×] प्रस्तुत पुस्तकमां जे नं. २, ३ अने ४ ना लेखों छे ते पण मी. बेनरजीए किंचित् संशोधन साथे पुनः प्रकाशित कथी छे. बेनरजीना संशोधनमां काड विशेषता न द्वीताथी अत्र तेमनो उल्लेख करवो उचित धार्यो नथी.

भागमां नजरे पढे छे. ए छेस सौथी पहेलां महुंम मी. जे. डी. एम. बेगलरनी दृष्टिए पढ्यो हतो अने तेणे किनगहामना भाषांतर साथे प्रकट कर्यो हतो (Arch. Surv. Rep., Vol. XIII, P 85 Note) उद्योतकेशिरनो हजु सुधी जाणवामां आवेलो बीजो एक लांबो शिलालेख पिन्सेपे प्रकट कीथो छे (Journ. Beng. As Soc Vol VII, pp. 558 ff.) पण ते अत्यारे उपलब्ध धतो नथी. मी. मन-मोहन चकवर्तीए पण ए नवमुनिगुहाना लेखने वांचवानो प्रयत्न कर्यो हतो. ए त्रण पंकिनो छे अने स्पष्ट रीते कोरेलो छे.

मूल-लेख.

- 1 ओं श्रीमद् उद्योतकेश्वरिदेवस्य प्रवर्धमाने विजयराज्ये संवत १८
- श्रीआर्यसंघपतिबद्धग्रहकुलविनिग्गत देशीगण आचार्य-श्रीकुलचन्द्र-
- ³ भट्टारकस्य शिष्य सुभचन्द्रस्य ।

भाषांतरः — श्रीमद् उद्योतकेशिरदेवना वृद्धि पामता विजय राज्यना संवत् १८ मां श्रीआर्थसंघना प्रदक्तलमांथी निकळेला देशी-गणना भाचार्य कुलचन्द्र भट्टारकना शिष्य सुभचंद्रनी (कृति !).

नवमुनि गुहामां बीजो लेख.

आ लेख वे भागमां व्हेंचायलों छे, अने गुहानी अंदरनी वे ओरडीओ वचेनी भींत उपर कोरेलों छे. एनी लीपी उपरना लेख जेवी ज छे. एना वे भाग छे—पहेलों भाग अपूर्ण छे, कारण के एमां लखे छुं वाक्य अधुरुं छे.

^{&#}x27; श्रीधर छात्र ' एटले शिष्य श्रीधर.

बीजो भाग त्रण लीटीनो छे अने ते आ प्रमाणे छे:--

- 1 ओं श्रीआचार्य कुछचन्द्रस्य तस्य
- ² शिष्य खळ सुभचन्द्रस्य
- 3 छात्र विजो

भाषान्तरः — श्री आचार्य कुलचन्द्रना शिष्य खल्ल (१) सुभ-चंद्रना शिष्य विजो (विद्या अथवा विद्यनी कृति.)

ललितन्दु गुहामां उद्योतकेशरिनो बीजो लेख.

आ लिलेतेन्दु अथवा तो सिंहद्वारना नामथी ओळखाती गुहामां आवेलो शिलालेख ई. स. १९१३ ना ॲक्टोबर मिहनामां ' आर्किऑं लॉजीकल सर्वें'ना फोटोग्राफर मी. एस. गंगुलोए पथम शोधी काल्यो हतो. आ लेख गुहानी पाछळनी भींत उपर कोरेलो छे, अने गुहाना भोंयतळीयाथी लगभग त्रीश चाळीश फीट उंचे, दिगंबर जैनमूर्तिओना समूह उपर आवेलो छे. एनी बहु सारी संभाळ लेवायली लागती नथी. लेख पांचे पंक्तिमां कोतरेलो छे अने लीपी उपरना वे लेखो जेवी ज छे. लेखनी भाषा अशुद्ध संस्कृत छे.

मूल लेख.

- ¹ ओं श्रीउद्योतकेश्वरिविजयराज्य संवत् ५.
- ² श्रीकुमारपर्वत (1) स्थाने जीर्णवापि (2) जीर्ण इशाण (3)
- ³ उद्योतित (⁴) तस्मिन् स्थाने चतुर्विं शति तीर्थ [ङ्]कर
- 4 स्थापित प्रतिष्ठा[का] छे इ[रि] ओप (5) जसनन्दिक
- 5 क्रा (१) दा (१) ति(१)द्रथा(१)श्रीपार्श्वनाथस्य कर्मखयः

टिप्पण.

(1) बीजी लाइन उपरथी जणाय छे के खंडगिरिनुं प्राचीन नाम 'कुमार पर्वत ' छे. खारवेलनो हाथीगुहालेख उदयगिरिनुं भाषीन नाम ' कुमारी पर्वत ' सूचवे छे. ते बंने टेकरीओ ई. स. ना दशमा अगियारमा सैका सुर्धा ' कुमार—कुमारी पर्वत ' तरीके जाणीती होय एम लागे छे.

- (2) 'वापि 'शब्द टेक्सी उपरना खडकीमां कोरी काढेलां न्हानां न्हानां संख्याबंध कुंडोने सूचवे छे.
- (3) बीजी पंक्तिनो छेली शब्द 'इसण' अथवा तो 'ईशान ' लागे छे. आ शब्द विक्रम संवत् १०८३ मां थयेल महीपालना सार-नाथना शिलालेखनां जीवामां आने छे. आ शिवना अनेक नामोमानुं एक नाम छै, एम डॉ. बॉगेल कहे छे; (Arch. surv. of India, Annual Report, 1905-6, P 98, Note I.) पण उपरोक्त शिला-लेखमां तेनो संबंध-अर्थ तथा उपयोग विचारतां ते शब्दनी अर्थ मंदिर थतो होय तेम लागे छे.
- (4) ' उद्योतित ' शब्दनो साधारण अर्थ प्रकाशित थाय छे. पण अहिं तीर्थेकरनां भादिरो अने कुवाओ सुधारवामां –स्मराववामां आव्या हता एवं सूचन आ शब्दथी थाय छे.
- (5) चोथी पंक्तिनो छेलो भाग अने पांचमी पंक्तिना प्रारंभना शब्दो बील्कुल समजाता नथी.

भाषान्तर.

प्राकृतलेखिभाग।

~~{}~~{}~~

*कटक नजीक आवेळी उदयगिरिनी टेकरी उपरना हाथीगुफा तथा बीजा त्रण छेखो ।

-10/2000

होकिना वस्तत पर्छा पूर्व हिंदुस्ताननो इतिहास तथा तेनी भाषा विषे माहिति मेळववामां हाथीगुम्फा लेख घणोज उपयोगी छे. प्रथम तेने इ. स. १८३० मां मी. स्टलींगे (Starling) कर्नल मेकेन्झी

(Mackerzie) नी बनावेली अपूर्ण नकल उपस्थी प्रकाशित कर्यो.+ मेजर कीट्ट (Kittoe) ए इ. स. १८३७ मा नजरे जोइने तेनी नकल करी, अने आ नकल उपस्थी प्रीन्सेपे (Prinsep) भाषांतर सह

^{*} Actes Du Sixieme Congres International Des Orientalistes, tenu en 1885 a Leide. नामना पुस्तकना ३ भागमां (पृष्ट १३३ थी १७९ सुधीमां) प्रव्यात विद्वान् पिडत भगवानलाल इंद्रजीना THI HATHIGUMPHA AND THREE INSCRIPTONS, IN THE UDAYAGIRI CAVES NEAR CUTTACK नामना इंग्रेजी निबंधनी आ संपर्ण गुजराती अनुवाद छे—संग्राहक.

⁺ एशियाटीक रीसचींस, पु. १५. (Asiatic Reserches, XV.)

प्रसिद्ध कर्यों. ते वखते आ विषयनो प्रारंभज हतो तेथी प्रथमना भाषां-तरमां केटलीक चूको थइ होय तो तेमां कांइ आश्चर्य पामवा जेवुं नथी. पण जाणवा जेवुं मात्र ए छे के जे राजाना वखतमां आ लेख थएलो छे ते राजानुं नाम भीन्सेप वांची शक्या नहि अने हजु पण आ भूल कोइए सुधारी नथी.

इ. स. १८७७ मां जनरल कनींगहामे (General Cunning-ham) कारपस इंडीस्कीट्स्यॉनम इंडीकरम (Corpus Inscriptionum Indicarum) ना पु. १ मां आ लेखनी नकल आपी छे, पण मेजर कीट्टनी नकल करतां आ नकलथी कांइ वधारे फायदो थाय तेम नथी. त्यारबाद डॉक्टर राजेंद्रलाल मीत्रे पोताना 'ॲन्टीक्वीटीझ ऑफ ओरिस्सा 'नामक पुस्तकमां तेनुं भाषांतर बहार पाड्युं. आ भाषांतर विषे धणी आशाओ राखवामां आवी हती; पण कांइ अजवाछ पाडवाने बदले ते भाषांतरथी गुंचवाडो वध्यो आ पुस्तक साथे जे नकल आपवामां आवी छे ते इ. स. १८६६ मां डॉक्टर भाउ दाजीने माटे में जाते प्रत्यक्ष जोइने तैयार करेली नकल उपरथी तथा कलकत्ता स्कुल ऑफ आर्ट्सना मी. लांके (Locke) जे टलास्टर फोटो-प्राफ लीधेलो अने जे जनरल कनींगहामे मारा तरफ मोकली आप्यो ते उपरथी तैयार करेली छे.

आ लेखनुं नाम, जे गुहा उपर ते कोतरेलो छे ते गुहाना नाम उपरथी पडेढुं छे. त्यांनी जमीन उपर पडेला केटलाक मांगेला कटका उपरथी एम जणाय छे के आ गुहा कोइ वस्तते मांगेली हशे अने त्यारबाद तेनो पुनरुद्धार करी फरी बंधाववामां आवी हशे. हाथीगुम्फा ए नाम शा कारणथी पड्युं हशे ते जाणवुं अशक्य छे. कदाच एम होइ शके के आ गुहानी आगळ जे खडक आवेलो छे तेना उपर हाथीनी आकृति कोतरेली होय.§

आ लेख शिला उपर कोतरेलो छे. आ शिला सपाट नहीं होतां अंदर खाडापडती छे. छेख १७ लीटीमां होई ८४ चोरसफुटमां छे. आ शिला उपर लेख कोतरवा माटे सपाटी साफ करेली होय तेम लागतुं नथी पण अक्षरो मोटा अने उंडा कोतरेला छे. समयनी असर आना उपर पण थएली छे. प्रथमनी छ लीटीओ सारी स्थितिमां छे. अने छेली चार पंक्तिओ मध्यम अवस्थामां छे. आ बेनी वचेनी जमीन घणीज खराब थइ गइ छे. केटलोक भाग तहन घसाइ गयो छे अने केटलेक ठेकाणे छूटा अक्षरो के अक्षरसमूहों नजरे पडे छे. खास करीने आ लेखनो डाबो भाग बहुज जीणे थइ गयो छे अने ते तरफना छेला अक्षरो बिलकुल जता रह्या छे.

आ लेखनी बन्ने बाजुए बब्बे चिह्नो आपेलां छे. (जुओ एलेट १ ो). एक चिह्न लेखनी पहेली वे लीटीओनी डाबी बाजुए छे; अने बीजुं चिह्न एज बाजुए पांचमी अने छट्टी लीटीनी शरुआतमां छे. त्रीजुं चिह्न लेखनी जमणी बाजुए पहेली अने बीजी लीटीना छेडे छे, अने बोधुं चिह्न सत्तरमी लीटीना अंतमां छे अने अहीं लेखनी समाप्ति थाय छे. प्रथमनां त्रण चिह्नो पश्चिम हिंदना गुहालेखो उपर जोवामां आवे छे. दाखला तरीके पहेलुं चिह्न जुन्नर (Junnar) ना बीजा लेखमां, कार्ले (Karle) ना पहेला तथा माजा (Bhaja) ना

[्]र मुंबइनी साम आवेला हाथीबेटनुं नाम पथ्यरमा कोतरेली एक मोटी आकृति उपरथी पडेलुं छे. आना कटका विक्टोरिआ म्युझिअममां छे. $P,\,P.\,$

[ं] आ प्लेटो मूल पुस्तकमां आपेली छ । अत्र आपी शकाणी नथी --संग्राहक.

त्रीजा लेखमां वपरायलुं छे. केटलीक उदयगिरिनी गुफाओना द्वारनी कमानो उपरनां कोतरकामो उपर पण ते काढेलुं छे.

जुनागढनी एक गुहाना द्वार उपर शुभ शकुनवाळी घणी चीजो काढेळी छे. स्वस्तिक, दर्पण, कलश, घडीआळनी शीशी जेवी नेत-रनी खुरशी, भद्रासन, ने नानां मत्स्यो, फुलनी एक माळा, अने आंकडो-आ बधामां आ चिह्न जोवामां आवे छे सांचीना तोरण उप-रनी त्रीजी आकृति उपर पण ए आवे छुं छे. तेमज गळानां घरेणांमां पण ते घणी्वार जोवामां आवे छे.

आ चिह्ननो अर्थ शो छे ते जणातुं नथी. पण जाणवुं जोइए के पहेलांना बौद्धो आ चिह्नने सारुं गणता हता. त्यार पछीना बौद्धो तेम गणता होय एम लागतुं नथी. कारणके इलुरा, अजन्टा, नाशिक अने कान्होरिमांनां बौद्ध कामो उपर ते जोवामां आवतुं नथी.

बीजुं चिह्न 'स्वस्तिक ' छे जेने विजयदर्शक गणवामा आवे छे अने जेनो अर्थ संस्कृत लेखोमां प्रथम वपराता 'स्वस्ति ' शब्दना जेवोज छे. आ चिह्न दुनियाना घणा भाग उपर वपराय छे अने एना अर्थ विषे विद्वानोना घणा जुदा जुदा मतो छे. तेनो गमे ते अर्थ थतो होय पण एटछं तो नकी के जुदा जुदा धर्मना लोकोए ते वापरेखं छे तेथी एम धारी शकाय के ए लोको पोतपोतानां कारणोने लीधे तेने शुभ गणे छे.

⁹ आर्काऑर्जाकल सर्व्हें ऑफ वस्टर्न इंडिआ, सॅपरेट पेम्फलेट १०, पृ. २३, २८, ४२.

२ नुमीस्मेटीक क्रॉनीकल, न्यु सीरीझ पु. २०, पृ. १८-४८; इंडीअन ॲन्टी क्वेरी, पु. ९; पृ. ६५, ६७, १३५; इंडीअन ॲन्टी क्वेरी, पु. १०, पृ. १९९; कनींगहामनी भील्सा टोप्स, ३५६ नोट.

सौथी पहेलां आवां चिह्ना अशोकना जौगड (Jaugada) लेख उपर जोवामां आवे छे ज्यां त्रीजुं चिन्ह पण जोडेलुं छे. त्यारबाद केटलीक पश्चिम हिंदुस्ताननी गुहाना लेखोमां ए दृष्टिगोचर थाय छे. केटलीक वखते ते आरंभमां के, अंतमां अगर बन्ने ठेकाणे पण जोवामां आवे छे आ चिह्न हुज पण हिंदु तेमज जैनोमां शुभ गणाय छे अने उम प्रसंगे अगर एवा बीजा कोई द्वाम प्रसंगे कपडां, बासण तथा फळो उपर काढवामा आवे छे. नाना बाळकोने प्रथम मुंडन कराज्या प़छी माथा उपर आ चिन्ह कुंकुमथी काढवामां आवे छे. लग्न थया पछी पहेला शुभ दीवसे गुजरान तथा कच्छना लोको जमीन उपर रातुं वर्तल दोरे छ अने तेमा स्वस्तिक चिन्ह काढे छे तेने "घौरी स्वस्तिक" कहे छे. गायना छाण्या छीपेछी जमीन उपर कुलदेव बेसाडीने तेमनी आगळ आ चिन्ह काढे छे जेने "साथाओ" कहे छे. आ शब्द संस्कृत 'स्वस्तिक' ना प्राकृत 'सांत्थओ' उपरथी थयो छे. हालना जैनो पण एने 'साथीओ' कहे छे. तेओनो मत एवो छे के सातमा तीर्थंकर सपार्थ-नाथनुं ए लांछन छे, तेमज जैनोना आठ शुम लाछनोमांनो प्रथम ए छे. खरतरगच्छन। एक विद्वार यति प्रेमचंद्रना कहेवा प्रमाणे जैनो तेने सिद्धनी आकृति तरीके गणे छे. जैनी धारे छे के दरेक प्राणी एक जन्ममां करेलां पोतानां मानसकर्भो प्रमाणे बीजा जन्ममां चारमांथी एक स्थितिने पामे छे. ते देव थाय छे, अगर नर्के जाय छे; अगर क्षद्र प्राणीओमां या मनुष्य जातिमां जन्म ले छे. पण सिद्धने आमानुं कांइ पण थतुं नथी, कारण

⁹ जुन्नर लेखांमा शरुआतमा ५, ६, २०, ३२, ३४; कार्ले लेखांमा ३, अने जुन्नर लेखांमा २२, २९ अने ३१, ३३: आरंभ अने अंत-कार्ले लेख २ अने जुन्नर लेखां १८ ने ३०.

२ आ शब्द 'गोमयलिप्तस्वस्तिक संस्कृत शब्द उपर्या थएलो छे तेनो भर्थ 'जमीन उपर लीपेलो स्वस्तिक 'थाय छे.

के आ चार अवस्थानुं मुख्य कारण जे कर्म छे ते तेमने लागता नथी अने तेथी ते मुक्तात्मा कहेवाय छे. स्वस्तिकमां आप्रमाणे सिद्धनी आकृति समाएली छे. जे मध्यिबंदुमांथी चार रस्ता नीकळे छे ते जीव छे अने जे चार रस्ता छे ते जींदगीनी चार अवस्था छे. पण सिद्ध आ चार अवस्थाथी मुक्त होवाथी चारे रस्ताओंने पछीथी जे वाळेला छे ते एम जणावे छे के आ चार अवस्था तेमने माटे नथी. हुं एम नथी कि हेतो के आ ए स्वस्तिकनुं मूळ छे. बौद्धों के जेमनां धर्मतत्त्वों जैनोनां जेवांज छे ते पण स्वस्तिकनों आवों अर्थ करता होय ए शक्य छे. जो एम होय ती बौद्ध लेखोना आरंभमां सिद्धम् शब्द वपराय छे तेने बदले आ स्वस्तिक पण वपराय छे. दाखला तरीके, उपवदातना नाशिकना नं. १० ना लेखमा आ स्वस्तिक सिद्धम् शब्दनी पछी तरतज मूकेलों छे, आवी रीते वपरायाथी जैनोना आवा अर्थने पृष्टि मळे छे.

त्रीजुं चिह्न अशाकना जौगड लेखमांना () विह्नना जेवुं छे. ए तारस (Taurus) ना प्रीक चिह्नना जेवुं छे. पहेला बे चिह्नोनी माफक आ चिह्न लेखोना आरंभमां तथा अंतमां तथा कोइक वखत शोभाने माटे जुदाज आकारमां जोवामां आवे छे. बौद्ध लेखो उपरथी एम जणाय छे के पहला बे चिह्नो करतां आ चिह्न विषे तेमनी मान्यता ओछी होय तेम जणातुं नथी. सांची लेखोमां बोधीवृक्षनी नीचे वेदि उपर ते मुके छं छे. जो ते पूजनीय न होय तो ते आवी जग्याए होइ शके नहि. वळी आ चिह्न घरेणांमां तथा जुना बौद्ध सिक्नाओमां पण जोवामां आवे छे. कान्हेरी नजीक पदण टेकरी उपर बीजां चिह्नोमां आ

[†] मूल पुस्तकमां आ तथा हवे पछी आवनारी दरेक आकृतिओ आपेली छे परंतु अत्रे जे आपी शकाणी नथी तेना ठेकाणे () आवा कोसमां जग्या खाली राखेली छे.—संग्राहक।

चिह्न पण 'निन्दिपदम् ' एवा नाम साथे जोवामां आवे छे;' जे उप-रथी जणाय छे के बौद्धो तेने ' वृषभ-छांछन ' कहे छे. वैदिक धर्ममां वृषभने पवित्र गणेलो छे; अने जो आवोज मत बौद्धोमां प्रचलित होय तो तेमणे पण तेने पवित्र गणेलो होवो जोइए.

चोशुं चिह्न वेदि अगर बेटक उपर मोनोग्राम (Monogram) जेवुं लागे छे (y+t+e?). उदयगिरिनी ज्याग्न गुहामांना एक लेखना आरंभमां आवुं चिह्न छे. फेर मात्र एटलोज छे के ज्यारे आमां कापा डाबी बाजुए छे त्यारे ज्याग्रगुहाना चिह्नमां जमणी बाजुए छे. उदयगिरिनी वैकुंट गुहामां एक चिह्न छे जेमां अने आमां फेर एटले। छे के एमां नीचे वेदि नथी तथा डाबी बाजुए बे बापाने बदले बन्ने बाजुए एक एक छे. एक बौद्ध सिक्कामां पण आ चिह्नना जेवुं एक चिह्न छे.

जे लिपिमां आ लेख लखेलों छे ते लिपि अशोकथी अर्थाचीन छे अने पश्चिम हिंदना नानाघाट लेखनी लिपिने मळती छे. अशोकना वखतनी लिपि अने आ लिपिमां मुख्य फेर ए छे के ज्यारे अशोकना वखतना क ने आडी तथा उभी लीटीओं सरखी छे (+) त्यारे अहींआ आडी करता उभी लीटी लाबी छे (¹); ते वखतनों ग खुणा पडतों (△) हतो त्यारे हालनों कमान जेवो (⋂); ते वखतनों घ (1,), प (1,), लां लेचेना भागों गोळाकार हता अने हालमां सपाट छे (山, 1, -1, 1, 1,), म (४) अने व (1) नी नीचेना आकारों बराबर गोळ हता त्यारे हाल त्रिकोणाकारे छे (¹);

१ जर्नल बॉम्बे बॅन्च रॉयल एशियाधीक सोसाइटी, पु. १५, पृ. ३२०.

२ बील्सन्स भेरीआना ॲन्टीका, प्लेट १५, आकृति ३२.

त नां नीचेनां ने पांखडां खुणावाळां हतां (人) अने हाल ते गोळा-कार छे (八). ते वखते इकारना पांखडां खुणाकारे हतां (), हाल ते प्रमाणे नहि होतां ते उंचां जाय छे (). आ प्रमाणे कारणो छे ते उपरथी आ छिपि अशोकथी अर्वाचीन छे एम प्रतिपादन थाय छे.

आ आखो लेख गद्यमां छे. तेनी भाषा प्राक्तत छे अने अशोकनां लाट लेखोथी भिन्न छे पण पश्चिम हिंदना गुहा लेखोनी जुनी महाराष्ट्री प्राकृतना जेवी छे.

अपूरंभमां अहती अने सिद्धोने नमस्कार कर्यों छे. अने आ उपरथी केख बनावनारनी उंडी धार्भिक श्रद्धा आपणने जणाइ आवे छे. जैनोना मुख्य सूत्रनो ए माग होय तेम जणाय छे जेने 'नमोक्कार' अगर 'नोकार' कहेवामां आवे छे अने जेनो वारंवार तेओ जप करे छे तथा जे तेमनां सूत्रोनां आरंभमां घणीवार जोवामां आवे छे. 'ते सूत्र अने आ नमस्कारमां फेर ए छे के आमां फकत अहत 'अने' सिद्धनाज - बेनांज नाम आवे छे, त्योर मृत्रमां 'आचार्य', 'उपाध्याय', अने 'साधु' ए त्रण नामो वधारे छे. छेखमां आ नामो मृकी दीधां छे तेनुं कारण ए छे के पहेला बेनी पेठे आ त्रण बहु जरुरनां नथी. आ छेखना नमस्कारनी समजुती विपेनी पुष्टिमां जाणवुं जोइए के उदयागिरिनी माणेकपुर गुहाना ३ जा छेखमां एम कहेलुं छे के ए गुहा '' किलगा श्रमणो अर्हन्त प्रसादानम् '' ने माटे बनाववामा आवी छे. अर्हन्तो उपर आ प्रमाणे धार्भिक श्रद्धा राखवी ए जैनोनी खासीयत छे. आ गुहाओमां कोई पण ठेकाणे शाक्य-भिक्ष अगर एवो बौद्ध शब्द खास करीने वापरेलो नथी.

१ सूत्र आवा छे: — नमं अरिहंताणं। नमो सिद्धाणं। नमो आय-रियाणं। नमो उवज्झायाणं। नमो छोए सञ्बसादुणं। तेनो अर्थ: – अर्६-न्तोने नमस्कार, सिद्धोने, आचार्योने, उपाध्यायोने, अने विश्वना साधुओने नमस्कार.

उदयगिरिनी गुहाओनां कोतरकामोमां एवं कांइ खास नथी के जेथी आपणे नकी करी शकीए के ए जैन अगर बौद्ध गुहाओं छे. गुहाओमां एके जुनी प्रतिमा नथी. कोतरकामीनी पूजनीय वस्तुओमां मात्र वृक्षो छे तथा माणेकपुर गुहामाना नीचेना भागमां जे भांगेला ' स्तूप' जेवुं लागे छे तेनी आगळ नमस्कार करती माणसोनी आक्न-तिओ छे. वळी आ गुहाओनी टेकरीनी टोचे एक जुना 'स्तूप'नो पायो छे अने आ स्तूपनी आजुवाजुना कठेराना सळीआनां छिद्रो हजु पण जोवामां आवे छे. परंतु आ उपरथीज मात्र आपणा प्रश्ननो जवाब नीकळी शके नहि: कारण के शरुआतनो जैनधर्म बौद्धधर्म जेवोज हतो जेथी वृक्ष तथा स्तूपोनी पूजा तेमनामां भित्र नथी; ज्यां ज्यां महावीर गया ते ते गामना पादरना झाड तळे बेठेला महावीरनां वर्णनो केटलांक सूत्रोमां छे. बौद्धोनी पेटे जैनतीर्थंकरोने पोतपातानुं बोधिवृक्ष छे. महावीरनुं बोधिवृक्ष वड छे अने उदयगिरिनी जयविजय गुहामां कोतरेखं बोधिवृक्ष पण वड छे. हाल पण जैनो शत्रुंजय टेकरी उपर रायण वृक्षनी पूजा करे छे, (मिमुसोप्स कौकी (Mimusops kauki;) संस्कृत-राजातन अगर राजादन, पाली-राजायतन) ने ऋषभदेवनुं बोधिद्रुम छे अने गिरनार उपर बावीसमा तीर्थंकर नेमिनाथनुं बोधिद्रुम आंबो छे के जेनी पण तेओ पूजा करे छे.

स्तृप-पूजा पहेलांना जैनोमां पण प्रचलित हती. मथुरामांथी मने मळेला एक लेखवाळा कोतरकामनी वच्चे एक स्तृप छे. तेनी आजु-बाजुए कठेरो छे. तेने एक द्वार छे अने स्तृप उपरज कोतरेली वे कठेरानी हारो छे; एक मध्यमां गोळ तथा बीजी जरा उंचे छे. स्तूपनी बंन्ने

अंन्टीक्बीटीझ ऑफ ओरीस्सा पु. २, प्लेट १९, आकृति १. लेखक,
 डाक्टर राजेन्द्रलाल मित्रः

बाजुए एक नाचती स्त्री छे अने आ स्त्रीनी पेठीपार एक स्तंभ छे. जमणी बाजुना स्तंभने सिंह छे अने डाबी बाजुना स्तंभ उपर 'धर्मचक ' काढे छें छे. उंचे साधुओं तथा स्तृप तरफ दोडता आवता होय तेवा किंत्ररों छे. किंत्ररोंने स्वांटावाळुं शरीर तथा मनुष्यना जेवुं मुख छे तथा दिगम्बर जैनोनी माफक आ साधुओं नम्न छे.

आ स्तूप आकारमां तथा देखावमां हजु सुधी मळेलां बौद्ध स्तूपोने एटछं बधुं मळतुं आवे छे के जो आ लेख न होत तो तेने बौद्ध स्तूप तरीकेज गणवामां आवत. बे कठेरानी हारोनी वचेनो छ लीटीओ वाळो लेख जैनोनो छे एम स्पष्टज छे. लेखना अक्षरो इ. स. पूर्वे ५० ना होय तेम लागे छे; भाषा प्राकृत छे, सरल नथी.

लेखनी नकल.

- (१) नमो अरहतो वधमानस दंदाये गणिका
- (२) ये लेणशोभिकाये धितु शमणस निकाये
- (३) नादाये गणिकाये वासये आरइतादेवकुछे
- (४) आयगसभाप्रपाशिलापटा प्रतिस्टापितं निगमा
- (५) ना अरहतायतने सह मातरे भगिनिये धितरे पुत्रेण
- (६) सविन च परिजनेन अरहतपुजाये

(आ लेखनुं संस्कृत भाषांतरः)

- (१) नमोईते वर्धमानाय दण्डाया गणिका
- (२) या ळयनशोभियज्या दुहितुः श्रमणस्य निकाये
- (३) नादाया गणिकाया वासाय अईतो देवकुछे
- (४) आर्यकसभा प्रपा शिलापटः प्रतिष्ठापितः नैगमा
- (५) नां अईतायतने सह मात्रा भगिन्या दुहित्रा पुत्रेण
- (६) सर्वेण च परिजनेन अईतपूजायै

गुजराती भाषांतर.

अर्हन्त वर्द्धमानने नमस्कार. गणिका दंडानी पुत्री गणिका नन्दाए वेपारीओना आर्हतदेवालयमां श्रमणैसमूहने रहेवा माटे तथा अर्हन्तनी पूजा माटे एक नानुं आर्हत—देवालय, आचार्यो माटे बेठको, एक होज (पाणीनो) अने एक शिल्लापट्ट, (देवालयनुं पुण्य) मा, ब्हेन, पुत्री, पुत्र, अने सगांओ साथे (भोगववाने) कराव्यां.

वर्द्धमान अर्हन्त २४ मा तीर्थंकर महावीर छे. बौद्धोनी पेठे जैनो पण तीर्थंकरोना हाडकां विगरेने पूजता हता. तेमना मंथोमां केटलेक ठेकाणे कहे छुं छे के मृत्युवश थया पछी तीर्थंकरोना शरीरने अभिसंस्कार देवो आपे छे तथा तेमना हाडकां विगेरेने तेओ पृजामाटे स्वर्गमां लइ जाय छे. हालनां जैनदेवालयोमां स्तृप अगर तीर्थंकरोनां हाडकांनी पूजा जोवामां भावती नथी; पण बेशक एटछुं तो नक्की के आ प्रमाणे एक वखत हतुं अने ते एटले सुधी के तेरमा सैकामां मथुरामां जैनो एक स्तूपने तीर्थंकर सुपार्थनुं स्तूप छे एम गणीने पूजता हताँ. हालमां खरतरगच्छना जैन साधुओं 'थापना 'नामनो पांच दांतवाळो एक चंदननो प्यालो पूजा माटे वापरे छे अने आ तीर्थंकरोनां जडबांनी नकल छे. तेज प्रमाणे साध्वीओं जे शंखने थापना तरीके पूजामां वापरे छे तेने तेओ महावीर स्वामीना घुंटणनुं हाडकुं गणे छे.*

९ मूळमां 'आयतन ' शब्द छे जेनी अर्थ मोटुं देवालय थाय छे. गणिकानुं देवालय मोटा देवालयनी पासे बाध्युं हशे अने ते नानुं हशे.

२ मूळमां 'निकाये 'छे. पण जो 'निकायस 'न वांचवामां आवे तो लेखनो सारो अर्थ नीकळी शकतो नथी.

३ जुओ--जिनप्रभसूरीनुं (विविध) 'तीर्थकल्प '.

^{*} हालमां, तपागच्छमा जे स्थापनाचार्य रखाय छे तेने उद्देशीने आ उन्नेख छे,

आ उपरथी प्रतिपादन थाय छे के स्तूपनी तथा दृक्षनी पूजा पहेलां जैनोमां प्रचलित हती. उदयगिरिनी गुहाओमां बौद्धोनी एके प्रतिमा नथी तेमज अर्वाचीन बौद्धोए पश्चिम हिंदनी बौद्ध गुहाओमां बेसाडेली प्रतिमाओमांनी पण एके नथी. उलडुं, केटलीक अर्वाचीन गुहाओमां तीर्थंकरोनी जैनप्रतिमा तथा यक्ष अने देवोनी प्रतिमाओ कोतरेली छे अने उदयगिरिनो बीजो भाग जेने खंडगिरि कहे छे तेना उपर हजु पण दिगम्बर जैनोनां देवालयो छे. आ सर्व उपरथी एम जणाय छे के तेनो बौद्धधर्म करतां जैनधर्म साथे वधारे संबंध छे

अर्हन्तो तथा सिद्धोने नमस्कार कर्या बाद लेखमां खारवेल राजानो जन्मथी मांडीने ३८ वर्ष सुधीनो वृत्तांत आपेलो छे. तेने चेत अगर चैत्रराजवंशनो विस्तार करनार कहेवामां आव्यो छे; अने आ विशे पण ते आ वंशनो छे एटलुं जणाववा माटे ज मात्र वापरवामां आव्ये छे. तेथी एम स्पष्ट रीते अनुमान थइ शके के खारवेल राजा चैत्रवंशनो हतो. आ राजाना बीजां विशेषणों 'वेर' 'महाराज' अने 'महा मेघवाहन' तथा 'किंगाधिपति' छे. 'वेर' नो शो अर्थ छे ए संतोषकारक रीते समजावी शकाय तेम नथी; पण हुं धारुं छे के तेने बदले 'वीर' जोईए. महाराज शब्द मात्र तेनी मोटाइ दर्शाववानेज वापरवामां आव्यो छे 'महामेघवाहन' नो अर्थ 'जेनुं वाहन मोटो मेघ छे, एवो छे. जे उपरथी एम जणाय छे के एना राज्यना जे हाथीओ उपर आ राजा बेसतो तेमनुं नाम 'महामेघ 'हशे. 'किंगाधिपति ' उप-

परंतु आना विषयमां पंडितजीनी जे कल्पना छे ते वास्तविक छे के केम ते खास विचारवा जेवी छे. कल्पना रमणीय छे.—संशाहक.

२ सरखावो — जनररु कर्नीगहामनुं, क्षाव्याओ० सर्व्हें० पु १३, पृ. ८४ तथा कॉरपस इंस्किप्यानम इंडीकॅरम, ^{पृ}. २७.

रथी एम मृचित थाय छे के ते किंछगनी राजा हतो. राज्यगादी उपर बेठा पहेलानां तेनां चोबीस वर्षनो हेवाल आ प्रमाणे छे. प्रथमनां पंदर वर्षी रमत गमतमां गयां; बाकीनां नव वर्षमां ते लखवानुं, चित्रकाम, हिसाब अने कायदाकानुनो शीख्यो तथा युवराजपद भोगवतो हतो. आ उपरथी एम जणाय छे के युवराजनी स्थितिमांज तेणे आ अभ्यास कर्यो. ज्यारे ते चोवीस वर्षनो थयो त्यारे ते तख्तनशीन थयो त्यारबाद बीजां १३ वर्षमां तेणे करेलां उपयोगी कामो विषे लेखमां वर्णन आवे छे:—

प्रथम वर्षमां तेणे दरवाजा, किल्लो तथा महेलो जे जीणे थयां हतां ते तथा किल्ग शहर तेमज तेने फरतो कोट समराव्यो. तेणे पाणीना होज तथा कुवा बंधाव्या, बधी जातनां वाहनं। राख्यां अने तेना नगरमां ३५०,००० माणसो हतां.

बीजा वर्षमां (राजा) सातकनी (सं. शातकणी) ए तेना (खार-वेलना हुमला) थी पश्चिम भागने बचाववा माटे (खंडणी तरीके) घोडा, हाथीओ, माणसो, रथ तथा पुष्कळ धन मोकल्युं. तेज वर्षमां तेणे मसीक (१) शहेर कुसुम्ब (१) क्षत्रीओनी मददथी लीधुं.

त्रीजा वर्षमां ते गीत विद्या शिख्यो अने नाच, गायन, अने वार्जीत्रो तथा आनंदोत्सवोथी लोकोने तेणे आनंद पमाड्यो.

१ आ घणी मोटी संख्या छे. आ मात्र अनुमान इशे, कारणके ते वखतमां सेन्सस नहोती. मात्र तेनो अर्थ एमज छे के शहेर घणुं भन्य हतुं.

२ आ लेखना अक्षरी नानाघाट लेखना अक्षरी जेवा है तथी हुं धार्र हुं के आ सातकनी ते कदाच नानाघाट बावलामांना चोशा बावलानो श्री सातकनी होय. सरखावो-वॉम्बे गेझेटीअर, पु. १६, नार्शाक गुहा उपरनी टीका.

चोथा वर्षनो हेवाल तुटी गयो छे अने संबंध पण बेसतो नथी. एटलुं तो जाणी शकाय छे के धर्मकूट टेकरी उपरनुं एक जुनुं चैत्य तेणे समरान्युं अने तेमां छत्र तथा कलशो आणी आप्या अने तेनी पूजा करी. ते कहे छे के राष्ट्रीक अने भोजक, तेना खंडीआ राजा-ओमांना त्रिरत्नमां श्रद्धा उत्पन्न करवा माटे तेणे आ प्रमाणे कर्युं हतुं.

पांचमुं वर्ष दाननुं छे. आ वर्षमां तेणे नन्दराजनो त्रिवार्षिक सत्र पुनः शरु कर्यो अने पाणीनी सवड कर्यानुं देखाय छे. (Water Works Scheme.) पण आ भाग भांगी गयो छे तेथी अर्थ शंकायुक्त छे.

छट्टा वर्षनो अहेवाल घणो खरो जतो रह्यो छे पण आ वर्षमां तेणे लोकोपयोगी लाखो कामो कर्यानुं जणाय छे.

सातमा वर्षनो हेवाल बधो जतो रह्यो छे.

जे आठमा वर्षनो हेवाल छे ते ऐतिहासिक दृष्टीथी घणो उप-योगी छे. परंतु तेनो एक भाग जतो रह्यो छे ए शोकनी वात छे. आ वर्षमां एक राजा जेणे बीजा राजाने मारी नांख्यो हतो अने जे राजगृहन राजाने दु:ख आपतो हतो, ते खारवेलना पाछळ पडवाथी तथा खारवेलना लष्करना मोटा अवाजथी मथुरामां नासी गयानुं कहेवामां आब्युं छे. आ राजाओं कोण हता ते भांगेला भागमां जतुं रह्युं छे.

⁹ आ लेखमां आधी कांइ वधारे होय तेम लागे छे. (जोके स्पष्ट नथी क ा रणके ए भाग केटलीक जम्याए खंडित थएलो छे.) ते ए छे के कलिंगना पहे लांगा राजाओं ने आ चैत्य साथे कोई जातनो संबंध इतो.

नवमा वर्षमां तेणे करेलां केटलांक कामी विषे उल्लेख छे. घणो भाग भांगी गयो छे पण जे भाग रह्यो छे ते उपरथी एम जणाय छे के तेणे ते वर्षमां एक कल्पवृक्षनी बक्षीस करी अने तेनी साथे घोडा, हाथीओ, रथो, घरो तथा अन्य उत्तम वस्तुओ ब्राह्मणोने दान करी. वळी तेणे 'महाव्यय*' नामनो एक प्रासाद बंघाव्यो जेनुं खर्च २८०००० थयुं.

दसमा वर्षनी हकीकतमांथी घणो भाग जतो रह्यों छे; तथा अगीआरमा वर्षनी तहन जती रही छे. दसमा अने बारमा वर्ष वचेनो हेवाल तुटक तुटक छे अने जोके तेनो संबंध संतोषकारक रीते जाणी शकाय तेम नथी तोपण नीचे प्रमाणे अनुमानो घडी शकाय, के दसमा वर्षमां तेणे हिंदुस्थाननी यात्रा करी अने ज्यारे तेने खबर पडी के केटलाक राजाओं तेना उपर चढाई करवाना छे त्यारे तेणे पगलां लेवा मांड्यां. त्यार बाद घणा भागे अगीयारमा वर्षनी हकीकत आवे छे. ए वर्षमां तेणे गर्दभनगरमांथी पहेलांना राजाओए नांखेलो एक कर कमी कर्यों. त्यारबाद जे आवे छे ते असंबद्ध छे तथा तेनो केटलोक भाग नाश पाम्यों छे. पण कांइक १३०० वर्ष पछी पुनः शरु कर्यानुं कहे छे छे.

^{ें} लेखमां 'महाविजय ' शब्द छे अने तेना संस्कृत तथा इंग्रेजी बन्ने अनुवादोमा पण 'महाविजय (Mahāvijaya)' शब्द ज वापरवामां आव्युं छे छतां आ ठेकाणे पंडितजी तेनुं नाम 'महाव्यय (Mahāvyaya)' आपे छे तेनुं कारण समजातुं नथी. कश्च मृल्थी 'महाविजय 'ना ठेकाणे 'महाव्यय ' लखाई गयुं होय.—संग्राहक.

१ कल्पद्रक्षनुं दान आठ महादानमांनुं एक छे ते चारथी आठह जार रुपीआ-भारनुं एक सीनानुं झाड. घोडा, हाथी तथा घराणां सहित बाह्मणोने आपवामां आवतं. सरखावो—हेमादिनों 'चतुर्वगिचिन्तामणि 'धानखंड, प्रकरण ५.

बारमा वर्षमां उत्तरापथ (उत्तर) ना जुलमी राजाओ विषे कांइक कहेलुं छे. त्यारबाद जे आवे छे ते जतुं रह्युं छे तेथी तेनो संबंध कळी शकाय तेम नथी. पण घणुं खरुं खारवेले तेमना उपर चढाइ करी हशे. त्यारबाद खारवेले मगधना राजाने बीक बतावी अने तेना हाथीओने गंगामां स्नान कराव्युं एटले के गंगा सुधी जइ पहोंच्यो; तेणे मगध-राजाने शिक्षा करी अने पोताना पग तरफ नमाव्यो. त्यारबाद कोइक नंदराज जेणे जैनोना अम्रजिन आदिश्वर (नी मूर्ति) अगर अम्रजिननं कांइक लइ लीधुं हतुं ते राजा विषे छे अने आ मूर्ति अगर वस्तु खारवेल पाछी लाव्यो छे. त्यारबाद मगधमां वसेला एक शहेरनुं वर्णन छे, पण तेना पछीनो माग जतो रह्यो छे. त्यारबाद खारवेले कांइक बंधाव्यानुं वर्णन छे के जेमना शिखर उपर बेसीने विद्याधरो आकाशमां जइ शके. तेनो अर्थ एवो होवो जोइए के आ मकानो घणांज उंचां हतां. त्यारबाद खारवेले एक हाथीनुं दान कर्युं जे दान तेणे पहेलां अगर पछीनां सात वर्षमां कर्युं नहोतुं. त्यारबाद जे आवे छे ते तुटी गयुं छे. पण तेमां तेणे जीतेला कोई देशनुं वर्णन आवे छे.

तेरमा वर्षमां कुमारी टेकरी उपर आईत-देवालयनी नजीक, बहारनी बेठकनी पासे, कांद्र काम कथीनुं कहेलुं छे, पण शुं कर्युं छे ते जतुं रह्युं छे. कारण के आ भाग तुटी गयो छे. त्यारबाद विद्वानी तथा विश्ववंद्य यतिओनी एक सभा बोलाव्यानुं कहेलुं छे. अने कांद्रक, कदाच एक गुहा, आईत बेठकनी नजीक खडकमां, उदयगिरिउपर हुंशियार कारीगरीना हाथे कराव्यानुं कहेलुं छे तथा वैद्र्यगर्भ, पटालक अने चेतकमां स्तंभो कराव्या विषे छे. आ काम मौर्य संवत् १६४ पछी १६६ मा वर्षमां कराववामां आव्युं हतुं.

⁹ पटालक अने चेतक कदाच गुहाओनां नाम छे अने वैद्यंगमें तेमनी एक भाग छे.

त्यारबाद खारवेलनी वंशावळी आपी छे.

खेमराज (तेनो पुत्र). वृद्धराज (तेनो पुत्र). भिक्षराज.

आ लेखमां बताव्या प्रमाणे भिक्षुराज खारवेलनुं बीजुं नाम होय तेम लागे छे. भिक्षुराज, राज्यनुं पालन करनार, सुख भोगवनार, अनेक सद्गुणसंपन्न, सर्वधर्मपर आस्थावाळो,.....संस्कार पाडनार, राज्य, बाहनो अने एक अजित लश्करवाळो, राज्यनी लगाम हाथ करनारो, देशने पाळनार, महाराजाओना वंशमां उत्पन्न थएला, आ महान् खारवेल राजा छे.

अहिंआं कहेली सदी मीर्य सदी छ. हजु सुधी मीर्य राजकाल कोई ठेकाणे जोवामा आव्यो नथी अने तेथी नकी करतुं जोइए के आ सदी क्यांथी शरु करवानी छे. प्रश्न ए छे के आ सदी प्रथम मोर्यराजा चंद्रगुप्तथी अगर ए वंशना कोइ बीजा राजाथी शरु करवानी छे? हुं धारुं छुं के ते अशोकना आठमा वर्षथी शरु थाय छे तेनां बे कारणो छे:—(१) आ लेख किंत्रंग राजानो छे (२) अने अशोकना तेरमा छेखमां ते कहे छे, के मारा आठमा वर्षमां में किंत्रंग जीत्युं ते वस्तते घणा माणसोनो घाण नीकळी गयो; पण तेने माटे ते नाखुश छे परंतु ते आधी संतोष माने छे के सलाह स्थपाइ हती तथा धर्म आगळ वध्यो हतो. आवी मोटी जीतथी किंत्रंगना लोको नवी सदी शरु करे अने आ वर्षने आ सदीनुं प्रथम वर्ष मानिए तथा अशोकनी राज्यगादी बेटानी मिति के जे हवे नक्की थई गई छे तो आ लेखनी मिति हंमेशने माटे नक्की करी शकाय.

जो के अशोकना तस्तनशीन थयानी मिति विषे मिन्न मिन्न मतो छे पण ते थोडाक वर्षना अरसामां नकी थाय तेम छे. जनरल कनींगहामनी गणतरी प्रमाणे (अने जे मारा मत प्रमाणे खरी छे) अशोकनी तस्तनशीन थयानी मिति ई. स. पूर्वे २६३ छे. ए प्रमाणे तेना किंग जीत्या पछीनुं आठमुं वर्ष (अने कदाच ते वखते आ सदी शरु थई हशे) ई. स. पूर्वे २५५ छे. खारवेले केटलांक कामो उदयगिरि टेकरी उपर कराव्यां तेनी मिति १६५ मौर्य संवत् अगर (ई. स. पूर्वे (१५५-१६५) ई. स. पूर्वे १०३ यावे छे अने ते ९ वर्ष पहेलां युवराज थयो तेथी ई. स. पूर्वे १०३ यावे छे अने ते ९ वर्ष पहेलां युवराज थयो तेथी ई. स. पूर्वे ११२ मां यौवराज्य शरुं थयुं. अने पहेलां पंदर वर्ष रमतमां गयां तेथी खारवेलनी जन्मतिथि ई. स. पूर्वे १२७ छे. तेना बाप तथा पितामहने माटे वीस वीस वर्ष गणतां नीचे प्रमाणे यादी थाय छे:

खेमराज (सं. क्षेमराज) (ई. स. पूर्वे १६७) वुधराज (सं. वृद्धराज) (ी ,, १४७) भिखुराज (सं. भिक्षुराज)

अगर

सारसेल

जन्म ई. स. पूर्वे १२७. युवराज थयो-ई. स. पूर्वे ११२. राज्य उपर बेठो ई. स. पूर्वे १०३. उदयगिरि उपर कामो ,, ९०. बीजो लेख खारवेलनी स्त्रीनो छे. जे पोताने लालकना पौत्र हाथी-साह (हाथीसिंह) नी पुत्री तरीखे ओळखावे छे. त्रीजा लेखमां एम कहें छे के जे गुहामां ए कांतरेलो छे ते गुहा वकदेव राजानी बक्षीस छे. आ लेखमां वकदेवनां जे विशेषणो छे ते खारवेलनां जेवांज छे:— वेर, कर्लिगाधिपति, अने महामेघवाहन. आ उपरथी स्पष्ट जणाय छे के बन्ने एकज वंशना छे. आ लेखना अक्षरो खारवेलना लेखना अक्षरोना जेवा, कदाच अर्वाचीन छे; पण प्राचीनतो नहिज; अने खारवेलना पहेलांना बे राजाओने आपणे जाणीए छीए तथी नक्की वकदेव तेना पहेलां होय नहि. कदाच ते तेनो पुत्र अने वारस होय. जे गुहामां त्रीजो लेख छे ते गुहामां चोथो लेख छे जेमां 'वदुख राजानुं लयन ' लखेडुं छे अने अक्षरो सरखा छे तथी वदुख ते वकदेवनो पुत्र होय तेम लागे छे. आ उपरथी नीचे प्रमाणे यादीनो कोठो घडी शकाय.

```
खेमराज (सं. क्षेमराज )
                                  लाउक.
      (ई स. पूर्वे १६७)
                                (ई. स. पूर्वे १८०)
   वुधराज (सं. वृद्धराज)
                                (नाम नथी)
          ( ई. स. पूर्व १४७)
                                 ( ई. स. पूर्वे १६०)
                                 हस्तीसाह.
                                   अगर (ई. स. पूर्वे १४०)
                                 हस्तीसिंह.
 भिखुराज ( सं. भिक्षराज )
अगर खारवेल, राज्य शरु कर्यु-परण्यो-कन्या.
      (ई. स. पूर्वे १०३)
                         वक्रदेव
                           (इ. स. पूर्व ९५)
                        वदुख
                            ( ई. स. पूर्वे ७५ ).
```

लेख १

(हाथीगुम्फा केखः)

नीचे आपेली नकल मारा लेखनी साथे तैयार करेली मारी नकल उपरथी छे. में जनरल कनींगहाम अने मेजर की हुनी नकलों जोइ छे अने बापरी छे तथा पाठोमां जे फेरफार छे ते टीपमां आप्या छे. जे भागनी नीचे लीटीओ दोरी छे ते शंकामस्त छे अने मृळ लेख साथे तेने काळजीपूर्वक मेळववो जोइए.

नकल.

(१) नमो अरहतानं नमो सवसिधानं वेरेने महाराजेन महामेघवाहनेन चेतराजवसवधनेने पसथसुभेळ-

- १. की हुनी नकलमां मो खोटो छे. जनरल किनगहाम ते खरुं आपे छे. फोटोब्राफमां पण ते जुदं छे.
- २. हजु मुधी बधा विद्वानो वे ने बदले ऐ वांचे छे, जे शब्द ऐरेन एम कहे छे पण ऐ अक्षर हजु सुधी प्राकृतमां जोवामां आव्यो नथी, त्यारे वेरस एज वंशना बीजा राजानुं विशेषण छे एम लेख नं. २ उपर्था जणाय छे. (श्रीन्सेपनां लेखे।मां नं. ६). वे नो व, मेघवाहनना वा ना व जेवो छे. फेर एटलो छे के तेनुं गळुं सांकडुं कर्युं छे जेथी ते ऐ जेवो लागे छे.
 - ३. *K अने C बंत्रेमा चेतराजना रा ने बदले का छे. पण ए

^{*} K (के) थी मेजर की हु (Kittoe) भी नकल समजवी. अभे C (सी) थी जनरल कभीगहाम (General Cunningham.) भी कॉपी समजवी.—संप्राहक.

खने[न] चतुरंतळ्डानगुनोपगतेनँ कर्लिगाधिपातिना सिरिखारवेळेनैः

(२) पंदरसवसानि सिरिकुमारसरीरवता कीडितां कुमार-

पथ्थरमां फाट छे जेथी ते क जेवो देखाय छे. ते जग्या उपर जइने में जोयुं छे के ए सीधी लीटी नथी.

- ४. **वधनेन** ने बदले K तथा C बंनेमां छधनेन छे. पण मूळ हेखमां व चोखो छे.
- पुभ ना भ ने बदले K तथा C मां के छे. मूळ लेखमां अक्षर
 अस्पष्ट छे. तेथीज आ मूल थई छे. भ अक्षर विषे मने खात्री छे.
- ६. ८ मां चतुरंक छ छ. पण K मांत छे अने मूळ छेखमां तस्पष्ट छे.
- ७. K नी नकलमां गुनोपगतेन खोदं छे. C मां छेला प अने ग अक्षरों जे स्पष्ट छे ते सिवाय ते खरुं छे.
- ८ किलंगाधिपति ना मूळ लेखमां छिं उपरनुं अनुस्वार जो के जरुरनुं छे तोपण नथी C पोतानी नकलमां अनुमान तरीके अनुस्वार आपे छे. हुं घारुं छुं के K नी नकलमां िल नो इकार आवेलो नथी. छेलो अक्षर K नी नकलमां रा जेवो देखाय छे. C नी नकलमां चा छे जे खोटुं छे.
- ९. K मां सिरिखंरवेलोनं तथा C मां सिकावारवेळेन छे. पण मूळमां सिरि स्पष्ट छे. खारवेलेन मां छेला चार अक्षरो स्पष्ट छे. पेहेलो अक्षर शंकास्पद छे. ते खा अगर खि होई शके पण घणे मागे ते खा छे. कारण के आ लेखनी छेली लीटीमां खारवेळ ए नाम स्पष्ट आपे छं छे.

कीडका ततो लेखरूपगणनाववहारैविधिविसारदेन सवविजाँवदातेन नववसानि योवराजं पसासितं संपुणचतुविसातिवसो चं दानवधमेन सेसयोवनाभि-विजयवतिये

- २. C मां भूलथी कीडका नो ड नथी. K मां छे.
- ३. बवहार ने बदले K मां ववपार तथा C मां ववेपार छे. पा अने हा अक्षरो लगभग सरखा छे. फेर मात्र हा मां बाजुना कापामां छे. जे पथ्थरमां फाटने लीधे बन्नेना ध्यानमां ते आब्यो नथी. C नुं वे स्रोटुं छे.
- ४. विजा ने बदले C मां तिजा छे. पण मूळमां तथा K मां वि स्पष्ट छे. विजावदातेन पछी तथा नव॰ नी पहेलां C ए इ अक्षर घुसाट्यो छे जे मूळमां नथी, K मां नथी तेमज अर्थनी पूरवणीमां जरुरनो पण नथी.
- ५. °वसानि ने बदछे K मां °वसाना छे अने C मां °वसानि छे. जो के मूळमां नीचेनो भाग भांगी गयो छे तो पण ते नि जेवो देखाय छे अने खरी रीते तेज छे.
- ६. ८ मां योवराज ने बदले योवरज तथा K मां होवरज छे. पण मूळमां योवराज स्पष्ट छे. हुं धारुं छुं के ज उपर अनुस्वार जोइए; जो के मूळमां होय तेम छागतुं नथी.
- ७. ८ मां पसासिवं अने K मां पसासिव छे. जो के K मां छे छो अक्षर शंकास्पद छे. मूळ छे खमां आ अक्षरनी नीचे एक छिद्र छे तेथी आ मूल थइ छे.

१. C मां की डिता नी की ने बदले री छे. पण मूळ लेखमां, K मां तथा फोटो प्राफ्तमां की स्पष्ट छे.

- (३) किंक्रगराजवंसपुरिसयुगे महाराजाभिसेचनं पाष्ट्रनाति''
 अभिसितमतो चं पधमवसे वातिवहतगोपुरपाकारनिवेसनं पिटसंखारयित किंक्रगनगिरं खिबीर चं सितल्जतडार्गपाडियो च बधापयित सबुयानपितसंठापनं चं
- ८. संयुणचतुविसतिवसो ने बदले κ मां संयुणचविसतः के κ मां संयुणचविसतः
 - ९. C मां च ने बदले स छे अने K मां कांइज नथी.
- १०. K मां विजपातितये छे अने C मां विजपोतितये छे. य भांगी गयो छे पण व स्पष्ट छे तेथी संस्कृत विजयवृत्त्ये ने बदले विजयवितये हुं पसंद करुं छुं. य, पो होइ शके पण अहीयां पो नी पहेलां य ना लोप विषे आपणे कारण आपी शकीए. तेथी सं. विजयप्रवृत्त्ये ने बदले विज[य] पोवितये पण थाय.
- ११. पापुनाति ने बदले C मां पापेनाति छे. पण मूळमां तथा K मां पुरूपष्ट छे.
- १. ८ नी नकलमां 'मतो नो म, अ जेवो देखाय छे. पण मूळ लेखमां तेमज K मां म स्पष्ट छे.
- २. से ने बदले C मां स छे. मूळ लेखमां तेमज K मां से स्पष्ट छे.
 - ३. खिबीरं च वांचो. च झांखो छे.
 - ४. C मां सिताकतिहग छे. K मां खरुं छे.
- ५. K मां आ शब्द वधपयाति जेवो देखाय छे तथा C मां चपंयति जेवो छे.

(४) कारयति।

पनतीसाहि[°] सतसइसेहि[°] पकातिये[°] रजयति[°] दि-तिये[°] च वसे अभितयिता[©] सातकणि[°] पछिमदिसं[°]

- ६. K मां सतुयानपतिसंठयपव अने C मां सवयानंपति-संठपनं च छे. C मां देखाडेळुं चोथा अक्षर उपरनुं अनुस्वार ते अनुस्वार नथी पण शिलामां छिद्र छे.
 - १. c मां पंनतासिजी अने K मां पंनतिसिसि छे.
- २. ८ मां सअपहसेहि छे. पण सतसहसेहि मूळ छेखमां ते-मज K मां स्पष्ट छे.
 - ३. C मां पकातियेइ छे.
- ४. ८ मां जछतः छे. पण पहेलो अक्षर जे जरा झांलो छे ते सिवाय मूळ छेखमां रजयित स्पष्ट छे. तेथी К ए पहेलो अक्षर मूकी दिशों छे पण बाकीना त्रण अक्षर खरा आप्या छे.
- ५. K मां दताये अने C मां दितिये छे. पण पहेला अक्षरने इकार होय तेम मने लागे छे तथी हुं दि वांचुं छुं. हु पण होइ शके. आ बन्ने सं. द्वितीये ने माटे वपराया छे.
- ६. ८ मां आचितयत तथा K मां अचितियत छे. बीजो अक्षर भांगी गयो छे तेथी ते चि जेवो देखाय छे. पण ते भि छे. तेथी सं. अभित्राय ने माटे अभितियता वांचवुं पसंद करूं छुं. ८ मां जे एकार छे ते भूल छे मूळ लेखमां इकार स्पष्ट छे.
- ७. K नी नकलमां सोतेकानं तथा C मां सोतकानि छे मूळ लेखमां सातकाणि स्पष्ट छे. K नो सो ए मूल छे अने C मां

इयगर्जनररधवर्द्धं दंडं ' पठापयति कसंवानं ' खित-

पण ते प्रमाणे छे. तेनुं कारण एवं होइ शके के कोईए प्लास्टरने शाही लगाडी हशे तेथी फोटोप्राफमां सो जेवुं देखाय छे.

- ८. K मां पियमिदिसं छे. कारण के य तथा छ लगभग एक सरखाज छे. छ ना उपरना गोळार्धने K ए खरी। रीते, छे एम धार्य हो. कारणके त्यां जरा फाट छे अने तेथी ते य जणाय छे. C नी न-कलमां सिछिमिदिसं छे. पण मूळ लेखमां बेशक पहेलो अक्षर प ज छे.
- ९. K मां पयगज छे कारण के प अने ह लगभग सरखा छे. मूळ लेखमां ह स्पष्ट छे अने ८ मां पण खरुं छे. ८ मां बीजो अक्षर ये छे पण मात्रा करवी निह जोईए. वर्ळा तेमा गज ने बरले मज छे ते पण भूल छे.
- **१०.** K अने C बन्नेए बहुलं ना ल ना उपरनुं अनुस्वार काढी नांख्युं छे. पण मूळ लेखमां अनुस्वार स्पष्ट हे.
- ११. ८ मां नंते छे जे स्पष्ट रीते मूल छे. K मां दंड छे तथा ह नी उपर एक अनुस्वार जेवुं छे.
- १२. K अने C बक्नेमां पथापनित छे. पण में चोथो अक्षर बराबर जोयो छे अने ते य छे; तेनी नीचेनी छिटी वक्र छे तोपण य स्पष्ट छे. पथापयित नी आगळ आ छीटीनो जे भाग जाय छे ते शंका उत्पन्न करे छे. कारण के अक्षरो झांखा तथा अस्पष्ट छे. K नी नक्छ स्पष्ट छे अने C नी नक्छ घणी मृह्यंवाळी छे.
- १६. ८ ए कुसवानं नुं कु मृकी दीधुं छे. पण ते मृळ लेखमां स्पष्ट छे. ४ मां कु ने बदले क छे. छेलो अक्षर (नं), ना जेबो देखाय छे, पण ना होय तो कांइ सारो अर्थ नीकळतो नथी. हुं धारुं

यं च सहायवता पतं मसिकनगरं (१) तितये च पुन वसे १४

(५) गंधववेदबुधों दंपनतेगीतैवादितसंदसनाहिं उस-वसपाजकारापनाहिंच कीडापयति नगरीं इथेंच-

कुं के अनुस्वार तथा अक्षरनुं माथुं वे मळी गयां हरो तेथी आम देखाय छे.

क्ने शब्दो नीचे में लीटी दोरीं छे तेमना विषे मने खातरी नथी. मूळ लेखमां ते पुनः वांचवा जेवा छे, कदाच कांई फेरफार माल्यम पढे.

- १४. तितये च पुन वसे K मां तितये बदले विसये शंकाथी आप्युं छे; O मां आ ठेकाणे तहन मूल छे. मूळ लेखमां जो के स्पष्ट नथी तोपण तित ओळखी शकाय छे; अने ये तथा तेनी पछीना पांच अक्षरो तहन चोखा छे.
- १. ८ मां घो ने बदले घा छे. पण к मां तथा मूळ लेखगां घो स्पष्ट छे.
- २. C मां दंपेनाति छे जे भूल छे. K मां तथा मूळ लेखमां दंपनत स्पष्ट छे.
 - २. K मां गि छे. अने C तेने भूलथी आ धारे छे.
 - 8. K तथा C बनेमां हा छे; पण मूळ लेखमां हि स्पष्ट छे.
- ५. K तथा C बन्नेमां हि ने बदले पि छे. कारण के लांबो कीटो तेमना जोयामां नहि आब्यो होय.
 - ६. ८ ए डा तथा प विषे गुंचवाडो कर्यो छे अने तेथी

(६) भिंगारेहि तिरतनस' पतयो सँवरिवकभोजकेसादेवं

किसयंति वांचे छे. K नुं खरुं छे, तेणे डा ज वांच्यो छे अने शक-मंद छे एम कहे छुं छे.

- ७. इ तथा था बने अक्षरो झांखा तथा शंकास्पद छे. K मां तथा जेवुं देखाय छे. कदाच तथा होय. मने तो पहेलो अक्षर इ जेवो देखाय छे पण ते आ जोइए. C इ आपे छे अने था ने मूकी दे छे.
- ८. मूळ लेखमां चतुथे स्पष्ट छे. १८ मां विबुधे अने C मां प्रथम एक लोटा अक्षर पछी तथे छे.
 - ९. C मां विसे छे पण मूळ केंखमां तथा K मां वसे स्पष्ट छे.
 - १०. K ए स उपरनुं अनुस्वार मूकी दीधुं छे. C मां ते छे.
- ११--१२. त तथा व उपरनां अनुस्वार झांखा छे ते बेउ नकलोमां नथी.
 - १६. नमंसितं शब्दो झांखा छे.
 - १४. नव अक्षरो जताज रह्या छे; मात्र ति रह्यो छे.
- १५. ८ ए कू मूकी दीधों छे अने K मां तेने बदले ट छे. मूळ लेखमां कू स्पष्ट छे. त्यार पछीना त्रण अक्षरी जता रह्या छे जेमां-नो छेल्लो पूहशे कारण के तेनी पछी जिते आवे छे.
- १. C तथा K बन्नेमां तरतनंसा छे. मने पहेला अक्षर उपर भणोज अस्पष्ट इकार देखाय छे.
 - २. C तथा K बनेमां पत्तय छे पण यो स्पष्ट छे.

	दसयात पचम च दानि बस नदराजातवसस्त आ- घाटितं तनसुँ छीयवाटा पनार्डि नगरं पवेस राजसेयसंदंस- णतो सवकरावणं.
(e)	अनुगहअनेकानि' सतसहसानि विसेजित पोरजा- नपदं सतमं च वँसं पसासतो च · · · · · ·
	सवोतुकुळ
	भटमे च वसे ^त ' ' ' ' ' ' ' ' ' ' ' ' '

- ५. तन न बदले तेन हरो. भूलथी तेनी मात्रा काढी नांखी हरो.
- ६. पहेला पंदर अक्षरो जता रहेला पछीना पांच अक्षरो पण झांखा छे परंतु इथिहितो च ना जेवुं देखाय छे.
 - १. C मां अनेकाना छे. K म्बरो छे.
 - २. C मां 'साना छे. K खरो छे.
- ३. ८ मां वासेजित अने K मां वासजित छे. मूळ लेखमां वि छे जोके ते थोडी बगडेली छे.
 - 8. K मां वसं नो व जरा बगडेलो छे.
- ५. K ए अ मूर्की दीघो छे जे घणो झांखो छे. C मां तेने बदले ये छे. C मां वसेने बदले वसु छे तेना पछीना २१ अक्षरो कळी श्रकाय तेम नथी.

३. C मां सत छे. पण व K मां तथा मूळ लेखमां स्पष्ट छे

^{8.} C मां पंचापु जेवुं देखाय छे अने K ने छेहा अक्षर विषे शंका छे. मने म ना भाग जेवुं देखाय छे.

(८)	घातापयिता राजगहनपं पीडापयित पितनं च कम- पदानपनादेनसवत सेनवाहने विपमुचितुँ मधुरं अप- यातो नवमे च [वसे १]																
	•	•	•	•	•		•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•
	٠	•	•	•	•	٠	٠		•	٠	•	•	•		•		•
	٠	•		•	•	•	٠	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•
	•	•		वर	को	, vo											

- २. K तथा C मां बतावेला य नी नीचेना तथा डा नी बाजुना लीटा शिलामां पडेली फाटो छे. अने तेथी तेमने अक्षरो साथे कांइ संबंध नथी.
- ३. K मा पंचात छे. कारण के अक्षरोनी उपर एक झांखी छीटी जेवुं देखाय छे. K मां प उपरनुं जे अनुस्वार छे ते मात्र छिद्र छे. C मां पवंत छे जे भूल छे. पहेला अक्षरनी डाबी बाजुप स नो छीटो छे अने आछो व देखाय छे.
 - ४. ल मां पमाचितु छे. K सरो छे.
 - ५. C खरो छे. K मां 'यातो ने बदले नतो छे.
- ६. न तथा व ए वे अक्षरो स्पष्ट छे. मे अने च जो के अस्पष्ट छे तोपण ओळखी शकाय छे. वसे अक्षरो सूचित थाय छे. बाकीनी लीटी जती रही छे. अहीं तहीं एक एक अक्षर देखाय छे पण कांइ कळी शकाय तेम नथी.
 - ७. C मां आ खरं आप्युं छे. K मां पपवम छे.

१. अहीं K तथा C बन्नेनी मूल छे. बन्नेमां **राजगंडभपं** छे. जो के अक्षरो झांखा छे तो पण ओळखी शकाय छे.

माचीनजैनलेखसंग्रह ।

1	1
ι,	•
•	

- (१०) रयति अठतिससतसहसेहि दसमे च वसे . .
- १. K, मां कपंराख छे. परंतु आ अनुस्वार नथी पण छिद्र छे अने ख उपर ओकार स्वष्ट छे. C मां किपरुख छे.
- ર. અદી C અને K बनेए મૂઝ करी છે. અક્ષરો झांखा છે વળ ઓळखी शकाय तेम છે.
- ३. C मां घरावसयं छे. पण जे भाग नीचे रह्यो छे ते उप-रथी अक्षर घ जणाय छे.
 - ४ C मां बइमनोनं छे जे तहन खोटुं छे.
- ५. ज थी रं सुधीना छ अक्षरो झांखा तथा घसाई गएला छे.
- १. पहेला नव अक्षरो अर्घा भांगेला छै अने तेथी बराबर ओ -ळखी शकाय तेम नथी. निवा शब्द शंकास्पद छे. तेमना उपरनो भाग स्पष्ट छे.
- २. κ मां कारयति ना का ने बदले दे छे. κ मां बराबर छे अने मूळमां स्पष्ट रीते का छे.
- २. K मां अठ नो अ मृकी दीधेलों छे. C मां ते आपेलों छे. तिसयुसव॰ ने बदले C मां दितदुसव॰ छे अने K मां तसयसत॰

•	•	•	•	•	•	•	•	•	٠	•	•	•	भा	र्ध	व	सप	ठा	र्न	•
•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	•	क	ार	पर	गरि	Ť	٠	•	•
•	•	•	•	•	•	•	•		•	•	•	•	•	•	•	G	•	•	•
•	•	•		•	•	ज	यत	ान	=	l 1	ा ने	ोर	या	न	उ	गर	भ	ता.	

छे कारण के कदाच ति नो इकार जरा आछो छे तेथी तेमां आप्यो निह होय.

- ४. K तथा C बेउमां दसामे छे. कारण के स आगळ जरा लीटो छे तेथी तेमणे आकार लीधो छे.
- 4. $_{
 m C}$ मां तुसे छे. कारण के व नो नीचेनो भाग जरा भांगी गयो छे. $_{
 m K}$ नी पण अहीं भूछ छे.

६ वसे नी पर्छाना दस अक्षरो जता रह्या छे. केटलाकना उपरना भाग देखाय छे. पण तेथी काइ चोकस कही शकाय निह. फोटोश्राफमां पण एवाज आछा पट्या छे कदाच बेनी सरखामणी कर्याथी कांइक बनी शके. आ दस अक्षरोनी पर्छी भारधवसपटान छे; आमांनो न घणोज आछो छे. ८ मां भा ने बदले क छे पण आ भूल छे. ८ ए पटान नो टा मूकी दीधो छे. वसप अक्षरो सिवाय ह ए आ भागमां भूल करी छे. बीजा १२ अक्षरो गया छे. पण केटलाकनो आछो आकार देखाय छे. जो मूळ लेखनी चोकस तपास करवामां आवे तो कांइक बनी शके पण त्यां सुधी ते शंकामस्त रहेशे. मारी नकलमां में तेमने लीधा नथी.

७. ८ मां राचाबीयति छे. κ ए पण अहीं भूछ करी छे. आना पछी २७ अक्षरो जता रह्या छे. तेमांना केटलाक आछा देखाय छे. पण ते स्पष्ट रीते ओळखी शकाय तेम नथी तेथी में मारी नकलमां लीधा नथी.

(99)	
	जनपदभावनं च तेरस वससताक : : दतामर- देइसंघातं वारसमं च व[सं] : : : : : : :
	• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •
	इस
	· · · ' हि वितासयंतो उतरापथराजानो ^६

रै. ११ मी थी १७ मी लीटी सुधीनो शरुआतनो भाग जतो रह्यो छे अने दरेकमां लगभग १०-१० अक्षरो जता रह्या छे.

- २. K अने C बन्नेमां पिथुडं छे. पण मूळ लेखमां पाथुडं स्पष्ट छे. गदंभनगछे ने बदले C मां गदंअनधेधो छे. K नुं खहं छे.
- ३. $_{\rm C}$ मां **नकासयंत** छे तथा $_{\rm K}$ मां **नकासयत** छे. पण छेहा अक्षरनी उपर आछो इकार होय तेम मने लागे छे.
- ४, लेखमां आपेला अक्षरो दसितामरदेइसंघातं शंकास्पद छे. अने जो ते काळजीपूर्वक वांचवामां आवे तो कांइक वधारे सारो पाठ नीकळी शके.
 - 4. C मां च ने बदले हु छे.
- **१.** हिविता : : : नो. वितासयंतो ना ता अने स नी उपर एक नानी फाट छे जेने K अने C ए इकार गण्यो छे. उतरा ना रा ने बदले C ए ओ लीघो छे जे खोटुं छे. पध ने बदले तेणे पय लीघो छे जे भूल छे. कारण के मूळ लेखमां ध स्पष्ट छे. राजानो ना जा मां आकार स्पष्ट छे तो पण C ए ते मूकी दीघो छे अने ज गण्यो छे.

- (१२) ' पगधानं' च विषु कं भयं जनेतो हथिस गंगायं पाययति मगधं चै राजानं बहुँ पटिसासितो पादे वदापयति नंदराजनितस अगजिनसँ ' ' ' गहरतन पडिहारहिअ मगधे वसिवु नयरि.
- १. ८ ए मगधानं नो ग मूकी दीधो छे. K ए ग तथा धा बन्ने खोटा कर्या छे.
- २. भयं ने बदले C मां वियं छे; कारण एम होइ शके के प्रथमना अक्षरना नीचेना भागो जोडवामां आवे छे एम मान्युं हशे. K मां छेयं छे.
- ३. प्रथमनो अक्षर म आछो छे. ग आछो पण स्पष्ट जणाय छे अने धंच तहन स्पष्ट छे. C ए बे अक्षरोनी जग्या राखीने मच लख्या छे. K ए एक अक्षरनी जग्या राखीने धंच लख्या छे.
- 8. K तथा C बरेमां बह છે, पण मने बीजा अक्षरनी नीचे उकार स्पष्ट देखाय છે.
- प. K मां पटिसासित अने ८ मां सटिसित छे, पण मूळ ले-खमां पटिसासिता स्पष्ट छे.
- ६. ८ मां बदापंयति तथा K मां बादापंयति छे. पण बन्नेए प उपर जे अनुस्वार गण्युं छे ते मात्र छिद्र छे अने ते पण अनुस्वारनी जग्याए नथी. पहेला अक्षर उपर मूळ लेखमां अनुस्वार नथी, पण स्यां एक जोइए.
- ७. नितस मांनो स शंका प्रस्त छे. C ए वा गण्यो छे अने K ए शंका साथे ठा गण्यो छे. मारुं धारवुं एवं छे के ते स छे. बीजा

(93) ' ' ' ' ' ' ' ' विजाधर है हि हिंदें वरानि सिहरानि निवेसयित सतवसदानपरि-हारेन अभूतमकरियं च हथी नादानपरिहारं ' '

अक्षरने बदले K मां आ छे, पण C मां म छे. एम होइ शके के नीचेनी आडी लीटी, ए शिलामां फाट होय त्यारे आ जोइए अने तेथी नंदराजनितस अगजिनस पाठ थाय; जो म गणीए तो नंदराजनितसमगजिनस पाठ थाय. त्यार पछीना १८ अक्षरो जता रह्या छे. केटलाक अस्पष्ट तथा झांखा छे. जे जमीन उपर ते कोतर्या छे ते खरबचडी छे. K अने C मां घणो फेर पडे छे, मारा पाठो पण शंकास्पद छे.

- १. अक्षरो जरा झांखा छे. ८ मां तुजिपर छे जे खोटुं छे. व नो नीचेनो भाग जरा जीर्ण थयो छे तेथी तेमणे तु गण्यो छे. K नो पाठ जरा सारो छे पण तेमां केटलीक भूछो छे.
- २. अहीं आके टलीक खाली जग्या छे अने हुं धारुं छुं के त्यांथी एके अक्षर गयो नथी.
- २. C मां निवइयित छे तथा K मां निवेनेयित छे. हुं धारुं छे के निवेसयित जो के झांखुं छे पण स्पष्ट छे.
 - 8 . $_{\mathrm{C}}$ मां थरिहारेन छे. $_{\mathrm{K}}$ मां खरुं छे.
- ५. ८ मां असितमसारियंच अने K मां असुमसरियंच छे. मूळमां अभुतमकरियंच स्पष्ट छे.
- ६ हथी नी पछीना त्रण अक्षरो भांगी गया छे अने नंदान जेवा देखाय छे. परिहारं नी पछीना तेर अक्षरी तद्दन नष्ट थया छे. कदाच तेमांना पहेला चार कारयित होई शके.

अहरापयति इधं सतस

(१४) सिनो विसकरोति तरेसमे वसे सुपवतिवज्ञियचको कुमारीपवते अरहतोपै। [िनवासे] वाहिकायं निसिदियायं यपजके कालेरिखिताः

(१५) हिन कितसमायो सुविहितानं च

- १. पहेला दस अक्षरो जता रह्या छे. दसमी अक्षर वा होई शके कारण के तेनी पछीना अक्षरो सिनो छे.
- २. करोति ने बदले $_{\rm C}$ मां करह तथा $_{\rm K}$ मां करिति छे. पण मूळ लेखमां करोति स्पष्ट छे.
- ३. अरहतो नी पछीना अक्षरो घणा झांखा छे. में शंकाथी वांच्या छे. मारुं धारवुं छे के जो मूळ लेखनी काळजीपूर्वक तपास थाय तो संतोषकारक पाठ नीकळी शके. यपजके नी पछी ३९ अक्षरो जता रह्या छे अने छेला ५ अक्षरो देखाय छे ते कालेरिखता छे.
- १. ८ मां कतसमेलं छे. K मा कतसमे अने तेनो छेहो अक्षर शंकायुक्त छे. पण म उपर कोई मात्रा मने जणाती नथी. एक फाटने लीधे म नो उपरनो लीटो स साथे जोडाई गयो छे. तेथी, हुं धारूं छुं के आ बे नकलोमां मात्रा छे. अक्षरना मध्यमां म नो 'आ'कार स्पष्ट छे. छेह्नो अक्षर यो अस्पष्ट छे.

सवदिसानं व [यानिनं]	तापसा[नं १] े
संहतानं ($?$) $^{\epsilon}$	अरहतँ	निषिदियासमीपे
पभारे वरकारुसमथ[थ]पतिहिं	अनेकयोजनाहि [°]

- ३. C मां सुतदासितं तथा K मां सुतिदसानुं छे. न नी नीचे मने 'उ⁷कार लागतो नथी. बीजो अक्षर जेने तेओ त गणे छे ते आछो व छे.
 - 8. અદીં C અને K बन्नेनी भूलो છે.
 - ५. $_{
 m C}$ मां तपसिम अने $_{
 m K}$ मां तपसह छे. आ भूलो छे.
- \mathbf{c} \mathbf{c} मां **संपु**पनं तथा \mathbf{K} मां **संप**पनं छे. हुं धारूं छुं के \mathbf{c} सं**हता**नं आछुं थयेछं छे.
- ७. K मां अरहस छे, कारण के त नी बाजुमां फाटने लीधे ते स जेवो देखाय छे. त अगर स गमे ते वांचीए तोपण अर्थांतर थती नथी C मां चहस छे जे खोटुं छे.
- ८. K तथा ८ बन्नेए कारु खोटी रीते आपे छुं छे. पण मूळमां कारु स्पष्ट छे. मूळमां समय नी पछी पतिहि स्पष्ट छे. थ उपर शिलामां फाट छे, अने आ फाटनी नीचे छिद्र छे. तेथी बन्नेए प ने बदले घि गण्यो छे. मूळमां स्पष्ट रीते प छे. बन्नेए तिहि ने खोटो गण्यो छे पण ते मूळमां स्पष्ट छे. ते पतिहि छे पण हुं धारू छुं के पहेला थ पछी बीजो थ हशे जे कोतरनारे मूकी दीघो छे.

२. C मां सविहितेनं तथा K मां सविहितिनं छे. मूळमां सुविहितानं स्पष्ट छे. मात्र ता नो 'आ'कार शंकास्पद छे.

(१६) · · · · · · · · · · · पटाळके चेतके विन्धं इरियगभे थमे पतिटापयित पनंतरिय सिट वर्सं सिते राजमुरिय काळे वोछिने व वोयटअगसितक्कत-

- ९. तमां योजनापि छे. K दुं सक्हं छे. जे अक्षरो तेनी पछी आवे छे ते झांखा तथा अस्पष्ट छे तेथी हुं कळी शकतो नथी. जो खास तपास करवामां आवे तो तेमांथी कांई नीकळी शके. लेखना अर्थने माटे ते घणा उपयोगी छे.
- १. $_{\mathbf{C}}$ मां चे अने $_{\mathbf{K}}$ मां चतक छे. मारा मत प्रमाणे ते चेतके छे.
- २. C मां तेपरियगभे अने K मां वेदुरियगभ छे ते वेळिरि-यगभे अगर वेद्वरियगभे पण होई शके.
 - ३. K मां ठापयति नो ठ खरो नथी.
 - ४. K मां पनंतारिय खोटुं छे. C मां ते खरूं छे.
- 4. C मां सच छे. पण ते ठ ना इकारने लीधे च जेवो देखाय छे. फोटोग्राफमां िठ चोरूखी जणाय छे. K ए अक्षरो खोटा आप्या छे.
 - ६. C मां वस खरुं छे. K ए अक्षरो भांगेला आप्या छे.
- ७. सते जो के झांखा छे तोपण स्पष्ट छे. C ए ते मूकी दीधा छे.
- $(\cdot, \mathbf{u}, \mathbf{d}, \mathbf{d},$

प्राचीनजैनलेखसंग्रह ।

रियं'' चुपादयित' स्वेमराजी स वधराजी स भिखु-राजी इ[ना]मराजा पसंतो सनतो अनुभवतो [क] छाणानि' .

(१७) गुणिवसेसँ कुसलो सवपासंडपू- जको े तानसंकारकारको विश्व वित-

- ९. $_{
 m C}$ मां कोल छे. अहीं $_{
 m K}$ नी भूल छे. मूळमां काले स्पष्ट छे.
- १०..० मां चेछिनंच छे. K ए पहेला अक्षरमां भूल करी छे अने तेने बदले कांइ खोटुं आप्युं छे.
- ११. K अने C कतिरियं वांचे छे. K ए क नी नेसणी जाडी आपी छे जे उकार छे.
 - १२. $_{f C}$ अने $_{f K}$ मां नपादयित छे. पण चु स्पष्ट छे.
- १२. $_{\rm C}$ मां अगमराजा छे. अने $_{\rm K}$ मां पहेला वे शंकायस्त छे पण मूळमां स्वेमराजा स्पष्ट छे.
- १४. बीजो अक्षर जरा गोळाकार छे अने ठ जेवो देखाय छे. C मां तहन ठ जेवो आप्यो छे. K मां वठराजा छे. मारा मत प्रमाणे ते वधराजा, सं. वृद्धराजा छे.
- १९. खु शंकाश्रस्त छे. K करतां C मां आ भाग सारो आप्यो छे.
- १६. मांगेलो अक्षर कदाच क छे; κ मां छाणानि तथा κ मां राणानि छे.
- १. K अने C बन्नेमां विसेस नो स जवा दीघो छे. फोटोशा-फमां ते स्पष्ट छे.

हतचिकवाहनबळों चकधरो गुतचको पसंतचकों राजसिवंसकुळविनिगतो महाविजयो राजा खारवेळ-सिरिं॥



- ३. C ए ता पछी वे अक्षरोनी जग्या खाली राखी छे. पण स्पष्ट रीते देखाय छे के फक्त एकज अक्षर न नी जग्या छे. संकार ने बदले C मां मकार छे जे भूल छे. कारण के मूळमां संकार स्पष्ट छे. K मां मात्र कारकार छे अने बीजा अक्षरो छोडी दीघा छे.
- 8. C ए अ मूकी दीघो छे. ति ने बदले C ए खोटो अक्षर आप्यो छे पण ति स्पष्ट जणाय छे. वाहन ने बदले C ए वाहिन आप्युं छे अने बलो ने बदले ठलो अक्षरो पण खोटा छे.
 - ८ मां रिसंतचको छे. к नुं खोदुं छे.
 - ६. ८ नुं सरूं छे, K नुं सोटुं छे.
- ७. K मां खरवेल छे. ८ ए खारवेल आप्युं छे जे खरूं छे. ८ ए सिरि नी पछी रि थी जरा नीचे नो आप्युं छे. फोटोमाफमां तेमज K मां आ प्रमाणे नथी. कदाच उपर कोई अक्षर मांगी गयो छे एम दर्शाववाने नो मूक्युं हशे. अहीं आं तो तेने कांई संबंध नथी.

२. ८ मां को ने बदले ण छे. मूळमां को स्पष्ट छे. त्यार पछीना छ अक्षरो नष्ट थया छे.

प्राकृतनुं संस्कृत-भाषान्तर.



- (१) नमोऽईद्भयः नमः सर्वसिद्धेभ्यः । वीरेण महामेघवाहनेन चैत्रराजवंशवर्धनेन प्रशस्तश्चभळक्षणेन चतुरन्तरस्थान-गुणोपगतेन कळिङ्गाधिपतिना श्रीखारवेळेन
- (२) पश्चद्यवर्षाण श्रीकुमार शरावतां क्रीडिताः कुमार•क्रीडाः। ततो लेखरूपगणनाव्यवद्दार विधिविशारदेन सर्वविद्यावदातेन नव वर्षाण यौवराष्यं प्रशासितं संपूर्णचतुर्विशतिवर्षश्च दानेन च धर्मेण शेषयौवनाभिविजयवृत्त्यै
- (३) किलक्षराजवंशपुरुषयुगे महाराजाभिषेचनं प्रामोति। अभिषिक्तमात्रश्च प्रथमवर्षे वातिवहतगोपुरपाकारिनवे-श्चनं प्रतिसंस्कारयति किलिङ्गनगरीं शिवीरं च शीतळत-डागपाळीश्च बन्धयति सर्वोद्यानप्रतिष्ठापनं च
- (४) कारयति पश्चित्रंशच्छतसहस्नैः मकृती रञ्जयते। द्वितीये च वर्षे अभित्राय शतकिंगः पश्चिमदिशं हयगजनरस्थ

१. लेखमां कहार जेवुं कांइ छे जे कीहालु नुं प्राकृत होई शके. मने कुमार वांचवानुं पसंद पडे छे. कारण के क ने जमणी बाजुए नीचे एक आछो लीटो छे. अने डा मांगी गयो छे. तेनो नीचेनो भाग गोळाकार छे. अने तेनो उपरनो लीटो मा ना जमणी तरफना भाग जेवो लागे छे. मा अक्षर घसाइ गयो छे अगर कोतरनारनी ते मूल हशे.

बहुलं दर्ण्ड मस्थापयति कुसैवानां क्षत्रियाणां च सहा-
यवता प्राप्तं मसिकनगरं (१) तृतीये च पुनर्वर्षे
(५) गंधर्ववेदो बुद्धो दंपतृत्तगीतवादित्रसंदर्शनैरुत्सवसमा- जकारणश्च कीडयति नगरीं। इत्थं चतुर्थे वर्षे विद्या-
धराधिवासं अहतं पूर्वं कलिङ्गपूर्वराजेन
धर्मक्टस्य पृजितं च निक्षिप्तच्छत्र—
(६) भृङ्गारैः त्रिरत्नस्य प्रत्ययः सर्वराष्ट्रिकभाजकेषु स्यादेवं
दर्शयति । पश्चभे चेदानीं वर्षे नन्दराजत्रिवर्षसत्रमुद्घा-
दितं तनसुरुीयवादात् प्रनाद्धीं नगरं प्रवेश्य
राज्यश्रेयःसंदर्शनत उत्सवकारणं
(७) अनुग्रहानेकानि शतसहस्राणि विस्नति पौरजानपदे।
सप्तमं च वर्षे शशासन् च
,
अष्टमे च वर्षे
(८) घातियत्वा राजगृहतृपं पीडयति । एतेपां च ऋमप्रदान-
प्रणादेन सर्वत्र सैन्यवाहनानि वित्रमुच्य मथुरामपयातः।
नवमे च [वर्षे १]
(९) करपवृक्षो इयगजरथैः सह यत्र सर्वे ग्रहावसथं .
यस्य वा ग्रहणं च कारियतुं ब्राह्मणेभ्य
यस्मिन्हिद्धिसारं ददाति अर्हन्तः
यास्मन्द्राद्धसारं ददाातं अहन्तः 6

(१०) [निवा]सं महाविजयप्रासादं का- रयति अष्टात्रिंक=छत्तसहस्रैः । दशमे च वर्षे भारतवर्षप्रस्थान कारयति
(११)
(१२)
(१३) विद्याधरोहे खिताम्बराशिखराणि निवेशयति सप्तवर्षदान्पिरहारेणाञ्जतमकृतं च हस्तिनां दानपिरहारं आहारयति इत्थं शत
(१४) [या]सिनो वशीकगोति । त्रयोदशे वर्षे सुप्रवृत्तविजयिचकः दुमारीपर्वतेऽईदुप[निवासे] बा- सकायां निषद्यायां काळे रक्ष्य

(१५)	_		कु र तापसानां		_	
		 •	अईक्षिपद्य भेरनेकयोज	ायाः स	मीपे	माग्भारे
(88)			ล็สย์มห์			

- (१६) पटालके चतके च बेड्र्येगर्भे स्तम्भान्त्रतिस्थापयति पश्चोत्तरपद्धिवर्षकाते मायराज्यकाले विच्छिने च चतुः- षष्ट्यग्रक्षतकोत्तरे चोत्पादयति क्षेमराजोऽस्य वृद्ध- राजोऽस्य भिक्षराजो नाम राजा प्रशासन् सन्ननुभवन् कल्याणानि
- (१७) गुणिवशेषकुश्वलः सर्वपाषण्डपूजकः तानां संस्कारकारकोऽप्रतिहतचित्रवाहन- वलश्रकथरो गुप्तचकः प्रशान्तचको राजर्षिवंशकुळ- विनिर्गतो महाविजयो राजा खारवेलश्रीः ॥

१. आ भूल छ खरी रीते पष्टचिधकवर्षशते जोईए.

२. मौर्यराज्य नुं प्राकृत राजप्रित्य छे. प्राकृतमां जैम घणी वार आवे छे तेम आ शब्द विपर्धयनो दाग्वला छे.

३ खरी रीते विच्छिन्न।यां च चतुःपष्टचामग्रशतकोत्तरायां जोईए.

गुजराती भाषान्तर ।

~s***

अहतोने नमस्कार. सर्व सिद्धोने नमस्कार. कर्लिगाधिपति, वीर, महामेघवाहन, चैत्रराजवंशवर्धन, प्रशस्तशुभलक्षण एवा श्री-खारवेले कुमार रूपे पंदर वर्ष सुधी कुमार-क्रीडाओ करी. नव वर्ष सुधी लेखन, गणना, चित्र, न्यवहारमा कुशल थइने, तेणे यौवराज्य पद भोगव्युं. चोबीसमुं वर्ष पूर्ण कर्यो पछी कर्लिंगना राजपुरुषोनी धुंसरीमां शेषयौवनने विजय अने वृत्तिमां पसार करवाने तेने महाराज तरीके अभिषेक कर्यो.

अभिषेक थतांज प्रथम वर्षमां तेणे पवनथी नुकसान पामेला कालिंगना दरवाजा, किल्ला, घरा तथा शिबीरने समराव्या. तेणे शीतळ एवा अनेक जाननां तळावा अने बाग विगेरे ३५ लाख रुपीआ खरचीने बंधाव्या. (आ प्रमाणे) तेणे लोकोने संतोष्या.

बीजा वर्षमां पश्चिम दिशानुं रक्षण करीने हय, हाथी, माणसो अने रथ युक्त एक मोटुं रुश्कर शतकिणिए मोक्स्युं. (आज वर्षमां) कुसम्ब क्षित्रयोनी सलाह लड्ने (तेणे) मसीक (१) शहेर लीधुं. फरीथी, त्रीजा वर्षमां, ते गीत बिद्या शीस्त्रयो अने दम्प (१) नृत्त, गीत अने वादन तथा जलसाथी नगरीने आनंद आप्यो.

आ प्रमाणे चोधा वर्षमां, कर्लिंगना पहेलांना राजाओथी पूजाएलं, विद्याधरोथी वसाएलं, धर्मकूट पूजा करी अने छत्रो

⁹ का भाग भागी गयो छे, पण एम लागे छे के ते राजाए वैसा उपर छत्रो अगर धर्मकूट पर्वत उपर तेना के बुंबाइक मृब्ं अने तेनी पूजा करी. आ वैसा विद्याधरोए वसावेछ छे तथा पहेळाना करिंग राजाओ तेनी पूजा करता एम कहें छे.

तथा कळशो मूकीने एवो देखाव कर्यों के जेथी त्रिरत्न विषे नाना तेमज मोटा सरदारोने श्रद्धा उत्पन्न थाय.

पछी पांचमा वर्षमां नन्दराजनो त्रिवर्ष-सत्र आरंभ्यो; तन-सूलीया (१) वडे एक पाणीनी नहेर शहेरमां आणी; राज्यनी आबादी जणाववा माटे उत्सवी कर्या.

- (८) मारीने राजगृहना राजाने तेणे हेराने कर्यो; (ते) तेमनी (खारवेलना अनुचरोनी) धसारो करवानी तैयारीओनो अवाज सामळीने, सर्व ठेकाणे (तेनुं)

१ दानि शब्द घणीवार अतः तथा ततः ना अर्थमां वपराय छे; जेमके, भहावस्तु ' मां (प्रकाशक-सेनार्ट) पृ. १८, १०, २१, ३-३१, ८-२०५, १७-२३२, २-२४४, ९-३६५, १९.

२ एम जणाय छे के नंदराज नामनो कोई राजा हतो. तेतुं दानगृह हतुं ज्यां ज कोई आव तेने, जण वर्ष सुधा दान अपातुं. ए गृह जतुं रह्युं हशे ते खारवेले फरीशी उघाड्युं बळी नीचे जणावेली नहेर उपर्था, सत्र एटले के तळाव पण थाय छे ते उपरथी एम लागे छे के पहेला कोई नदराजाए बंधावेलुं तळाव हशे के जेने खारवेले उघाड्युं अने तेमार्था नहेर लीधी ते तळाव त्रण वर्ष सुधी पाणी राखी शके तेम हशे तथी तेने त्रिवर्ष-सत्र कहे छे.

३ ने जेणे भायी अने राजगृह राजाने हेरान कर्यो तेतुं नाम जतुं रह्युं छे. पण आ हेरान करनार खारवेलना अनुचरोनो अवाज सांभळीने घोडो विगेरे सहकर मूठीने मथुरामां नासी गयो.

लक्कर, बाहनोने मुकीने मथुरा पाछो नासी गयो. नवमे (वर्षे)
(९) एक उत्तम करूप वृक्षनुं (तेणे दान कर्युं) तेनी साथे घोडा, हाथीओ, रथो, तथा गृहावसथो
(१०) महाविजय नामना प्रासादने नुं रहेठाण बनावीने, दसमा वर्षमां भारत वर्षना प्रस्थाने नीकळी बनाव्या (तेनी सामे थवाने) जे तैयार (हता) तेमना हेतु जाणीने
(११) गर्दभ शहेरमां तेरसो वरस सुधी पहेलांना राजाओए नांखेलो करे तथा 'जनपदभवन 'दूर कर्या
(१२) मगधना लोकोमां भारे त्रास वर्ताविने तेणे (पोताना) हाथीओने गंगानुं पान कराव्युं अने मगधना राजाने सख्त शिक्षा करीने (पोताना) पगे तेने नमाव्यो, नन्दराजे लीधेल प्रथम जिननी मगधमां एक शहेर वसावीने

१ ठेखमां कल्पनृक्ष छे जे चारथी ४००० ह्यीआभार सोनानुं होय छे. सर-खावो:—हेमादिनो 'चतुर्वभितामणी ', दानखंड, अध्याय ५.

२. लेखमां पाशुद् छे. जे कदाच पिधदेयं अगर करनुं प्राकृत रूप ते वख-तनुं इशे.

- (१६) स्थापे छे तेनां शि-खरो एवां (उंचां) छे के तेमना उपर बेसीने विद्याघरो आकाशने खेंचे; सप्त वार्षिक दान (ना नियम) प्रमाणे तेणे अपूर्व अने (हजु सुधी) नहि अपायलुं हाथीओनुं दान आप्युं . . . लेवडाव्या आ प्रमाणे एक सो . . .
- (१४) ना रहेवासीओने हराव्या. तेरमा वर्षमां, (ते) जेणे पोतानुं विजयि राज्य आगळ वधार्यं कुमारी टेकरीना अईन्तोना निवासस्थानमांनी बहारनी बेठकं उपर . .

पछी मोर्य संवत् १६९ मां (आ) कराञ्यं

९ लेखमा निसिद्य शब्द छ जे नागार्जुन गृहाना लेखोमा पण छे. तेना जेबो पाली शब्द निस्तक्षा अने जनपन्छतमा निस्ति छे.

२ आ कदाच गृहाओना नामो हशे. वैडूर्थगर्म कदाच आ गुहाओनी भाग पण होई कके.

उ मूळ लेखगां जीर्ण छे.

^{*} आ चिकिने बदले चक्क वाचीए तो पण जो प्राकृतनी रीत प्रमाणे चिक्क मूकवामां आवे तो संस्कृतमां ते चक्रयप्रतिहतवाहन बल थाय, एटले के जेनुं लश्कर तथा बाहुनो 'चिक्क 'ओथी पण अटकाबी शकाय नहीं. पहेलो पाठ मने पसंद छे.

ठेख २.

वैकुंठ गुहाना ओटलानी पाछली भीतना मध्यद्वारनी जमणी बाजुए अढी लीटीओमा लेख नं. २ आव्यो छे. तेनो केटलोक भाग खराब थयो छे तोपण अक्षरो कळी शकाय तेम छे. बाकीनो भाग सारी स्थितिमां छे.

नकल.

- (१) अरहंतपसादानं कलिग़ानं समनानं लेनं कारितं राजिनो लालकस
- (२) इथिसाहानं^२ पपोतस धुतुना कल्लिगर्चं[कवाटीसिरि खा]रवेलस
- (३) अगमहिसिना कारितं⁸

संस्कृत

(१) अईत्प्रसादानां कालिङ्गानां श्रमणानां खयनं कारितं राज्ञो लालकस्य

- २. हथिसाहानं कदाच हथिसीहानं ने माटे वापरेखुं छे. जेनुं सं. हस्तिसिंहानां छे. एनुं हालनुं नाम हिटासिंघ छे.
- ३. च पछी छ अक्षरोनी जग्या खाली छे. जे अक्षरो जता रह्या छे ते लेखमां सूचित कर्या छे. रवेल शब्दो खारवेल सूचवे छे. चने धि जेवो करवामां आव्यो छे तेथी बीजो पाठ कलिंगाधिपतिनो थइ शके.
- ४. कारितं शब्दनो नीचलो भाग भांगी गयो छे पण मने सात्री छे के ते अक्षरो कारितं छे.

१. कालिंगानं वांची.

- (२) हस्तिसाहप्रपौत्रस्य दुहिता कलिङ्गचक्रवार्त्तनः श्रीखार-वेळस्य
- (३) अग्रमहिष्या कारितं

F

भाषांतर.

आहित धर्मना कालिंग देशना साधुओ माटे एक लयम करवामां आव्युं. हस्तिसाहना प्रपीत्र लालकनी पुत्री चकवर्ती कलिंगना राजा श्रीखारवेलनी पहराणीए ते कराव्युं.

(लयन एटले साधुओने रहेवा माटेनी गुहा.)

लेख ३.

CONTROL OF

माणेकपुर गुहाना ओटलानी पाछली भीतना बीजा अने त्रीजा द्वारनी वचे एक लीटीमां त्रीजो लेख छे. आ लेखनो एक भाग जीर्ण थइ गयो छे पण जे भाग रह्यो छे ते उपरथी बाकीना अक्षरो कळी शकाय छे.

नकल.

(१) वेरस महाराजस कलिंगाधिपतिनो महामेघवाइनवक-देपसिरिनो लेणं

संस्कृत.

(१) वीरस्य महाराजस्य कलिङ्गाधिपतेमहामेघवाहनश्रीवक-देवस्यं लयनं

र मूळ छेखमां वकदेप छे जे कदाच सं. वकदेवने बदले होय. मूळ छेखमां सिरि जो के विशेषण छे तोपण वकदेवनी पछी छे. जेमके छेख १ मां अंते खारवेछसिरि छे. संस्कृतमां तेने श्रीवक. देव गणवो.

भाषांतर.

क लिंगना महाराजा, वीर श्रीवकदेवनुं लयन.

लेख ४.



अ। ओटलानी जमणी भीतमांना भीयराना द्वारनी जमणी तरफ एक लीटीमां लेख नं. ४ छे. ते सारी स्थितिमां छे.

नक्छ.

कुमारो बहुखस लेणं।

संस्कृत.

कुमारवडुखस्य लयनं।

भाषांतर.

कुमार वडुखनुं लयन.



अनुपूर्ति.

डॉ. भगवानलाल इंद्रजीए संशोधित करेला खारवेल राजाना ए लेख उपर, गुर्जरसाक्षर श्रीयुत केशवलाल हर्षदराय श्रुवे, महाकिवि भास रिवत 'स्वप्नवासवदत्त 'नाटकना 'साचूं स्वम 'ना नामे पोते करेला गुर्जरानुवादनी प्रस्तावनामां केटलोक नवीन प्रकाश पाड्यो छे भने श्रीभगवानलाल द्वारा थएला ए 'सुवाच्य' लेखने एमणे 'सुप्राद्य 'करवानो प्रशंसनीय परिश्रम उठाव्यो छे. श्रीभगवानलालना निबन्धनुं हार्द समजवा माटे श्रीकेशवलालनुं ए विवेचन अवद्य अवलोकनीय होवाथी अने अतएव आ संग्रहमां खास संग्रहणीय होवाथी, आ अनुपूर्ति रूपे 'साचूं स्वम 'नी प्रस्तावनामांथी खारवेल संबंधी समम प्रकरण अत्र आपवुं उचित धार्युं छे.

खारवेलना संबंधमां श्रीयुत भुवनुं कथन आ प्रमाणे छे: —

" इ. स. पूर्वे १६५ मां कर्लिंगना राजा महामेघवाहन खीरवेले मगध उपर स्वारी करी. हाल जेने ओडिया प्रांत कहे छे ते प्राचीन

१ माहामेघवाहन ए इसवीसन पूर्वेना किंगराजाओंनू विरुद्ध हतूं. मेघवाहन इंद्रनो पर्याय छे, जुओ अमरकोशः आयी महामेघ-वाहन अने महेंद्र एक अर्थना शब्दो थया किंगमां आवेला पूर्व घाटना भागनूं नाम महेंद्र छे. एनी कुलपर्वतमां गणना छे. महेंद्र किंवा महामेघवाहनना धणी ते माहामेघवाहन, एवा कंहक संकेतथी आ विरुद्ध उत्पन्न थयूं जणाय छे. प्राकृतमां वृद्धि न करवाथी महामेघवाहन रूप रूढ थयूं. सारवेलने लगती हकीकत उदयगिरिनी

उत्कल देशनी दक्षिणे कलिंग आन्यों हतो. ए पूर्व समुद्रना कांठें गोदावरीना मुख मूधी पसर्थों हतो. त्यांना लोक साहसिक कहेवाता हतों. प्रजामां ब्राह्म, बौद्ध अने जैन त्रणे धर्मनो प्रसार हतो; परंतु परिबळ जैनोन्ं हेतूं. पूर्वे कलिंग नंदराजाना ब्होळा साम्राज्यनो भाग हेतो. एना पछी थनार महाप्रतापी चंद्रगुप्ते समस्त दक्षिणापथ पाटलिपुत्रनी छाया नीचे आण्यो हतो, त्यारथी आशरे सो वरस ते मीर्योना ता-

हिस्तिगुफाना लेखमांथी तारवी छे. ए लेख सुवाच्य कर्यानो यश सद्गत पंडित भगवानलाल इंद्रजीने छे. में तो तेने सुमाद्य बनाववा यत्न केयों छे.

२ कछिङ्गः साइसिकः।

३ ईसवी सननी सातमी सदीमां महाचीननो प्रवासी साधु यवनचंग आज्यो, त्यां लगी पण किलंगमां निर्प्रशोनी संख्या वधारे हती; जुओ Watters' Yuan Chwang II, 198.

४ जुओ टिप्पणी ३८,

4 अशोकना लेख दक्षिणमां महिषमंडळ पर्यंत जोवामां आवे छे. परंतु अशोके तो मात्र किंग उपर स्वारी कर्यानूं जाणवामां छे. ए देश वस्तुतः नंद राजाना समयथी मगधराज्यनो एक भाग हतो. ए जोतां दक्षिणापथ अशोक पहेलां पाटलिपुत्रनी सत्ता नीचे आवेलो समजाय छे. नंद महासमृद्धिमान चक्रवर्ती हतो; परंतु तेनी सत्ता किंग सिवाय दक्षिणना अन्य देश उपर होय एम जणातूं नथी. केमके कौटिल्ये अर्थशास्त्र रच्यूं त्यां लगी आर्यावर्तनी ज चक्रवर्तिक्षेत्र तरीके गणना थती हती. ए रचाया पछी चंद्रगुप्ते दक्षिणापथना देशो जीती मौर्य-साम्राज्यनी छाया नीचे आण्या, एम हूं मानूं छूं.

बामां रह्यो हतो. दरम्यान ई. स. पूर्वे २६४ मां तेणे छूट। थवानी एक निष्फळ प्रयत्न कर्यो हतो अने तेना बदलामां अशोकने हाथे भारे खुवारी भोगवी हती. छेवटे मौर्यो ज्यारे नबळा पड्या, त्यारे ई. स. पूर्वे शीजा शतकना छेला चरणमां चेत [सं. चैत्र] वंशना राजा क्षेम-राजे परतंत्रतानी घसाइ गयेली बेडी तोली नाखी. ते ज अरसामां अंध्रदेशनो राजा सिमुक पण स्वतंत्र थ्यो. त्यारबाद कर्लिंगना राजाए उत्तरमां उत्कल, पश्चिममां कोशल अने दक्षिणमां वेंगीमंडळनो प्रदेश जीती लेई राज्यमां वधारो कथीं. पश्चिममां औंध्र राजाए पण नासीक पर्यंत

- १० खारवेल उत्कल जीत्यानी दावी करती नथी. छतां तेनो लेख उदयगिरि पर्वत उपर कीतरेली छे. तेथी ए गादीए आव्यो ते पहेलां हुं उत्कल किंगे जीती लीधो समजूं छूं. प्रस्तुत लेखमां शात-किंगा रक्षण जेथे पश्चिममां खारवेले लश्कर मोकल्यूं कह्यूं छे, तेथी गोदावरी अने कृष्णाना मुख वच्चेनो प्रदेश ते काळे आंधोना कबजामां न हतो पण किंगानी सत्ता नीचे हतो, एवी अटकळ करी छे.
- ११ पुराणोमां सिमुक अने तेना वंशजोने आन्ध्र कहा छे. आंध्र वंशना त्रीस राजा तेमां गणाव्या छे. ए त्रीस आंध्रो पछी सात

६ जुओ Asoka's Kalınga Edicts.

७-८ हस्तिगुफाना लेखमां खारवेल पोताने चेतराजवंसवधन [सं. चैत्रराजवंशवधन] कहे छे; तथापि पूर्वजोमा तो क्षेमराज अने बुधराज, बेने ज गणावे छे. ते उपरथी क्षेमराजना समयमां किलग स्वतंत्र थयो एम अहीं कहेवामां आन्यूं छे. भिक्षराजनी पेठे क्षेमराज अने बुधराज उपनाम जणाय छे.

९ जुओ Smith's Early History of India.

मुख्क उत्तरना राष्ट्रिको पासेथी जीती लीधो ". महानदीथी कृष्णाना मुख सूधी विस्तार पामेला पूर्वराज्यमां ज्यारे क्षेमराजनो पौत्र मिक्षुराज खार-वेल राजा थयो, त्यारे अधीं सदीनी स्वतंत्रता अने मुन्यवस्थाना प्रतापे किलगनी आर्थिक स्थिति उत्तम प्रकारनी हैं ती. रैयत आबाद अने खजानो तर हतां. नवो राजा पण प्रजाना मुखमां, राज्यना अभ्युदयमां अने कुळनी कीर्तिमां वधारों करे एवो हतो. एनां प्रशस्त लक्ष्णथी संतोष पामी प्रजाए एने राजपद आप्यूं हतूं. अस्वरवेल अने एना पूर्वजो जैन हतीं. एनो जनम इ. स. पूर्वे १९७ मां थयो हैं तो. एने

श्रीपर्वतीय आंध्र थया छे, तेमने पुराणो आन्ध्रभृत्य नामे ओळखावे छे. आथी हूं सिमुक अने तेना वंशना राजाओने आन्ध्र कहूं छूं. डॉ. भांडारकर तेमने आन्ध्रभृत्य कहे छे, ते सरतचूक जणाय छे.

१२ जुओ Smith's Early History of India.

१६ जुओ हस्तिगुफाना लेखमां खारवेलनां दान, उत्सव अने बांबकामनी नोंघ.

१४ जुओ हस्तिगुफाना लेखमां स्वारवेलने पसथसुभलखन विशेषण लगाडयूं छे ते. एना अभिषेकना संबंधमां दानधमेन....... महाराजाभिसेचनं पापुनाति । एम कह्यं छे, ते पण ध्यानमां लेवं

१५ जुओ लेख मजकूरमां कलिंगपुवराजनमंसितं वगेरे.

१६ पुष्यभित्र संबंधी आ संक्षिप्त लेखमां ते ते बनावनां वरस जे आप्यां छे,तेनी गणत्रीन् घोरण नीचे मुजब छे.महान सिकंदर ज्यारे पंजाबमां हतो,त्यारे पूर्वमा गंगातटे Xandrames नामे महाबळवान राजा राज्य करतो हतो, एम Diodorus Siculus लखे छे अने Quintus Curtius तेने अनुसरे छे. Xandrames चन्द्रमस्नुं श्रीक रुपांतर छे. आ चन्द्रमस्

बाळपणमां विजिगीषुने छाजे एवी उत्तम प्रकारनी केळवणी मळी हती. गणित, साहित्य, व्यवहार अने चित्रविद्यामां ते कुशळ हैंतो. जैन आगमोनूं ते सारुं ज्ञान धरावतो हैंतो. अभ्यासकाळ पूरो थतां पंदर महाप्रतापी चंद्रगुप्त मौर्यनां अनेक नाममानूं एक छे; जुओ मुद्राराक्षस. आधी करीने ई. स. पूर्वे ३२५ मां आयावर्तना पश्चिम छेडाना प्रांतो सिकंदरे जीत्या त्यारे पाटा छेपुत्रमां चंद्रगुप्त राज्य करतो होवो जोइए. आ लेखे एलेक झांडरनी छावणीमां चंद्रगुप्त बहारवटियारुपे रखडती आव्यानी वात एवी बीजी वातोनी पेठे निर्मूल अने अश्रद्धंय ठरे छे. ई. स.पूर्वे ३२५ मां चंद्रगुप्त पाटालिपुत्रनो राजा हता, ते बीजी रीते पण सिद्ध थाय छे. ते बद्ध भगवान पछी १६२ दरसे गादीए आब्यो कहेवाय छे: अने मि. स्मिथ निर्धाणनी साल ई. स. पूर्वे ४८७-८६ नकी करे छे. जुओ Smith's Early History of India. हवे हस्तिगफानी लेख मौर्य संवत १६५ मां कोतरवामा आव्यो हतो. ए संवत चंद्रगुप्त गादीए आब्यो त्यारथी गणाय छे. आथी प्रस्तुत लेखनी साल ई. स. पूर्वे १६० ठरे छे. ते वखते खारवेल साडत्रींस वरसनी हती; अर्थात् ते ई. स. पूर्वे १९७ मां जनम्यो हतो. मौर्यवंशनो समग्र राज्यकाळ १६७ वरस आपवामा आवे छे. तेथी ई. स पूर्वे १९८ मां पुष्य-मित्रने राजा थया गुण्ये। छे. बीजा वरसोनी गणत्री पण आ ज प्रमाणे करवामां आवी छे. Smith's Early History of India नी अने आ कैखनी सालोमा उपरना कारणने लीधे जूज फेर पडे छे.

१७-१८ हस्तिगुफाना लेखमा बाळ खारवेलने लेखरूपगण-नाववहारविधिविसारद अने सवविजावदात एवां वे विशेषण लग् गाट्यां छे. तेमां लेख, रुप, गणना अने व्यवहारथी भिन्न शक्यार्थना विद्याशब्दे हूं आगम अर्थात् जैन आगम समज् छूं. जैन भिक्षनी विद्या ते ज छे. भिक्षुराज खारवेलना संबंधमां पण ते। जे लेबी उचित छे. वरसनी न्हानी उम्मरे तेने युवराज बनाववामां आव्यो; अने पचीसमा वरसमां तेना पिता बुधराज देवलोक पामतां ते राजा थयो, ई.स. पूर्वे १७३ ° . पूर्वजनी विजयप्रदृति जारी राखवा अभिषेकजळथी ज तेणे संकल्प केथीं. गादीए आव्याने बीजे वरसे ए संकल्पने पृष्टि आपनारो प्रसंग पण तेने आवी मळ्यो. अंधराज्यना नैसर्गिक शत्रु राष्ट्रिकोए मोजकोनी सहायताथी श्रीमछ शातकणिने मारे संकडामणमां लीधो हतो; तेमांथी छूटवा तेणे खारवेलनी मदद मागी. कलिंगराजे मोटूं चतुरंग दळ अंधराजनी व्हारे मोकल्यूं. आ जबरे सैन्य कुम्मके आवी प्रशेचतां शत्रुए पाछां पगलां कथीं. तेमनी पूंठे लागी कलिंगवीरोए कौशांब क्षत्रियोनी सामेलगीरीथी दुश्मनना हाथमां गयेलुं नासीक नगर पाछूं मेळेंथूं. श्रा राष्ट्रिक अने मोजकना हाथ हेठा पड्या अने तेमणे खारवेल साथे मेळ केथीं. ए रीते अंध, महाराष्ट्र अने विदर्भ

१९-२० जुओ हेखनी नीचेनी पंक्तिओ-पनरवसानि......... कीडिता कुमारकीडका । ततो........... नववसानि योवराजं प-सासितं । संपुणचतुवीस्तिवसो च दानधमेन सेसयोवनेभिविजय-पोवत्तिये...... महाराजाभिसेचनं पापुनाति । अही असल पाठ सेसयोवनाभिविजयपोवत्तिये छे.

२१-२२ जुओ छेखमांथी नीचेनी उतारी-दितिये च वसे अभितायंतो सातकाण पाछिमदिसं हयगजनररथवहुळं दंडं पटाप-यित । कुसंबानं खितयानं च साहायवता पत्तं निसकनगरं।. आ वाक्यो डॉ. भगवानळाळनी वाचनामा अर्थ वगरना रूपमां जीवामां आवे छे. एमां अभितयिता सातकणि अने खितयं च सहायवता पत्तं मिसकनगरं छे. एमांना पहेळा भागे भि. स्मिथने गोथं खवरावी दीघं छे. अभितयिताने कर्तृवाचक रूप गणी कमभंगनो दोष न छेखवी,

देश किंत्रानी छाया नीचे अव्या; अने किंत्रगनरेशनो प्रताप राज्य-काळना बीजा ज वर्षमां नर्भदा अने महानदीथी कृष्णा सूधी पसर्थो.

खारवेळनी पहेळी सवारी.

तरुण किंहिंगनरेशे हवे वर्धमान भगवानना चरणारविंदे पवित्र भयेकी मूमि भणी नजर फेरवी. शत्रु चेती जवा न पामे एवी रीते आभ्युदियक धार्मिक अने सार्वजनिक समारंभोमां पांच छ वर्ष गौळी, अभिवेकथी आठमा वरसमां तेणे प्रचंड सेना साथे उत्कलनी सीमा ओळंगी मगध राज्य उपर चडाइ करी, ई. स. पूर्वे १६५. पुष्यमित्र तेना सामो थयो, पण फाव्यो निह. तेना बहु सुभटो मार्या गया. पगना धम-काराथी घरणी धूजावता किंहिंगसैनिको रखेने मने धेरी ले, ए भयथी ते

पश्चिमना अभित्राता सातकाणिए खारवेलने मदद मोकली, एवी उलटी अर्थ एओ करे छे; जुओ Smith's Early History of India. हा. भगवानलाल पद मजकूरने संबंधक कृदंत ले छे, तथी पण सारो अर्थ थतो नथी. वास्तविक रीते पाठ ज दूषित छे. ते पछीना मासिकन्मारं पदे तो सौने मूझव्या छे. आंध्र राजा कृष्णे नासीक [सं. ना-सिक्य, प्रा. निस्सक] जीती लीधूं हतूं. ते पाछूं मेळववा माटेनो आ विम्रह समजी निसक पाठ में करूप्यो छे. नासीक संबंधी विम्रहमां राष्ट्रिको साथे पढोशी तरीके भोजको जोडाया मान्या छे. ए रीते रा-ष्ट्रिको से भोजको किलगना संबंधमां आव्या बाद तेमने जैन धर्मण आस्था उपजाववाना खारवेले उपायो कीधानूं पस्तुत लेखमां आगळ बांचिए छिये.

२३ जुओ सारवेले गादीए आध्या पर्छीना त्रीजाथी छट्टा वरस मूची लेख मजकूरमां आपेली हकीकत. छडी स्वारीए मथुरा नासी गैँयो. खारवेळे तेनी छावणी छूंटी. असंस्थात हाथी घोडा रथ वगेरे वाहनो भने पुष्कळ खजानो तेना हाथमां आव्यां. भागी गयेला ठाला शत्रुनी वांसे जवानूं मांडी वाळी विजयी कर्लिंगराज मेळवेली भारे लूंट साथे कर्लिंग पाछो फर्यो.

तेनी बीजी ने त्रीजी सवारीओ.

पूक वरस पछी खारवेले भारतवर्षनां उत्तरनां राज्यो उपर फरी सवारी करी. एनी विगत कंई जाणवामां नेथी. परंतु पहेली सवारीनी पेठे आ बीजी केवळ अभिद्रवरुप हरो, एम जणाय छे. जो एनं कंई पण संगीनें फळ नीपज्यं होय, तो ई. स. पूर्वे १६१ मां एने त्रीजी वारनी सवारी करवी पडे नहि. आ छेली सवारीमां दक्षिणापथनी पेठे उत्तरापथमां पण पोतानी आण वर्ताववानो एनो संकल्प हतो. साहसिक सुभटोना अने महाबळवान हाथीओना सैन्यना स्वामीने ए अशक्य न हत्ं. तेने आवतो सांभळी मगधनी प्रजामा त्रास फेलायो. बे समोविडया समर्थ राजाओ वचे जे दारुण विम्नह जाम्यो, तेमां पुष्यिमित्रे चडी आवनार राजाना हाथे सखत मार खाधो. छेवटे ते हारीने खारवेलने ताबे थयो. मगधराजने नमाव्या पछी तेणे उत्तरापथना बीजा राजाओने पण वश कर्या. आदितीर्थंकर ऋषभदेवनी मूर्ति नंद राजा उपाडी गयो हतो, ते आ सवारीमां पाटिलपुत्रथी राजगृह पाछी आणी जैन विजे-

२४ जुओ नीचेनो उतारो-अठमे च वसे......घाता-पयिता राजगहनपं पीडापयित । पितनं च कमपदानपनादेन सवत सेनवाहने विपश्चचितु मधुरं अपयातो । अहीं छेखमां एितनं छे, तेने बदले में पितनं [सं. पचीनाम्] पाठ कल्प्यो छे.

२५ लेख खंडित छे.

ताए नवा भव्य प्रासादमां भारे उत्सवसमारंभथी तेनी स्थापना केरी.

तेनूं भर जवानीमां मरण.

उत्तरापथना विजय पछी सारवे हे बेएक वरस ज राज्य कर्यू जणाय छे. जो ए वधारे जीव्यो होत, तो मीनेंडरने हाथे मगधने समवूं पडत निह, किंगिनी छाया नीचेना विदर्भ राज्यमां अग्निमित्र हाथ घालत निह अने अश्वमेध उजवी पुष्यिमित्र सार्वभीम राजा बनत निह. चौद वरस राज्य करी भर जवानीमां ए वीर चाल्यो गयो, ई. स. पूर्वे १९९.

खारवेळनां विशेष ळक्षण.

स्वारवेल युद्धवीरनी साथे दानवीर अने धर्मवीर पण हतो. तेणे अद्भुत अपूर्व हस्तिदानथी राजगृहमां ऋषभदेव भगवाननी प्रतिष्ठानो उत्सव उजन्यो हैतो. गादीए अन्याने बीजे वरसे तेणे विदर्भ अने

२६-२७ जुओ नीचेनो उतारी-बारसमं च वसं......सइस.....हि वितायसयंतो उतरापथराजानो......मगधानं
च विपुछं भयं जनेंतो इथिसयं गंगायं पाययति । मागधं च राजानं बहु पटिसासिता पादे वंदापयति । नंदराजनितस अगजिनस.....राजगहे रतनपडिहारेहि अ मगधे वसितु
नयरिं........विजाधकलेखिअंबरानि सिइरानि निवेसयति । सतवसदानपरिहारेन अभूतमकरियं इथिनं दानपरिहारं......आहारापयति । इध सतत.......उतरापथवासिनो वसिकरोति । अहीं डॉ. भगवनङालना पाठ जनेतो, इथिस, मगधं, वदापयति, परिहारहि, वसिबु, विजाधकलेखिलंबरानि अने आहरापयति छे.

महाराष्ट्रमां जैन धर्मना प्रसारना उपाय लीधा हतीं. अने तेरमे वरसे सर्व दिशाना ज्ञानवृद्ध ने तपोवृद्ध निर्मथ अमणोने कुमारीपर्वते नोंतर्या हतीं. ते त्रिविध सम्यक्त्वथी भिखुराजनूं, स्वधमना रक्षणथी गुतचकनूं अने सत्त्रसिद्धिया महाविजयनूं बिरुद धरावतो हैंतो. कुशळ शिल्पी-ओने हाथे तेणे अनेक जिनालयो बंधान्यां हैंतां. पंढे हडहडतो जैन लतां तेना पछी थयेला स्थाण्वीश्वरना चक्रवर्ती हर्षनी पेठे, ते अन्य धर्मनो पण

२८ जुओ नीचेनो उतारो-तथा चतुथे वसे विजाधराधिवा-सअहूतँ पुवकिलगराजनमंसितं......मगधमकूटस......पूजितं च निखितछत्भिगारेहि तिरतनस पत्यो सवरिकभोजकेसु सादेवं दसयति । अहीं डॉ. भगवानलालना पाठ चतुथे, विजाधराधिवासं-अहत,....धमकूटस अने भोजके छे.

२९ जुओ नीचेनो उतारो-तेरसमे च वसे सुपवतविजयि-चको कुमारीपवते अरहतो उपोसधे बाहिकायं निसिदियायं पपू-जके.....कतस-मायो सुविहितानं च सवदिसानं यानिनं तापसानं......संहतानं अरहतिनिसिदियासमीपे पभारे वरकारुसमथथपतिहि अनेकयो-जनाहि.....पटाळके चेतके च वेड्डिरयगभे थंभे पति-ठापयति । अहीं सुद्रित पाठ अरहतोप (निवासे), यपजके, रिखिता अने थभे छे.

३० जुओ हस्तिगुफाना छेखना अंतभागमां आपेळां बिरुदो

२१ जुओ सारवेछना राज्यकाळना नवमा वारमा अने तेरमा वरसनी हकीकत. प्रप्जक हैंती. तेणे ब्राह्मणोने पुष्कळ रिद्धीथी संतोष्या हता; अने हेमादिना दानखण्डना पांचमा अध्यायमां सोनाना कल्पवृक्षनं जे दान कह्यं छे, ते पण तेणे आप्यूं हुतूं. किलंगनगरीने पाणी पृरं पाडवा तेणे नहेर खोदावी हुती; पुरवासीनी सगवड सारं, शीतलसर नामे तळाव हत्ं तेनी चारे कोर तेणे पाळ बंधावी हुती; अने तेमना सुख माटे जाहेर बाग पण कराव्यो हुतो. नंद राजाना बंधावेछा त्रण वरस पाणी प्होचे एवा नंदसरनी पाळमां झापावाळां घडनाळां मूकी तेणे तेने खेतीना काममां वपरात्ं कर्यूं हुतूं. तेनी उदारता अने हितबुद्धिनो लाम एकला राजनगरने ज नहि, पण सारा कालंग देशने तेणे अनेक रीते

३२ जुओ स**वपासंडपूजक** बिरुद.

३३ जुओ नीचेनो ऊतारो-नवमे च वसे.....पव-रको कपरुखो हयगजरथेहि सह यत सबं घरावसधं......यस वा गहनं च कारयितु वमणानं जिम्ह रिदेसारं ददाति।

३४ जुओ नीचेनो ऊतारो-तनसुकीयवाहा पनाडि नगरं पवेसयति । अहीं मुद्रित पाठ वाटा अने पवेस....छे.

३५-३६ जुओ नीचेनो ऊतारो-सितळतडागपाडियो च बंधापयति । सञ्जयानपतिसंटापनं च कारयति ।

३७ जुओ नीचेनो ऊतारो—पंचमे च दानि वसे नंदराजतिवससतं ओघाटित ।. अहीं सञ्चनो अर्थ सरोवर छे; जुओ मेदिनी.
खेतीबाडीना काममां वपरात्ं करवाना अर्थमां उद्घाटितना प्रयोग साथे
कीटिळीय अर्थशास्त्र ।२।२४। मां चोथा प्रकारना पाणीना वेरा
[उदकभाग] ना संबंधमां उद्घाटनो उपयोग सरसावो.

आप्यो हैती. तेना रक्षण नीचे सुख वसती प्रजा स्वचक अने पर-चक्रनी इति शूं ते जाणती न हैती. † "

३८ जुओ नीचेनो ऊतारो-पधमे बसे.......पंनतीसेहि सत सहसेहि पकतियो रंजयति।, तितये च पुन वसे गंधवेदबुधोदंप (१) नतगीतबादितसंदंसनाहि उसवसमाजकारापनाहि च कीडापयति नगिरं।, अने छठे च बसे......इथिहितोच (१) राजसियो संदंसणं उसवकरावणं अनुगहअनेकानि सतसहसानि विसजित पोरजानपदे। अहीं मुद्रित पाठ पनतीसाहि सतसहसिह पकातिये रजयति, अने राजसेयसंदंसणतोसवकरावणं छे.

३९ जुओ लेखना अंतभागमां पसंतचको बिरुद.



[ं] आ निबंधमां जोडणी विगरे श्रीयुत ध्रुवना मूल पुस्तक प्रमाणे ज राखवामां आवी छे.

⁻संग्राहक.

छपाय छे.

आ पुस्तक प्रमाणे ज बीजा पण आना भागो नीचे लख्या प्रमाणे तैयार थाय छे जे थोडा समय पछी बहार पडरो.

प्राचीनजैनलेखसंग्रह भाग–२.

आमां मथुराना पुरातन स्थल कंकालीटिलामांथी मळी आवेला बधा जैनलेखोनो विस्तृत टीका साथे संप्रह करवामां आन्यो छे

प्राचीनजैनलेखसंग्रह भाग-३.

आमां शत्रुंजय, गिरनार, आबू, कुंमारीया, मुंडस्थल, राणकपुर, पाली, मेडता आदि गुजरात अने मारवाडमां आवेला प्रसिद्ध अने प्राचीन जैनतीर्थस्थलीना बधा लेखोनी संग्रह करवामां आव्यों छे के जेमनी संख्या ५००-६०० जेटली छे. बधा लेखो उपर गुजरातीमां विस्तारपूर्वक ऐतिहासिक बाबतोथी भरपूर टीका आपवामां आवी छे. जैनसाहित्यमां आ पुस्तक अपूर्व अने अद्वितीय थरो. एष्ठ संख्या ८०० जेटली थवा संभव छे.

जैनऐतिहासिकरासोनो पण एक संग्रह थोडा समयमां प्रकट थरो जेमां २०-२५ प्राचीन रासो ऐतिहासिक अवलो-कन विगेरे साथे आपवामां आव्या छे आ पुस्तक पण ५०-६० फार्म जेटलुं दलदार थरो

प्रकाशक-

श्रीजैनआत्मानन्दसभा